बा'दे विसाल करामाते औलिया, मज़ार पर चादर चढ़ाने और गुम्बद बनाने का बयान

كَشْفُ النُّوْرِ عَنْ أَصْحَابِ الْقُبُوْرِ

तर्जमा बनाम

फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया

-: मुअल्लिफ़ :-

अ़ल्लामा आ़रिफ़ बिल्लाह, नासेहुल उम्मह, साहिबे करामाते कसीरह

इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी दमिश्क़ी ह़नफ़ी

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

(अल मुतवफ़्फ़ा सि. 1143 हि.)

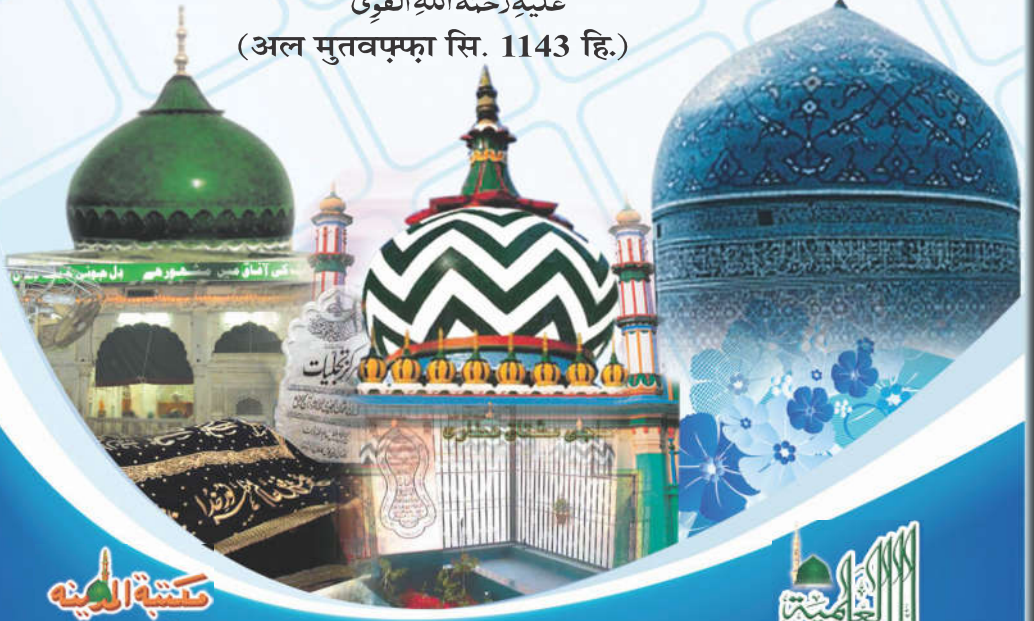

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)
SC 1286

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो ***मक्तबतुल मदीना*** *से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

"फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया" का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी**' **रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (**Translation**) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (**Transliteration**) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

✍ –: राबित़ा :– ✍

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

बा'दे विसाल करामाते औलिया, मज़ार पर चादर चढ़ाने

और गुम्बद बनाने का बयान

तर्जमा बनाम

फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया

–: मुअल्लिफ़ :–

अ़ल्लामा आ़रिफ़ बिल्लाह, नासेहुल उम्मह, साहिबे करामाते कसीरह,

इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी दिमश्क़ी हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

(अल मुतवफ़्फ़ा 1143 हिजरी)

–: मअ़ मुक़द्दमा :–

फ़ैज़ाने कमालाते औलिया

–: नाशिर :–

मक्तबतुल मदीना, देहली

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ الله وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ الله

नाम किताब : كشف النور عن اصحاب القبور
तर्जमा : फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (मअ़ मुक़द्दमा)
मुसन्निफ़ : अ़ल्लामा आ़रिफ़ बिल्लाह, इमाम अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللهِ القَوِی
मुतर्जिम : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)
सिने त़बाअ़त : जमादिल अव्वल, सिने 1437 हिजरी
क़ीमत :

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 20 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 1430 हि. **ह़वाला :** 163

الحمد لله رب العٰلمين و الصلوٰة و السلام علٰى سيد المرسلين وعلى اٰله و اصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब "كشف النور عن اصحاب القبور" के तर्जमे

"फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया" (मअ़ मुक़द्दमा)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लति़यों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
12-08-2009

E - mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुताअलआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त (फ़ैज़ाने कमालाते औलिया)

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	सय्यिदुना अहमद ख़राज़ رضی اللہ عنہ का फ़रमान	29
फ़ैज़ाने कमालाते औलिया (इब्तिदाए मुक़द्दमा)	13	सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बल्ख़ी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	29
फ़ज़ाइले औलिया पर आयाते मुबारका	14	अ़ल्लामा नाबुलुसी رضی اللہ عنہ की नसीहत	30
वली के लिये ईमान व तक़्वा शर्त है	14	सय्यिदी कुतबे मदीना رضی اللہ عنہ का फ़रमान	33
वली के लिये ब क़दरे ज़रूरत इल्म शर्त है	17	औलियाए किराम से मुतअ़ल्लिक़ अहम उमूर का बयान	33
फ़ज़ाइले औलिया पर अहादीसे मुबारका	17	विलायत और इस के मुतअ़ल्लिक़ उमूर का बयान	34
पहली ह़दीसे पाक	17	विलायत की ता'रीफ़	34
ह़दीसे पाक की शर्ह़	18	विलायत कस्बी है या अ़ताई ?	34
दूसरी ह़दीसे पाक	21	विलायत की अक़्साम	36
ह़दीसे पाक की शर्ह़	21	विलायते तश्रीई	36
तीसरी ह़दीसे पाक	22	विलायते तक्वीनी	36
ह़दीसे पाक की शर्ह़	22	विलायत के दरजात	37
चौथी ह़दीसे पाक	23	वली की ता'रीफ़ और अक़्साम का बयान	37
जा'ली पीरों की मज़म्मत का बयान	25	वली की ता'रीफ़	37
शरीअ़त और त़रीक़त के एक होने पर		औलियाए किराम رحمہم اللہ تعالیٰ की अक़्साम	38
ह़क़ीक़ी औलियाए उ़ज़्ज़ाम के फ़रामीन	26	❁ **अक़्ताब**	39
सय्यिदुना जुनैद बग़दादी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	26	❁ **अइम्मा**	39
सय्यिदुना सरी सक़ती رضی اللہ عنہ का फ़रमान	26	❁ **औताद**	39
सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	27	❁ **अब्दाल**	39
सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	28	❁ **नुक़बा**	40
सय्यिदुना जुन्नून मिसरी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	28	❁ **नुजबा**	40
सय्यिदुना बिशर हाफ़ी رضی اللہ عنہ का फ़रमान	28	❁ **रजबी**	41

www.dawateislami.net

क़ल्बे आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	41	कुरआनो ह़दीस में करामात का बयान	54
क़ल्बे नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	41	कुरआने पाक में करामात का ज़िक्र	55
क़ल्बे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	42	लम्ह़ा भर में इन्तिहाई वज़्नी तख़्त ह़ाज़िर कर दिया	55
क़ल्बे जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	42	बे मौसिम ग़ैब से फल मिलते	56
क़ल्बे मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	42	सोते हुवे करामत का ज़ुहूर	57
क़ल्बे इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़	42	अह़ादीसे मुबारका में करामात का ज़िक्र	58
रिजालुल ग़ैब	43	चन्द दिन के बच्चे का कलाम करना	58
मज़हरे कुव्वते ख़ुदावन्दी	43	ह़दीसे पाक की शर्ह़	59
कोई वली किसी नबी से अफ़्ज़ल नहीं	44	खाना तीन गुना ज़ियादा हो गया	60
वली को नबी से अफ़्ज़ल कहने वाले का ह़ुक्म	45	ह़दीसे पाक की शर्ह़	60
क्या साह़िबे करामत वली ज़ियादा अफ़्ज़ल होता है !	45	दूर दराज़ मक़ाम पर लश्करे इस्लाम को देख लिया	61
करामत और इस के मुतअ़ल्लिक़ उमूर का बयान	46	ह़दीसे पाक की शर्ह़	62
करामत की ता'रीफ़	46	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़सम पूरी फ़रमाता है	63
ख़िलाफ़े आ़दत अम्र से क्या मुराद ?	46	ह़दीसे पाक की शर्ह़	64
ख़िलाफ़े आ़दत अम्र की अक़्साम	46	औलिया के दुश्मनों पर क़ह़रे इलाही का बयान	65
मो'जिज़ा और करामत में फ़र्क़	47	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ए'लाने जंग	65
करामत और इस्तिद्राज में फ़र्क़	48	ह़दीसे पाक की शर्ह़	66
वली होने के लिये करामत ज़रूरी नहीं	49	बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब	66
वली को करामत क्यूं मिलती है ?	50	औलिया उल्लाह का दुश्मन ज़लीलो ख़्वार होता है	70
करामत की अक़्साम	50	वलियों पर ए'तिराज़ करने वाले बिदअ़ती व जाहिल हैं	71
मह़सूसे ज़ाहिरी की तफ़्सील	51	तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी से मह़रूम लोग	71
मा'क़ूले मा'नवी की तफ़्सील	52	मुन्किर का इलाज	72
कसीर करामात के ज़ुहूर में ह़िक्मत	53	दुआ़इय्या कलिमात	74

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त (फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया)

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
करामत किसे कहते हैं ?	75	क़ब्र में तिलावत	96
मुअस्सिरे हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है	76	बल्ख़ी बुज़ुर्ग का क़ब्र में तिलावत करना	96
इख़्तियारी मौत किसे कहते हैं ?	77	क़ब्र में तिलावत करने वाला नौजवान	96
मौत करामात के मनाफ़ी नहीं	79	शहीद का अपनी क़ब्र में क़ुरआने पाक पढ़ना	97
वली और ग़ैरे वली में फ़र्क़	80	क़ब्र में सोने का क़ुरआने पाक पढ़ना	97
बा'दे विसाल सुबूते करामात पर दलाइल	80	क़ब्र में तख़्त पर बैठ कर क़ुरआने पाक पढ़ना	98
क़ब्रों पर चलना, बैठना वग़ैरा क्यूं मकरूह है ?	82	कफ़न की वापसी	98
बा'दे मौत ईमान क़ाइम रहता है	85	मुर्दों को अश्या पहुंचना	99
नफ़्सानी मौत और बदनी मौत	87	बा'दे इन्तिक़ाल औलियाए किराम का मदद फ़रमाना	99
बा'दे विसाल करामात का सुबूत	88	औलिया की तौहीन शैतानी काम है	100
इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की करामत	89	रूहों का अपने जिस्मों की तरफ़ लौटना	101
फ़िरिश्तों का अहले सुन्नत को क़ब्र में तल्क़ीन करना	89	एक अहमक़ाना अक़ीदा और इस का रद	103
क़ब्रों के मुख़्तलिफ़ अह़वाल	91	क़ब्र जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा	104
नर्म व मुलाइम रेशमी लिबास वाले	91	ज़िन्दा और मुर्दा ता'ज़ीम में बराबर हैं	105
मुर्दों को अच्छी या बुरी ह़ालत में देखना	92	औलियाए किराम की क़ुबूर पर गुम्बद बनाना	105
औलियाए किराम का अहले क़ुबूर से बातें करना	92	क़ब्रों पर क़ुब्बा बनाना मकरूह नहीं	106
औलियाए किराम का क़ब्रों में अज़ान का जवाब देना	92	क़ब्र के लिये पक्की ईंटों का इस्ति'माल कैसा ?	106
औलियाए किराम का अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ना	93	क़ब्र पर लिखने और पथ्थर रखने का हुक्म	107
औलियाए किराम का अपनी क़ब्रों में तिलावत फ़रमाना	94	मज़ारात पर चादर वग़ैरा चढ़ाने का हुक्म	107
क़ब्र में सूरए मुल्क की तिलावत	94	बैतुल्लाह शरीफ़ से बढ़ कर ता'ज़ीम	109
इब्ने अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ब्र में तिलावत करना	95	बिऐनिहि का'बतुल्लाह शरीफ़ को सज्दा करने वाला काफ़िर है	110
साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ब्र में तिलावत करना	95	मज़ारात, का'बतुल्लाह नहीं	110

www.dawateislami.net

हर नया काम नाजाइज़ नहीं	112	पीरे कामिल की इत्तिबाअ् शरअ़न पसन्दीदा है	120
मदीनए मुनव्वरा में बतौ़रे ता'ज़ीम पैदल चलना	113	जब मा'मूली अश्या रहनुमा हैं तो औलियाए किराम क्यूं नहीं?	123
मज़ाराते औलिया पर चराग़ां करने का हुक्म	113	औलिया से मदद के मुन्किरीन को तम्बीह	124
क्या मज़ारात के पास नमाज़ अदा कर सकते हैं	114	औलिया उल्लाह पर ए'तिराज़ बाइ़से हलाकत है	126
मज़ाराते औलिया को छूने का हुक्म	114	नाम निहाद जा'ली पीरों का कोई ए'तिबार नहीं	126
मज़ाराते औलिया पर चराग़ जलाने की नज़्र मानना	115	इजतिमाए ज़िक्रो ना'त और बा आवाज़े बुलन्द ज़िक्र करना जाइज़ व मुस्तह़ब है	127
दिरहमो दीनार की नज़्र मानना जाइज़ है	116		
किसी चीज़ को ह़राम क़रार देने के लिये दलीले क़तई़ दरकार होती है	117	ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका में तत़बीक़	128
		इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में चीख़ने चिल्लाने का हुक्म	128
ता'ज़ीमे मज़ारात से रोकने वालों की ख़बीस तौजीह और इस का रद	118	ह़क़ीक़ी व बनावटी वज्द में फ़र्क़ मा'लूम करने का त़रीक़ा	129
		माख़ज़ो मराजेअ़	133
मुन्किरीने ता'ज़ीमे औलिया का हुक्म	118	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब की फ़ेहरिस्त	135

मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 419 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मदनी पन्ज सूरह" के सफ़ह़ा 413 पर है : बुज़ुर्गों के पास क़दमों की त़रफ़ से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है। लिहाज़ा मज़ारे औलिया पर भी पाईंती (क़दमों) की त़रफ़ से ह़ाज़िर हो कर क़िब्ले को पीठ और साहिबे मज़ार के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ एक बार सूरतुल फ़ातिह़ा और 11 बार सूरतुल इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ईसाले सवाब करे और दुआ मांगे "**अह़सनुल विआ़**" में है, वली के क़ुर्ब में दुआ क़बूल होती है। (मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"फ़ैज़ाने औलिया" (उर्दू) के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:**

نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो मदनी फूल :

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। ﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ हर बार ह़म्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअ़व्वुज़ व ﴿4﴾ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़ा पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿6﴾ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴿7﴾ जहां जहां '**अल्लाह**' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿8﴾ जहां जहां '**सरकार**' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴿9﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴿10﴾ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث: ١٧٣١، ج٢، ص٤٠٧) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) (येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴿11﴾ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **'दा'वते इस्लामी'** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **'अल मदीनतुल इल्मिय्या'** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़रीज

'अल मदीनतुल इल्मिय्या' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये

www.dawateislami.net

बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह़ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **'दा'वते इस्लामी'** की तमाम मजालिस ब शुमूल **'अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस्लाम मुकम्मल ज़ाब्त़ए ह़यात है, तमाम अदयान में सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लाम ही दीने ह़क़ है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الدِّیْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۫ (پ۳،اٰل عمران:۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक* ***अल्लाह*** *के यहां इस्लाम ही दीन है।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : "मा'लूम हुवा दीने मुह़म्मदी के सिवा तमाम दीन बाति़ल हैं, बा'ज़ वोह हैं जो पहले से ही बाति़ल थे जैसे मुशरिकीन का दीन, बा'ज़ वोह जो पहले ह़क़ थे अब मन्सूख़ हो कर बाति़ल हो गए जैसे यहूदिय्यत, नसरानिय्यत। सूरज के होते हुवे किसी चराग़ की ज़रूरत नहीं। बिग़ैर इस्लाम क़बूल किये कोई **अल्लाह** के नज़्दीक मक़्बूल नहीं।"

फिर दीने इस्लाम के मानने वाले भी 73 गिरौहों में बट गए। और इन में भी ह़दीसे पाक के मुता़बिक़ सिर्फ़ और सिर्फ़ एक गिरौह या'नी "**अहले सुन्नत व जमाअ़त**" ही ह़क़ पर है। चुनान्चे,

ह़ुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां, मालिके दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ की गई : "नजात पाने वाला गिरौह कौन सा होगा ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَا اَنَا عَلَيْهِ وَاَصْحَابِى या'नी वोह जो मेरे और मेरे सह़ाबए किराम के त़रीक़े पर होगा।

(جامع الترمذی ، ابواب الایمان ، باب ماجاء فی افتراق هذه الامة، الحدیث:۲٦٤١، ص١٩١٨)

www.dawateislami.net

मत्लब येह कि नजात पाने वाले वोही लोग होंगे जो हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत वाले और सहाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم की जमाअ़त के पैरूकार होंगे। इन्ही को **"अहले सुन्नत व जमाअ़त"** कहा जाता है। (اشعة اللمعات، ج۱، ص ۱۵۳ ۔ مراٰۃ المنا جیح ، ج۱، ص ۱۷۰ ملخصًا)

इस से मा'लूम हुवा कि जिस त़रह़ दीने इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अदयान बात़िल हैं। इसी त़रह़ दीने इस्लाम में **"अहले सुन्नत व जमाअ़त"** के इ़लावा बाक़ी तमाम गिरौह बात़िल और ह़क़ीक़तन अ़क़ाइदे इस्लामिया से मुन्ह़रिफ़ हैं।

और इन अ़क़ाइदे इस्लामिया में से एक अ़क़ीदा **"औलियाए किराम की करामात का ह़क़ व साबित होना"** भी है। ख़्वाह वोह ज़िन्दा हों या वफ़ात पा चुके हों क्यूंकि मौत के सबब वली की विलायत ज़ाइल नहीं होती जैसे मौत के सबब नबी की नबुव्वत ज़ाइल नहीं होती। (الحدیقة الندیة، ج۱، ص۱۹۲)

चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं : اَوْلِيَاءُ اللّٰهِ لَا يَمُوْتُوْنَ وَلٰكِنْ يَنْقُلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰى دَارٍ या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर मुन्तक़िल हो जाते हैं। (التفسیر الکبیر، پ٤، آل عمران ، تحت الآیة:۱٦۹، ج۳، ص٤۲۷)

इस ह़क़ीक़त के बा वुजूद कई गुमराह फ़िर्क़े इस इस्लामी अ़क़ीदे के मुन्किर हैं और क़ुरआनो ह़दीस की मनमानी तफ़्सीर व शर्ह़ कर के, फ़ासिद अ़क़्ली दलीलों और गुमराह कुन प्रोपेगन्डा से भोले भाले मुसलमानों को इस अ़क़ीदे से मुन्ह़रिफ़ करते और मज़ाराते औलिया और इन की बरकात से मुतनफ़्फ़िर करते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माई़ल अल मा'रूफ़ इमाम बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 256 हिजरी) **"बुख़ारी शरीफ़"** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि :

www.dawateislami.net

وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَرَاهُمْ شِرَارَ خَلْقِ اللّٰهِ وَقَالَ اِنَّهُمُ انْطَلَقُوْا اِلٰى آيَاتٍ نَزَلَتْ فِي الْكُفَّارِ فَجَعَلُوْهَا عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ख़ारिजियों और बे दीनों को बद तरीन मख़्लूक़ समझते थे और फ़रमाते कि "येह बद नसीब कुफ़्फ़ार के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल शुदा आयात मोमिनीन पर चस्पां करते हैं।" (صحیح البخاری، کتاب استتابة المرتدین.....الخ، باب قتل الخوارج.....الخ، ص٥٧٨)

आज भी बद मज़हबों का येही ह़ाल है कि अपनी तक़रीरो तह़रीर में हमेशा बुतों के बारे में नाज़िल शुदा आयात को ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام पर चस्पां करते और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन की आयात मुसलमानों पर पढ़ते हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 263, मुलख़्ख़सन)

पेशे नज़र किताब **"फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया"** ख़ातमतुल फ़ुक़हा वल मुह़द्दिसीन इमाम सय्यिद मुह़म्मद अमीन बिन उ़मर अल मा'रूफ़ **इब्ने आ़बिदीन शामी** और मुजद्दिदे आ'ज़म **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ममदूह़, आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मह, ह़ज़रत सय्यिदी अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1143 हिजरी) की ख़ास इसी मौज़ूअ़ पर तस्नीफ़ (कश्फ़ुन्नूर अ़न अस्ह़ाबिल कुबूर) का उर्दू तर्जमा है जिस में इन्हों ने बा'दे विसाल करामाते औलिया का सुबूत, ह़ज़राते औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की कुबूर पर मज़ारात बनाना, इन की ता'ज़ीम करना, इन पर चादरें चढ़ाना और नज़्रो नियाज़ करना वग़ैरा ऐसे उमूर के मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी अ़क़ाइद व शरई अह़काम को बेहतरीन और तह़क़ीक़ी अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है।

किताब की इब्तिदा में एक मुक़द्दमा ब नाम **"फ़ैज़ाने कमालाते औलिया"** शामिल किया गया है जिस में ह़ज़राते औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के क़ुरआनो ह़दीस में मज़कूर फ़ज़ाइल, शरीअ़तो त़रीक़त का एक होना, विलायत की ता'रीफ़ व अक़्साम, वली की ता'रीफ़ व अक़्साम, करामत की ता'रीफ़ व अक़्साम, मो'जिज़ा और करामत में

www.dawateislami.net

फ़र्क़, करामत और इस्तिद्राज में फ़र्क़, कुरआनो ह़दीस में करामत का बयान, औलियाए उम्मते मुह़म्मदिया عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ब कसरत करामात के ज़ुहूर में ह़िक्मत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों से दुश्मनी की आफ़ात वग़ैरा उमूर को बयान किया गया है ताकि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की ह़क़ीक़ी मा'रिफ़त व मह़ब्बत दिल में उजागर हो, इन से वाबस्ता इस्लामी अ़क़ाइदो नज़रिय्यात का शुऊ़र ह़ासिल हो नीज़ दिलों पर पड़े बुग़्ज़ो इ़नाद के दबीज़ पर्दे चाक हों और क़ुलूबो अज़्हान **"कमालाते औलिया"** के फ़ैज़ान से नूरानी बन जाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی اِحْسَانِهٖ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** के **"शो'बए तराजिमे कुतुब"** के मदनी उ़लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की काविशों से इस का उर्दू तर्जमा आप के हाथों में है। इस में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, **औलियाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की इ़नायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

तर्जमे के लिये **"मक्तबए नूरिय्या रज़विय्या"** सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) पाकिस्तान का नुस्ख़ा (मत़बूआ़ 1977 ई.) इस्ति'माल किया गया है और दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

﴿1﴾ सलीस और बा मुह़ावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी अच्छी त़रह़ समझ सकें।

﴿2﴾ आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन **कन्ज़ुल ईमान** से लिया गया है।

www.dawateislami.net

﴾3﴿ बयान कर्दा अहादीसे मुबारका की तख़रीज का हत्तल मक़दूर एहतिमाम किया गया है।

﴾4﴿ बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद हवाशी और अकाबिरीने अहले सुन्नत की तह़क़ीक़ को दर्ज कर दिया है।

﴾5﴿ औलियाए उ़ज़्ज़ाम व उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی और शहरों वग़ैरा के नामों पर ए'राब का एहतिमाम किया गया है।

﴾6﴿ कई मक़ामात पर मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (brackets) में लिख दिये गए हैं।

﴾7﴿ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये मुश्किल व ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ पर ए'राब का इल्तिज़ाम किया गया है।

﴾8﴿ मौक़अ़ की मुनासबत से जगह ब जगह उ़नवानात क़ाइम किये गए हैं।

﴾9﴿ अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी भरपूर ख़याल रखा गया है।

﴾10﴿ मुक़द्दमा "**फ़ैज़ाने कमालाते औलिया**" और रिसाला "**फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया**" दोनों की अलग अलग फ़ेहरिस्त बनाई गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल "**मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**" को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

मुक़द्दमा

"फ़ैज़ाने कमालाते औलिया"

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो अपनी मख़्लूक़ पर इन्आ़मो इकराम की पैहम बारिश बरसा रहा है। उस ने अपने लुत्फ़ो करम से अपने बन्दों में से बा'ज़ को पसन्द फ़रमा कर ख़ास कर लिया और उन्हें अपने महबूबे आ'ज़म, रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वासिते से अपनी महबूबिय्यत का ए'ज़ाज़ बख़्शा। तो येही वोह लोग हैं जिन से ज़माने की ज़ीनत क़ाइम है। जिन की मा'रिफ़त की महक ने तमाम आ़लम को मुअ़त्तर कर रखा है। जिन के दिल हर वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में झुके रहते हैं जो अपने महबूबे हक़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर अपनी ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर के ख़ुश दिली से आज़माइशों को क़बूल करते हैं ह़त्ता कि इस राह में अपनी जानों तक को क़ुरबान कर देते हैं। उन को ख़ज़ाने पेश किये जाते हैं मगर वोह ठुकरा देते हैं। दुन्या उन पर फ़िदा होने की कोशिश करती है लेकिन वोह उस से किनारा कश रहते हैं। शैत़ान उन पर अपने मक्रो फ़रेब का जाल डालने की कोशिश करता है मगर उस का उन पर कोई बस नहीं चलता और न वोह उन्हें धोका दे सकता है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपने करम से महफ़ूज़ कर दिया है। लोग खाते हैं और येह भूके रहते हैं। लोग सो जाते हैं और येह अपने मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़ियाम व सुजूद में रात बसर करते हैं। येही वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या हैं जिन के सरों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी विलायत का ताज सजाया, इन्हें अपनी मा'रिफ़त व पहचान अ़त़ा फ़रमाई, इन्हें अपने भेदों (या'नी राज़ों) से आगाही बख़्शी, इन के दिलों पर ख़ास तजल्ली डाल कर इन्हें चमकता आफ़ताब बना दिया और इन को बसारत और बसीरत याफ़्ता कर दिया। या'नी वोह बा बरकत हस्तियां जिन्हें हम "**औलिया उल्लाह**" के नाम से याद करते हैं कि जब उन में से किसी वली का नाम ज़बान पर आता है तो मुंह से बे साख़्ता "رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه" निकलता है।

www.dawateislami.net

येह कुदसी ह़ज़रात कैसी आ'ला शान के मालिक हैं कि इन के फ़ज़ाइलो कमालात, ख़ुद ख़ालिक़े काइनात ने अपनी मुक़द्दस किताब "कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद" में और अपने मह़बूबे ज़ीशान, मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ीक़ते तर्जुमान से बयान फ़रमाए हैं। यहां चन्द आयाते त़य्यिबा और अह़ादीसे मुबारका तफ़्सीर व तशरीह़ के साथ ज़िक्र की जाती हैं।

फ़ज़ाइले औलिया पर आयाते मुबारका

वली के लिये ईमान व तक़्वा शर्त़ है :

﴾1﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *सुन लो ! बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है, न कुछ ग़म वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی (मुतवफ़्फ़ा 1367 हिजरी) इस आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ से कुर्बे इलाही ह़ासिल करे और इत़ाअ़ते इलाही में मश्ग़ूल रहे और उस का दिल नूरे जलाले इलाही की मा'रिफ़त में मुस्तग्रक़ हो जब देखे दलाइले कुदरते इलाही को देखे और जब सुने **अल्लाह** की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की पाकी ही बयान करे और जब ह़रकत करे त़ाअ़ते इलाही में ह़रकत करे और जब कोशिश करे उसी अम्र में कोशिश करे जो ज़रीअ़ए कुर्बे इलाही हो, **अल्लाह** के ज़िक्र से न थके और दिल की आंखों से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को न देखे, येह सिफ़त औलिया की है बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो **अल्लाह** उस का वली व नासिर और मुईन व मददगार होता है।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 62)

www.dawateislami.net

﴿2﴾ इरशादे बारी तआ़ला है :

اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

(پ۹،الانفال:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *औलिया तो परहेज़गार ही हैं।*

मा'लूम हुवा कि वलिय्युल्लाह के लिये सब से पहले ईमान और फिर तक़्वा व परहेज़गारी शराइत़ की हैसिय्यत रखते हैं लिहाज़ा कोई बे दीन और फ़ासिक़ो फ़ाजिर शख़्स वली नहीं हो सकता।

चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस दूसरी आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : "कोई काफ़िर या फ़ासिक़ वली नहीं हो सकता। विलायते इलाही, ईमान व तक़्वा से मुयस्सर होती है। येह फ़ाइदा "اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ" की दूसरी तफ़्सीर से ह़ासिल हुवा जब कि इस के मा'ना येह हों कि **अल्लाह** के औलिया सिर्फ़ परहेज़गार लोग हैं। रब तआ़ला (पारह 11, सूरए यूनुस की आयत 62 में) औलिया उल्लाह के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता हैं : اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।) अच्छी बारगाह के लिये अच्छे बन्दे मुन्तख़ब हैं।"

(तफ़्सीरे नईमी, पारह 11, सूरतुल अन्फ़ाल, तह़तुल आयत 34, जि. 9, स. 543)

और एक दूसरे मक़ाम पर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ लोग मुत्तक़ी हो कर वली बनते हैं और बा'ज़ ह़ज़रात वली हो कर मुत्तक़ी होते हैं। जैसा कि ह़ज़रते मरयम (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में 4 साल की उ़म्र में पहुंच कर तक़्वा इख़्तियार न किया था मगर वलिया थीं और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पैदाइश से पहले मुत्तक़ी न बने थे मगर ख़लीफ़तुल्लाह थे।"

(नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल क़ुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 63)

www.dawateislami.net

नीज़ मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الہَادِی (मुतवफ़्फ़ा 1367 हिजरी) पहली आयते मुबारका के तह़त नक़्ल फ़रमाते हैं : "वली वोह है जो ए'तिक़ादे सहीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल क़ुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 62)

वली कभी शरीअ़त से नहीं टकराता और न ही इस की मुख़ालफ़त करता है। बल्कि गुनाह तो दूर की बात, उस की तो मशकूको मुश्तबा चीज़ों से भी हिफ़ाज़त की जाती है। चुनान्चे,

मोह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के खाने, पानी और लिबास की हिफ़ाज़त की जाती है। ह़राम तो दूर की बात है उन के जिस्मों तक तो कोई शको शुबा वाली शै भी नहीं पहुंचती। और येह हिफ़ाज़त करना इस तअ़ल्लुक़ से होता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिल में या उस शै में डाल देता है जो ह़राम या मुश्तबा होती है। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ारिस मुह़ासिबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی का ऐसा ही ह़ाल था कि अगर उन के सामने मशकूक व शुबे वाला खाना लाया जाता तो उन की उंगली की एक रग फड़क उठती। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब अपनी वालिदए माजिदा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के शिकमे अत़हर में थे तो वालिदा का हाथ किसी मुश्तबा खाने की त़रफ़ नहीं बढ़ता था बल्कि हाथ ख़ुद ब ख़ुद पीछे हट जाता था। बा'ज़ औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی मुश्तबा खाना देखते तो जी मतलाना और क़ै आना शुरूअ़ हो जाती थी। बा'ज़ नुफ़ूसे क़ुदसिय्या رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के सामने शुबा वाला खाना ख़ून बन जाता। कई बुज़ुर्ग رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی इसे कीड़ों की सूरत में पाते। कुछ के सामने

www.dawateislami.net

मुश्तबा खाने पर सियाही छा जाती और बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی मशकूक खाने को ख़िन्ज़ीर की शक्ल में देखते। इसी त़रह़ इन के इलावा दीगर अ़लामात पैदा हो जातीं।"

(جامع کرامات الاولیاء، مقدمة الکتاب، المطلب الثانی، ج۱، ص۵۷)

वली के लिये ब क़दरे ज़रूरत इल्म शर्त़ है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अभी औलियाए किराम के फ़ज़ाइल के ज़िम्न में बयान हुवा कि वली के लिये ईमान और तक़्वा दोनों शर्त़ हैं और ज़ाहिर है कि ईमान की ह़िफ़ाज़त और फ़िस्क़ो फ़ुजूर से बचने के लिये वली के पास ब क़दरे ज़रूरत इल्म होना भी लाज़िम है लिहाज़ा येह भी विलायत के लिये शर्त़ ठहरा। इस लिये कोई जाहिल शख़्स कभी वली नहीं हो सकता चुनान्चे, मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** ने कभी किसी जाहिल को अपना वली न बनाया या'नी बनाना चाहा तो पहले उसे इल्म दे दिया इस के बा'द वली किया कि जो इल्मे ज़ाहिर नहीं रखता इल्मे बात़िन कि उस का समरा व नतीजा क्यूं कर पा सकता है !" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 530)

फ़ज़ाइले औलिया पर अह़ादीसे मुबारका

पहली ह़दीसे पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरा बन्दा फ़राइज़ की अदाएगी के ज़रीए जितना मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता है उस की मिस्ल किसी दूसरे अ़मल से ह़ासिल नहीं करता (एक रिवायत में यूं है : मेरा बन्दा किसी ऐसी शै से मेरा क़ुर्ब नहीं पाता जो फ़र्ज़ को अदा करने से ज़ियादा पसन्द हो)

www.dawateislami.net

और मेरा बन्दा नवाफ़िल (की कसरत) से मेरे क़रीब होता रहता है यहां तक कि मैं उस को अपना महबूब बना लेता हूं और जब मैं उसे महबूब बना लेता हूं तो मैं उस का कान बन जाता हूं जिस के ज़रीए वोह सुनता है और मैं उस की आंख हो जाता हूं जिस से वोह देखता है और मैं उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वोह पकड़ता है और मैं उस का पाउं बन जाता हूं जिस से वोह चलता है। अगर वोह मुझ से मांगे तो मैं उसे ज़रूर देता हूं और अगर वोह मुझ से पनाह तलब करे तो मैं उसे पनाह देता हूं और मुझे किसी काम में तरद्दुद नहीं जिसे मैं करता हूं। मैं किसी काम के करने में कभी इस तरह तरद्दुद नहीं करता जिस तरह जाने मोमिन क़ब्ज़ करते वक़्त तरद्दुद करता हूं कि वोह मौत को ना पसन्द करता है और मैं उस के मकरूह समझने को बुरा जानता हूं।''

(صحیح البخاری ، کتاب الرقائق ، باب التواضع ، الحدیث ٦٥٠٢، ص٥٤٥)

हदीसे पाक की शर्ह

हज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उमर राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) ने **''तफ़्सीरे कबीर''**, मोहक़्क़िक़ अ़लल इत़लाक़ हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1052 हिजरी) ने **''शर्हे फ़ुतूहुल ग़ैब''** और हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 544 हिजरी) ने **''शिफ़ा शरीफ़''** में इस हदीसे पाक का मा'ना व मक़्सद येह बयान फ़रमाया है कि जब बन्दा अपने आप को **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त के इश्क़ो महब्बत वाली आग में जला कर फ़ना कर देता है और नफ़्सानिय्यत व अनानिय्यत वाला ज़ंग और मैल कुचैल दूर हो जाता है और अन्वारे इलाहिय्या से उस का बदन मुनव्वर हो जाता है तो वोह **अल्लाह** तआ़ला के अन्वार ही से देखता है और इन्ही की बदौलत सुनता है, उस का बोलना इन्ही अन्वार के ज़रीए है

www.dawateislami.net

और उस का चलना-फिरना और पकड़ना-मारना इन्ही से होता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی के मुबारक अल्फ़ाज़ में ह़दीसे क़ुदसी का मा'ना और मन्सबे मह़बूबिय्यत की अ़ज़मत का बयान सुनिये, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं :

اِذَاصَارَنُوْرُجَلَالِ اللّٰہِ لَہٗ سَمْعًاسَمِعَ الْقَرِیْبَ وَالْبَعِیْدَ وَاِذَاصَارَنُوْرُجَلَالِ اللّٰہِ لَہٗ بَصَرًارَاَی الْقَرِیْبَ وَالْبَعِیْدَ وَاِذَا صَارَذَالِکَ النُّوْرُیَدًالَہٗ قَدَّرَعَلَی التَّصَرُّفِ فِی الصَّعْبِ وَالسَّھْلِ وَالْقَرِیْبِ وَالْبَعِیْدِ

तर्जमा : अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का नूरे जलाल जब बन्दए मह़बूब के कान बन जाता है तो वोह हर आवाज़ को सुन सकता है नज़्दीक हो या दूर, और आंखें नूरे जलाल से मुनव्वर हो जाती हैं तो दूरो नज़्दीक का फ़र्क़ ख़त्म हो जाता है या'नी हर गोशए काइनात पेशे नज़र होता है और जब वोही नूर बन्दे के हाथों में जल्वा गर होता है तो क़रीब व बई़द और मुश्किल व आसान में उसे तसर्रुफ़ की क़ुदरत ह़ासिल हो जाती है।

(التفسیرالکبیر، سورۃ الکھف ، تحت الایۃ:۹تا ۱۲،ج۷، ص۴۳۶)

(इस की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिये कि किस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने वलियों को दूर से सुनने और देखने की क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है और किस त़रह़ बे जान चीज़ों को उन के ताबेए़ फ़रमान कर देता है)

(1) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और उन के लश्कर को निहावन्द के मक़ाम पर मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا से चौदह सौ (1400) मील की मसाफ़त से दुश्मनों के घेरे में आते हुवे देख कर फ़ौरन रहनुमाई फ़रमाई और आवाज़ दी : **"या सारियतुल जबल** या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ का ख़याल करो।" उधर उन्हों ने ह़ज़रते अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुन कर दुश्मन से अपने आप को बचा लिया।

(کنز العمال ،کتاب الفضائل، باب فضائل الفاروق رضی اللّٰہ عنہ ، الحدیث۳۵۷۸۳،ج ، ۱۲ص۲۵۶ملخصًا)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِاللّٰہِ جَمْعًا كَخَرْدَلَۃٍ عَلٰی حُکْمِ اتِّصَالٍ

www.dawateislami.net

(**तर्जमा :** मैं **अल्लाह** तआ़ला के तमाम शहरों को इस त़रह़ देखता हूं जिस त़रह़ हथेली पर राई का दाना)

और इरशाद फ़रमाते हैं :

نَظرِمَن درلوحِ محفوظ اَسْت (या'नी मेरी नज़र लौह़े मह़फ़ूज़ पर है ।)

(3) अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाए नील को अपने रुक़्अ़ से जारी फ़रमा दिया जो उस वक़्त तक पानी से लबरैज़ नहीं होता था जब तक उस में नौजवान लड़की को ना फेंका जाता था । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे हुक्म दिया कि "अगर तू अपनी मरज़ी से चलता है तो बेशक ख़ुश्क रह जा, हमें तेरी ज़रूरत नहीं है और अगर तू **अल्लाह** तआ़ला की मरज़ी से चलता है तो मैं **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ करता हूं कि वोह तुझे जारी फ़रमाए ।" चुनान्चे, जब आप का रुक़्आ़ जिस पर येह अल्फ़ाज़ दर्ज थे, दरया में डाला गया तो वोह फ़ौरन तुग़यानी पर आ गया और लबालब भर गया ।

(مرقاۃ المفاتیح شرح مشکوۃ المصابیح، کتاب المناقب والفضائل، باب مناقب عمر، ج ۱۰، ص ٤١٥)

(4) मदीनए त़य्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में आग लग गई जिसे किसी त़रह़ भी बुझाया न जा सका तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने काग़ज़ के एक टुकड़े पर "اُسْكُنِیْ یَانَارُ" या'नी ऐ आग ! ठहर जा । लिख कर ख़ादिम को दिया । उस ने वोह काग़ज़ का टुकड़ा आग में फेंका तो यूं मा'लूम हुवा कि यहां आग लगी ही न थी ।

(5) एक दफ़्आ़ ज़लज़ला आया और मकानात लरज़ने लगे और बहुत बड़ी तबाही का ख़त़रा पैदा हो गया तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना दुर्रा (या'नी कोड़ा) ज़मीन पर ज़ोर से मारा और इरशाद फ़रमाया : "ऐ ज़मीन ! ठहर जा ।" आज तक वहां ज़लज़ला नहीं आया ।

(ماخوذ از کوثر الخیرات لسید السادات علیہ افضل الصلوات واکمل التحیات، ص ٣٤٢)

www.dawateislami.net

दूसरी हदीसे पाक

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि न वोह नबी हैं, न शहीद लेकिन क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन को मिलने वाले रुतबे पर अम्बिया व शुहदा भी रश्क करेंगे ।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "हमें उन के आ'माल के बारे में बताएं ताकि हम भी उन से मह़ब्बत करें !" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो बिग़ैर किसी रिश्तेदारी और लैन दैन के मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करेंगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन के चेहरे रौशन होंगे और वोह नूर के मिम्बरों पर जल्वा गर होंगे । जब लोग ख़ौफ़ में मुब्तला होंगे तो उन्हें ख़ौफ़ न होगा और जब लोग ग़मगीन होंगे तो उन्हें कोई ग़म न होगा ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ (پ ۱۱، یونس: ۶۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म ।*

(سنن ابی داؤد، کتاب الاجارۃ، باب فی الرھن، الحدیث ۳۵۲۷، ص ۱۴۸۵۔ التمھید لابن عبدالبر، تحت الحدیث ۴۶۰، ج ۷، ص ۱۹۰)

हदीसे पाक की शर्ह़

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इस की शर्ह़ करते हुवे तह़रीर फ़रमाते हैं : "या तो यहां "ग़िब्त़" से मुराद है ख़ुश होना । तब तो ह़दीस वाज़ेह़ है कि ह़ज़राते अम्बियाए किराम (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) उन लोगों को उस मक़ाम पर देख कर बहुत ख़ुश होंगे और उन लोगों की ता'रीफ़ करेंगे (**مرقات**) और अगर "ग़िब्त़ा" ब मा'ना रश्क ही हो तो मत़लब येह है कि अगर

www.dawateislami.net

ह़ज़राते अम्बिया व शुहदा किसी पर रश्क करते तो उन पर करते तो येह फ़र्ज़ी सूरत का ज़िक्र है (اشعة اللمعات) या येह रश्क अपनी उम्मत की बिना पर होगा कि उम्मते मुह़म्मदिया (علیٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) में येह लोग (या'नी औलिया व सालिह़ीन) ऐसे दरजे में हैं कि हमारी उम्मत में नहीं या येह मक़्सद है कि वोह ह़ज़रात अपनी उम्मत का ह़िसाब करा रहे होंगे और येह लोग आराम से उन (नूर के) मिम्बरों पर बे फ़िक्री से आराम कर रहे होंगे तो ह़ज़राते अम्बियाए किराम (عَلٰی نَبِیِّنَا وعَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام) उन लोगों की बे फ़िक्री पर रश्क करेंगे कि हम मश्ग़ूल हैं येह फ़ारिग़ुल बाल। बहर ह़ाल इस ह़दीस से येह लाज़िम नहीं (आता) कि येह ह़ज़रात अम्बियाए किराम से अफ़्ज़ल होंगे।" (مرقات واشعہ वग़ैरा)

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 592)

तीसरी ह़दीसे पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत से ज़ईफ़, कमज़ोर, बोसीदा लिबास वाले ऐसे होते हैं कि अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को पूरा फ़रमा देता है और बरा बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भी उन्ही में से हैं।"

(येह पूरी रिवायत आगे इस उ़नवान "अह़ादीसे मुबारका में करामात का ज़िक्र" के तह़त मुलाह़ज़ा कीजिये)

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب ذكر شهادة البراء بن مالك، الحديث ٥٣٢٥، ج٤، ص٣٤٠ تا ٣٤١)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस ह़दीस शरीफ़ की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "इस फ़रमाने आ़ली के दो मत़लब हो सकते हैं कि एक येह कि वोह बन्दा अगर **अल्लाह** तआ़ला को क़सम दे कर कोई चीज़

www.dawateislami.net

मांगे कि ख़ुदाया ! तुझे क़सम है अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की ! येह कर दे तो रब तआ़ला ज़रूर कर दे । येह है बन्दे की ज़िद अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) पर । दूसरे येह कि अगर वोह बन्दा ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) के काम पर क़सम खा कर लोगों को ख़बर दे दे तो ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) उस की क़सम पूरी कर दे । मसलन वोह कह दे कि ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! तेरा बेटा होगा । या रब (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! आज बारिश होगी तो रब तआ़ला उन की ज़बान सच्ची करने के लिये येह कर दे । बा'ज़ लोग बुज़ुर्गों की ज़बान से कुछ कहलवाते हैं : हुज़ूर ! कह दो कि तेरे बेटा होगा । कह दो कि तू मुक़द्दमे में कामयाब होगा । इस अ़मल का माख़ज़ येह ह़दीस है ।" (अज़ : अशिअ़तुल्लमआ़त) (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 592)

चौथी ह़दीसे पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, बिइ़ज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मख़्लूक़ में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तीन सौ बन्दे ऐसे हैं जिन के दिल ह़ज़रते आदम के दिल पर हैं । चालीस के दिल ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह के दिल पर और सात के दिल ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह के दिल पर, पांच के दिल ह़ज़रते जिब्राईल के दिल पर हैं और तीन अफ़राद के दिल ह़ज़रते मीकाईल के दिल के मुशाबेह हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में से एक बन्दए ख़ास का दिल ह़ज़रते इस्राफ़ील (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दिल पर है । जब उस बन्दए ख़ास का इन्तिक़ाल होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन तीन में से एक को उस की जगह मुक़र्रर फ़रमा देता है । और जब उन तीन में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो उस की जगह उन पांच में से एक को मुक़र्रर फ़रमा देता है जब पांच में से किसी एक का विसाल होता है तो सात में से किसी एक को

www.dawateislami.net

उस की जगह मुक़र्रर कर देता है । जब उन सात में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चालीस में से एक को उस की जगह दे देता है । जब उन चालीस में से कोई इस दुन्या से रुख़्सत होता है तो तीन सौ में से किसी के ज़रीए उस ख़ला को पुर फ़रमा देता है । और जब इन तीन सौ में से किसी का विसाल होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ़म लोगों में से किसी को उस की जगह मुक़र्रर फ़रमा देता है । पस इन्ही औलिया की वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों को ज़िन्दगी और मौत अ़ता फ़रमाता इन्ही के तुफ़ैल बारिश होती, फ़स्लें उगती और इन्ही की ब दौलत मुसीबतें दूर होती हैं ।''

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : ''उन के सबब लोगों को ज़िन्दगी और मौत कैसे मिलती है ?'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''यूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कसरते उम्मत का सुवाल करते हैं तो उस में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है । और ज़ालिमों के ख़िलाफ़ दुआ़ करते हैं तो उन को नेस्तो नाबूद कर दिया जाता है । बारिश त़लब करते हैं तो बारिश बरसा दी जाती है । नबातात के उगने का सुवाल करते हैं तो उन के लिये ज़मीन फ़स्लें उगा देती है । वोह दुआ़ करते हैं तो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मसाइब उन की दुआ़ की वज्ह से दूर कर दिये जाते हैं ।''

(تاریخ دمشق لابن عساکر، باب ان بالشام یکون الابدال.....الخ، ج۱، ص۳۰۳)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि फ़रामीने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस प्यारे अन्दाज़ में औलियाए किराम की शानो अ़ज़मत, मक़ामो मर्तबा और तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात को बयान कर रहे हैं । येह तो चन्द आयात व अह़ादीस हैं । इन के इ़लावा भी क़ुरआने मजीद की बहुत सी आयाते त़य्यिबा और बे शुमार अह़ादीसे मुबारका ऐसी हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों के शान व मर्तबे को बयान करती हैं ।

www.dawateislami.net

जा'ली पीरों की मज़म्मत का बयान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जहां ह़क़ीक़ी औलियाए किराम, क़ुरआनो सुन्नत और अपने रूह़ानी फ़ुयूज़ो बरकात से अपने मुरीदीन व मो'तक़िदीन की मज़्हबी व अख़्लाक़ी और ज़ाहिरी व बात़िनी तरबिय्यत फ़रमाते हैं वहां आज कल बा'ज़ नाम निहाद जा'ली पीर फ़क़ीर विलायत का ढोंग रचा कर लोगों को धोका देते हुवे उन के ईमानों पर डाके डालते हैं और उन्हें गुमराही के रास्ते पर डाल देते हैं और ख़ुद उन की ह़ालत येह होती है कि जब उन से किसी शरई मुआ़मले जैसे नमाज़ वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाता है तो (اَلْعِیَاذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی) कह देते हैं : "हम शरीअ़त के पाबन्द नहीं बल्कि शरीअ़त हमारी पाबन्द है ।" कोई येह बकता है : "तुम शरीअ़त पर चलो, हमारा त़रीक़त का रास्ता इस से अलग है । तुम ज़ाहिरी अह़काम पर अ़मल करते हो जब कि हम बात़िनी उ़लूम पर अ़मल पैरा हैं ।" और बा'ज़ येह ह़ीला साज़ी करते हैं : "मियां ! हम तो मदीने में नमाज़ पढ़ते हैं । मियां ! नमाज़ तो रूह़ानिय्यत का नाम है, जो दिल में होती है, हमारे दिल नमाज़ी हैं" वगैरा वग़ैरा । ऐसे ख़बीस सिफ़त लोगों का कोई ए'तिबार नहीं । ऐसों से अपना ईमान व अ़क़ीदा मह़फ़ूज़ रखना फ़र्ज़ है कि कहीं येह लुटेरे हमारा ईमान भी न बरबाद कर दें । क्यूंकि आ़म त़ौर पर इन के शनीअ़ अक़्वाल व अ़क़ाइद, कुफ़्र व गुमराही पर मुश्तमिल होते हैं । और इन से दूर रहना इस लिये भी ज़रूरी है कि अहले सुन्नत व जमाअ़त का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि "**शरीअ़त से त़रीक़त जुदा नहीं**" चुनान्चे,

मुजद्दिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "शरीअ़त हुज़ूरे अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के अक़्वाल हैं, और त़रीक़त हुज़ूर के अफ़्आल, और ह़क़ीक़त हुज़ूर के अह़वाल, और मा'रिफ़त हुज़ूर के उ़लूमे बे मिसाल।

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اِلٰی مَالَا یَزَال (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 460)

शरीअ़त और त़रीक़त के एक होने पर ह़क़ीक़ी औलियाए उ़ज़्ज़ाम के फ़रामीन

यहां इस्लाम के उन अ़ज़ीम तरीन मशाइख़े त़रीक़त और ह़क़ीक़त आश्ना पेश्वाओं के चन्द अक़्वाल पेश किये जाते हैं जिन के "**अकाबिरे औलियाए उम्मत**" होने में किसी क़िस्म का शको शुबा नहीं ताकि सीधी राह से मुन्ह़रिफ़ जा'ली पीरों और उन के जाहिल मुरीदों पर रौशन हो जाए कि "**शरीअ़त से त़रीक़त जुदा नहीं !**"

(1)...ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़्दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान

गिरौहे सूफ़िया के सरदार, त़रीक़त व ह़क़ीक़त के इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ासिम जुनैद बिन **मुह़म्मद बग़्दादी** (अल मा'रूफ़ जुनैद बग़्दादी) عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی (मुतवफ़्फ़ा 297 हिजरी) फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचाने वाले तमाम रास्ते हर शख़्स पर बन्द हैं सिवाए उस शख़्स के जो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े की इत्तिबाअ़ व पैरवी करे।" नीज़ इरशाद फ़रमाया कि "जिस ने क़ुरआने पाक को याद न किया और ह़दीसे नबवी को (किताब या दिल) में जम्अ़ न किया उस की इक़्तिदा व पैरवी न की जाए। क्यूंकि हमारा येह इ़ल्म और (त़रीक़त का) रास्ता क़ुरआनो सुन्नत का पाबन्द है।" (الرسالة القشيرية ، ابو القاسم الجنيد بن محمد،ص ٥٠)

(2)...ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन सरी बिन मुग़लिस सक़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 253 हिजरी) फ़रमाते हैं : तसव्वुफ़ तीन वस्फ़ों का नाम है

www.dawateislami.net

(1)...उस (सूफ़ी) का नूरे मा'रिफ़त उस के नूरे वरअ़ को न बुझाए (2)...बातिन से किसी ऐसे इल्म में बात न करे कि ज़ाहिर कुरआन या ज़ाहिर सुन्नत के ख़िलाफ़ हो (3)...करामतें उसे उन चीज़ों की पर्दादरी पर न लाएं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम फ़रमाई।" (المرجع السابق، ص۲۸)

(3)...ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़मी बिस्त़ामी के वालिद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا बयान करते हैं कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा 261 हिजरी या 234 हिजरी) ने मुझ से फ़रमाया : "चलो उस शख़्स को देखें जिस ने ख़ुद को विलायत के साथ मश्हूर कर रखा है।" वोह ऐसा शख़्स था जिस से हुसूले बरकत की ख़ात़िर हर त़रफ़ से लोग आते थे। और वोह ज़ोह्दो तक़्वा से मश्हूर था। चुनान्चे, ज़ियारत और हुसूले बरकत के लिये हम भी वहां गए। उस वक़्त वोह अपने घर से मस्जिद की त़रफ़ निकला। क़ब्ल इस के कि कोई बात होती इत्तिफ़ाक़न उस ने क़िब्ले की त़रफ़ थूका। येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़ौरन वापस आ गए और उसे सलाम तक न किया और इरशाद फ़रमाया : "येह शख़्स रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आदाब में से एक अदब पर तो अमीन है नहीं तो फिर जिस विलायत का दा'वा करता है उस पर क्या अमीन होगा ?" (المرجع السابق، ص۳۸)

(4).....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा 261 हिजरी या 234 हिजरी) ने ही एक मौक़अ़ पर इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम किसी शख़्स को देखो कि करामात दिया गया हो ह़त्ता कि वोह हवा पर चार ज़ानू बैठ जाए तो उस से फ़रेब न खाना जब तक येह न देख लो कि अम्र व नही (या'नी फ़र्ज़ व वाजिब और ह़राम व मकरूह), ह़ुदूदे इलाही की ह़िफ़ाज़त और शरीअ़त पर अ़मल में उस का ह़ाल कैसा है ?" (المرجع السابق، ص۳۸-۳۹)

www.dawateislami.net

(5)...हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़तिय़ा दारानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 215 हिजरी) फ़रमाते हैं : "बारहा मेरे दिल में तसव्वुफ़ का कोई नुक्ता कई कई दिनों तक आता रहता है, मगर जब तक दो आ़दिल गवाह या'नी कुरआन और सुन्नत (या'नी ह़दीसे पाक) इस की तस्दीक़ नहीं करते मैं उसे क़बूल नहीं करता।" (المرجع السابق، ص٤١)

(6)...हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ैज़ सौबान बिन इब्राहीम अल मा'रूफ़ ज़ुन्नून मिसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 245 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की ख़ास अ़लामत येह है कि इन्सान ज़ाहिरो बात़िन में उस के मह़बूब, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़, अफ़्आ़ल, अह़काम और सुन्नतों की इत्तिबाअ़ करे।" (المرجع السابق، ص٢٤)

(7)...हज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा 227 हिजरी) फ़रमाते हैं : "मैं एक बार ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिशर ! क्या तुम जानते हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें तुम्हारे हम अ़स्र औलिया से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा क्यूं अ़त़ा फ़रमाया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इस का सबब नहीं जानता।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस वज्ह से कि तुम मेरी सुन्नत की पैरवी करते हो, सालिह़ीन की ख़िदमत करते हो, अपने इस्लामी भाइयों की ख़ैर ख़्वाही (या'नी उन्हें नसीह़त) करते हो और मेरे सह़ाबए किराम और

www.dawateislami.net

मेरे अहले बैते अत्हार (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) से महब्बत करते हो। येही सबब है कि जिस ने तुम्हें अबरार की मनाज़िल तक पहुंचा दिया है।" (الرسالة القشيرية ، ابو النصر بشر بن حارث حافی،ص ٣١)

(8)...हज़रते सय्यिदुना अहमद ख़राज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद अहमद बिन ईसा ख़राज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار (मुतवफ़्फ़ा 277 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "हर वोह बातिनी अम्र बातिल व मर्दूद है जिस की ज़ाहिर मुख़ालफ़त करे।"

(المرجع السابق ،ص ٦١)

(9)...हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बल्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का फ़रमान

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन फ़ज़्ल बल्ख़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 319 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "चार बातों के सबब चार क़िस्म के लोगों से इस्लाम चला जाता है : (1) अपने इल्म पर अ़मल न करने वाले (2) जिस का इल्म नहीं उस पर अ़मल करने वाले (3) जिस पर अ़मल है उस का इल्म न सीखने वाले और (4) दूसरों को इल्म हासिल करने से रोकने वाले।" (المرجع السابق ،ص ٥٦)

येह तमाम फ़रामीन हज़रते सय्यिदुना आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन कुशैरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 465 हिजरी) की शोहरए आफ़ाक़ तस्नीफ़ "**अर्रिसालह**" अल मा'रूफ़ "**रिसालए कुशैरिय्या**" से नक़्ल किये गए हैं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह किताब इस्लामी मुमालिक के सूफ़िया की जमाअ़त के लिये 437 हिजरी में लिखी। इस किताब के बारे में हज़रते सय्यिदुना इमाम ताजुद्दीन अबू नस्र अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुबुकी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) फ़रमाते हैं : येह वोह मश्हूरो मा'रूफ़ किताब है जिस के बारे में कहा जाता है कि "येह जिस घर में हो वहां कोई मुसीबत व आफ़त नहीं आती।" (طبقات الشافعية الكبرى ، الطبقة الرابعة ، عبدالكريم بن هوازن ،٥٠، ٩٩)

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा नाबुलुसी رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की नसीह़त :

इन तमाम मुबारक फ़रामीन की शर्ह़ करने के बा'द आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहु़ल उम्मह, साहि़बे करामाते कसीरा ह़ज़रते सय्यिदी अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1143 हिजरी) अपने नसीह़त भरे मख़्सूस अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाते हैं : "ऐ अ़क़्लमन्द ! ऐ ह़क़ के त़लबगार ! तअ़स्सुब और बे राह रवी छोड़ कर ब नज़रे इन्साफ़ देख कि येह तमाम नुफ़ूसे क़ुदसिय्या (या'नी सय्यिदुत्त़ाइफ़ा जुनैद बग़दादी, सरी सक़त़ी, अबू यज़ीद बिस्त़ामी, अबू सुलैमान दारानी, ज़ुन्नून मिसरी, बिशर ह़ाफ़ी, अबू सईद ख़राज़ और मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) अ़ज़ीम तरीन मशाइख़े त़रीक़त और अन्वारे इलाही عَزَّوَجَلَّ के मुशाहदे व कश्फ़ की राह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचे हुवे, ह़क़ीक़त आशना अ़ज़ीम पेश्वा हैं, येह सब के सब शरीअ़ते मुह़म्मदिया और त़रीक़ए मुस्त़फ़विय्या علٰی صاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام की ज़ाहिरो बात़िन से ता'ज़ीम कर रहे हैं। और क्यूं न करें कि येह ह़ज़रात उन बुलन्दो बाला मक़ामात और दरजात तक इसी ता'ज़ीम और सीधी राहे शरीअ़त पर चलने के सबब पहुंचे हैं। इन बुज़ुर्गाने दीन और इन के इलावा दीगर सूफ़ियाए कामिलीन में से किसी एक से भी मन्क़ूल नहीं कि उस ने शरीअ़ते मुत़ह्हरा के किसी हु़क्म की तह़क़ीर की हो या उस को क़बूल करने से बाज़ रहा हो बल्कि येह सारे बुज़ुर्ग हर हु़क्मे शरीअ़त को तस्लीम करने, उस पर ईमान लाने, उस का इ़ल्म रखने और उस पर अ़मल करने वाले हैं। और जो शख़्स उन अ़ज़ीम हस्तियों में से किसी के बारे में त़ा'न व तशनीअ़ करता है वोह यक़ीनन उन के मक़ाम की मा'रिफ़त से बे ख़बर है। और वोह जहालत व बे ख़बरी के हाथों ऐसा करने पर मजबूर है। وَاللّٰہُ عَلِیْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْر या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दिलों की बात जानता है। नीज़ ये ह़ज़रात क़ुरआनो सुन्नत के मआ़नी से मुतअ़ल्लिक़ कश्फ़े रब्बानी व इल्हामे रह़मानी के ज़रीए ह़ासिल होने

www.dawateislami.net

वाले अपने बातिनी उ़लूम की बुन्याद सीरते मुहम्मदी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और हर बातिल से जुदा मिल्लते ह़नफ़िय्या पर रखते हैं क्यूंकि येही मिल्लते इस्लाम है। और येह हरगिज़ नहीं हो सकता कि किसी आ़रिफ़ और सालिक के नज़दीक उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के बातिनी उ़लूम, शरीअ़ते मुत़ह्हरा के ख़िलाफ़ हों। अलबत्ता ! जाहिल और धोके में पड़ा हुवा शख़्स उस के ख़िलाफ़े शरअ़ होने का दा'वा करता है। और वोह जाहिल व फ़रेब ख़ुरदा, इ़ल्म और ज़ौक़े सलीम से आ़री होने की वज्ह से ज़बरदस्ती इस मुआ़मले में दख़्ल अन्दाज़ी करता है ह़ालांकि वोह उन राहों से बिल्कुल ना वाक़िफ़ है।

पस जब तू ने जान लिया कि येह बा बरकत हस्तियां या'नी ह़ज़राते सूफ़िय्याए किराम, शरीअ़त के अह़काम को मज़बूती से थामने वाले और क़रीब तरीन ज़रीए़ से क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल करने वाले हैं तो ख़याल करना कि कहीं उन जाहिलों की ह़द से गुज़री हुई बातें और दीन को नुक़्सान पहुंचाने वाले काम तुझे धोके में न डालें कि बिग़ैर इ़ल्म व मा'रिफ़त सालिक व आ़बिद बने बैठे हैं। येह लोग अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से ना वाक़िफ़िय्यत ख़िलाफ़े शरअ़ अक़्वाल, जह्ले मुरक्कब के सबब बातिल आ'माल और ख़ुद को हिदायत पर समझने के ए'तिबार से ख़ुद बिगड़े और दूसरों को भी बिगाड़ते हैं, आप गुमराह और दूसरों को गुमराह करते हैं, सीधी शरीअ़त से हट कर बद मज़हबी और बे दीनी की त़रफ़ माइल हैं, सिराते मुस्तक़ीम को छोड़ कर जहन्नम की राह चलते हैं, उ़लमाए शरीअ़त की राह से अलग हैं क्यूंकि येह अपनी कमज़ोर अ़क़्लों और बेहूदा राए पर अ़मल करते हैं जब कि उ़लमाए शरीअ़त क़ुरआनो सुन्नत, इजमाए उम्मत और पुख़्ता क़ियास के अह़काम पर चलते हैं। नीज़ येह जाहिल लोग, मशाइख़े त़रीक़त के मस्लक से भी ख़ारिज हैं क्यूंकि येह आदाबे शरीअ़त से रू गर्दानी किये हुवे हैं और उस के मुस्तह़कम क़ल्ओं में पनाह लेने को छोड़े बैठे हैं। पस वोह इन्कारे शरीअ़त के सबब काफ़िर हैं और दा'वे येह करते हैं कि हम उस के अन्वार से रौशन हैं।

www.dawateislami.net

मशाइख़े त़रीक़त आदाबे शरीअ़त पर क़ाइम हैं और तमाम मख़्लूक़ पर लाज़िम अह़कामे इलाही की ता'ज़ीम का अ़क़ीदा रखते हैं इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें मक़ामाते मह़ब्बत में क़ुदसी कमालात का तोह़फ़ा अ़त़ा फ़रमाया है जब कि ख़ुराफ़ात के धोके में पड़े हुवे और आ़र के लिबास में मलबूस येह जाहिल लोग ज़ाहिर में मुसलमान और ह़क़ीक़त में काफ़िर हैं। येह हमेशा अपने फ़ासिद ख़यालात के बुतों के सामने जम कर बैठे रहते हैं और शैत़ान जो वस्वसे इन के ख़यालात व इफ़्कार में डालता है उन्हीं पर फ़रेफ़्ता हैं। पस इन के लिये पूरी ख़राबी है इस लिह़ाज़ से कि येह उस मक़ाम पर अपनी ह़ालत पर डटे हुवे हैं, इस को बुरा नहीं समझते कि इस से रुजूअ़ कर लें और न ही उन्हें अपने जाहिल होने का ख़याल आता है कि दूसरों से ऐसा इ़ल्म ह़ासिल करें और जो उन्हें इस बुरी ह़ालत से नफ़रत दिलाए। और उन के लिये भी हर त़रह़ से ख़राबी है जो दुन्या व आख़िरत में रुस्वाई का सबब बनने वाली उन की क़बीह़ ह़ालत और सीरत की पैरवी करते हैं या उन के कामों को अच्छा जानते हैं। पस येह जाहिल लोग आ़बिदीन के ह़क़ में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के राहज़न (या'नी लुटेरे और डाकू) हैं इस त़रह़ कि जो शख़्स इ़बादत व त़ाअ़त और इख़्लास व तक़्वा की राह पर चलना चाहता है येह लोग उसे अपनी बनावटी बातों तकब्बुराना आ'माल नाक़िस अह़वाल और ग़लत़ आरा के ज़रीए़ इस राह से रोकते हैं और अह़कामे शरअ़ का इन्कार कर के हर दीनी काम में ह़क़ को बात़िल के साथ मिला देते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बन्दों के लिये जो ह़क़ (या'नी दीने इस्लाम) हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लाए हैं उसे जान बूझ कर छुपाते हैं। उन का मक़सद सिर्फ़ अपने लिये दीन के मुआ़मले को आसान बनाना है और कमालात को अपनी त़रफ़ मन्सूब करना है। और ह़ाल येह है कि निरे जाहिल और दीन के उसूलो फ़ुरूअ़ को ज़ाएअ़ करने वाले हैं।

(الحدیقة الندیة ، الباب الاول فی اقسام بیان البدع، الفصل الثانی ،ج۱، ص۱۸۷۔۱۸۹)

www.dawateislami.net

(10)...सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का फ़रमान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के अ़ज़ीम पीरो मुर्शिद ह़ज़रते शैख़ुल फ़ज़ीलत, आफ़ताबे रज़विय्यत, ज़ियाउल मिल्लत, मुक़्तदाए अहले सुन्नत, मुरीद व ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, पीरे त़रीक़त, रहबरे शरीअ़त, शैख़ुल अ़रब वल अ़जम, मेज़बाने मेहमानाने मदीना, क़ुत़्बे मदीना, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ज़ियाउद्दीन अह़मद मदनी क़ादिरी रज़वी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (मुतवफ़्फ़ा 1401 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : **"जो शरीअ़त का पाबन्द नहीं वोह त़रीक़त के लाइक़ नहीं।"**

औलियाए किराम से मुतअ़ल्लिक़ अहम उमूर का बयान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !

यहां से औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی के मुतअ़ल्लिक़ उन उमूर को तफ़्सील से बयान किया जा रहा है जिन के मुत़ालए से اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام और इन की करामात से मुतअ़ल्लिक़ शुकूको शुब्हात और बुग़्ज़ो इ़नाद की काली घटा छट जाएगी। और इस बारे में अहले सुन्नत व जमाअ़त का सह़ीह़ अ़क़ीदा और मौक़िफ़ निखर कर सामने आ जाएगा और मा'लूम होगा कि इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या और इन की करामात के बारे में एक मुसलमान को क्या अ़क़ीदा रखना चाहिये। पस अगर औलियाए उ़ज़्ज़ाम और इन की करामात का मुन्किर ह़सद व कीना और जांबेदारी की ऐ़नक उतार कर इस में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गुमराही छोड़ कर सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न हो जाएगा। वोह अहम उमूर दर्जे ज़ैल हैं :

www.dawateislami.net

(1) विलायत की ता'रीफ़ (2) विलायत की अक़्साम (3) वली की ता'रीफ़ (4) वली की अक़्साम (5) करामत की ता'रीफ़ (6) मो'जिज़ा और करामत में फ़र्क़ (7) करामत और इस्तिद्राज में फ़र्क़ (8) करामत की अक़्साम (9) औलियाए उम्मते मुहम्मदिय्या علیٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام से ब कसरत करामात के ज़ुहूर में हिक्मत (10) क़ुरआनो ह़दीस में करामत का बयान और (11) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों से दुश्मनी की आफ़ात वग़ैरा।

विलायत और इस के मुतअ़ल्लिक़ उमूर का बयान

विलायत की ता'रीफ़

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 1367 हिजरी) फ़रमाते हैं : "विलायत एक क़ुर्बे ख़ास है कि मौला عَزَّوَجَلَّ अपने बर गुज़ीदा बन्दों को महज़ अपने फ़ज़्लो करम से अ़ता फ़रमाता है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि. 1, स. 264)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) विलायत की ता'रीफ़ करते हुवे किसी आ़रिफ़ बिल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़वाले से इरशाद फ़रमाते हैं : "विलायत क़ुर्बे ख़ास का नाम है पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली वोह है जो उस क़ुर्ब की इन्तिहा को पा लेता है।"

(التفسیرالکبیر، سورۃ یونس ، تحت الایۃ:٦٢، جلد٦، ص٢٧٦)

विलायत कस्बी है या अ़ताई ?

विलायत वहबी व अ़ताई है या'नी अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से अ़ताकर्दा इन्आ़म है, कस्बी नहीं या'नी इबादतो रियाज़त कर के ह़ासिल नहीं की जा सकती बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है अ़ता

www.dawateislami.net

फ़रमा देता है, अलबत्ता ! आ'माले ह़सना इस का ज़रीआ़ और सबब होते हैं। चुनान्चे,

सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : विलायत कस्बी नहीं, मह़ज़ अ़त़ाई है। हां ! कोशिश और मुजाहदा करने वालों को अपनी राह दिखाते हैं (येह इस आयते मुबारका की त़रफ़ इशारा है :

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ (پ ٢١، العنكبوت:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे)। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 606)

और सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 1367 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "विलायत वहबी शै है, न येह कि आ'माले शाक़्क़ा (या'नी सख़्त मुश्किल आ'माल) से आदमी ख़ुद ह़ासिल कर ले अलबत्ता ! ग़ालिबन आ'माले ह़सना इस अ़त़िय्यए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये ज़रीआ़ होते हैं, और बा'ज़ों को इब्तिदाअन मिल जाती है।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हि. 1, स. 264)

अलबत्ता ! बा'ज़ औक़ात तक़्वा व परहेज़गारी के सबब कोई वली हो जाता है। लिहाज़ा बा'ज़ उ़लमाए किराम मजाज़न विलायत को कस्बी भी कह देते हैं, जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) तह़रीर फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मक़्बूल बन्दे "औलिया उल्लाह" कहलाते हैं, और उस के मर्दूद "**मिनदूनिल्लाह**" इन मक़्बूलों में बा'ज़ तो तक़्वा, त़हारत वग़ैरा से मक़्बूल हो जाते हैं, येह विलायत कस्बी है, बा'ज़ मादर ज़ाद वली होते हैं, येह विलायत अ़त़ाई है देखो बीबी मरयम मादर ज़ाद वलिया थीं, और आदम عَلَيْهِ السَّلَام पैदा होते ही मस्जूदे मलाइका हुवे और बा'ज़ लोग किसी की निगाहे करम से वली बन जाते हैं, उसे

www.dawateislami.net

विलायते वहबी कहते हैं, जैसे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जादूगर कि आनन फ़ानन मोमिन, सह़ाबी, शहीद हुवे, या ह़बीब नज्जार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار) जो ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वारियों में आनन फ़ानन वली हो गए येह आयत तीनों क़िस्म के वलियों को शामिल है।"

(नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 62)

विलायत की अक़्साम

विलायत की दो क़िस्में हैं

(1) विलायते तश्रीई (2) विलायते तक्वीनी

विलायते तश्रीई

लफ़्ज़े वली "वलाउन" से बना है। कभी इस का मा'ना "इआ़नत व मदद करना, ह़िमायत करना, मह़ब्बत करना, फ़रमां बरदारी करना और इत़ाअ़त करना" आता है। इसी से "मौला" भी है। इस मा'ना के ए'तिबार से विलायत आ़म है और वली का इत़्लाक़ हर आ़मो ख़ास पर हो सकता है बल्कि हर नेक मुसलमान जिसे कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल हो वोह वलिये तश्रीई है, और वली को वली इस वज्ह से भी कहते हैं कि वोह मुईन मददगार व इत़ाअ़त गुज़ार व फ़रमांबरदार होता है। चुनान्चे,

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "वली दो क़िस्म के हैं : वलिये तश्रीई, वलिये तक्वीनी। वलिये तश्रीई हर नेक मुसलमान है जिसे कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल हो।"

(नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरुल कुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 62)

विलायते तक्वीनी

और कभी "वलाउन" का मा'ना कुर्ब आता है। इस मा'ना के ए'तिबार से विलायत को तक्वीनी कहते हैं। और जिसे येह ह़ासिल हो उसे वलिये तक्वीनी कहा जाता है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) फ़रमाते हैं : "तक्वीनी वली वोह है जिसे आ़लम में तसर्रुफ़ का इख़्तियार दिया गया हो, वलिये तश्रीई तो हर चालीस मुत्तक़ी मुसलमानों में एक होता है, और वलिये तक्वीनी की जमाअ़त मख़्सूस है ग़ौस, क़ुतुब, अब्दाल वग़ैरा इसी जमाअ़त के अफ़राद हैं। येह तमाम क़ियामत के डर व रन्ज से या दुन्या के मुज़िर ख़ौफ़ व ग़म से मह़फ़ूज़ हैं।"

(नूरुल इरफ़ान फ़ी तफ़्सीरिल क़ुरआन, पारह 11, सूरए यूनुस, तह़तुल आयत : 62)

विलायत के दरजात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنْ اَوْلِیَآؤُهٗۤ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ

(پ۹، الانفال:۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *औलिया तो परहेज़गार ही हैं।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस आयते मुबारका के तह़त "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : "तक़्वा के चार दरजे हैं इस लिये विलायत के भी चार दरजे हुवे, कुफ़्र से बचना, गुनाहों से बचना, मशकूक चीज़ों और शुब्हात से बचना, ग़ैरुल्लाह से बचना। ग़ैरुल्लाह वोह जो रब से ग़ाफ़िल करे। अगर नमाज़ व दीगर इबादात रिया के लिये हों तो वोह ग़ैरुल्लाह हैं और अगर खाना रब के लिये हो तो वोह ग़ैर नहीं। मगर बा'ज़ लोग हर भंगी चर्सी को वली समझ लेते हैं येह ग़लत़ है बा'ज़ लोग बे दीनों (बद मज़हबों) को वली जानते हैं, येह भी धोका है।"

वली की ता'रीफ़ और अक़्साम का बयान

वली की ता'रीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सा'दुद्दीन मसऊ़द बिन उ़मर तफ़ताज़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی (मुतवफ़्फ़ा 793 हिजरी) फ़रमाते हैं : वली

www.dawateislami.net

उस शख़्स को कहते हैं, जो मुमकिना ह़द तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस की सिफ़ात का आ़रिफ़ हो, इस त़रह़ कि अल्लाह तआ़ला की हमेशा इबादत करता हो और हर क़िस्म के गुनाहों से इजतिनाब करता हो और लज़्ज़ात और शहवात में इन्हिमाक और इस्तिग़्राक़ से बचता हो।"

(شرح العقائد، کرامات الاولیاء حق، ص١٤٤)

इमामुल मुफ़स्सिरीन ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) वली की ता'रीफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "वली वोह है जो ए'तिक़ादे सह़ीह़ मब्नी बर दलील रखता हो और आ'माले सालिह़ा शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बजा लाता हो।" कुछ आगे इरशाद फ़रमाते हैं : जब बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्बे ख़ास पा लेता है और उस की मा'रिफ़त में मुस्तग़्रक़ हो जाता है तो उस वक़्त उस के दिल में ज़ाते बारी तआ़ला के सिवा किसी का ख़याल तक नहीं गुज़रता और इस ह़ाल में उसे मुकम्मल विलायत ह़ासिल हो जाती है और जब उसे येह मक़ाम मिल जाता है तो फिर उस को किसी शै का ख़ौफ़ नहीं होता और न वोह किसी चीज़ के सबब ग़मगीन होता है।" (التفسير الكبير، سورۂ یونس، تحت الآية ٦٢، ج٦، ص٢٧٦)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की अक़साम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर दौर में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली हुवे हैं और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक येह सिलसिला जारी रहेगा। औलिया उल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मुख़्तलिफ़ मरातिब व त़बक़ात हैं। मुह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) ने अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ "जामेउ़ करामातिल औलिया" में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 638 हिजरी) की किताब मुस्तत़ाब "अल फ़ुतुह़ातल मक्किय्यह" से इन मरातिब व अक़्साम को वज़ाह़त के साथ बयान फ़रमाया है। यहां इन में से बा'ज़ को इख़्तिसार के साथ बयान किया जाता है :

www.dawateislami.net

(1).....अक़्ताब

येह कुतुब की जम्अ़ है और "कुतुब" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ऐसे अ़ज़ीमुश्शान वली को कहते हैं जो एक ज़माना और एक वक़्त में एक ही होता है। उसे "ग़ौस" भी कहते हैं। कुतुब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का निहायत ही मुक़र्रब और अपने ज़माने के तमाम औलियाए किराम का आक़ा होता है। इन में से बा'ज़ को बातिनी ख़िलाफ़त के साथ हुक्मे ज़ाहिर और ज़ाहिरी ख़िलाफ़त भी मिलती है जैसे, चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन, सय्यिदुना इमाम ह़सन, सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या, सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बा'ज़ को सिर्फ़ बातिनी ख़िलाफ़त मिलती है जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي वग़ैरा। कुतुब का सिफ़ाती नाम अ़ब्दुल्लाह है।

(2).....अइम्मा

येह हर दौर में सिर्फ़ दो होते हैं। एक का सिफ़ाती नाम अ़ब्दुर्रब और दूसरे का सिफ़ाती नाम अ़ब्दुल मलिक होता है। येह दोनों कुतुब के वज़ीर होते हैं और येही उस के इन्तिक़ाल के बा'द उस के ख़लीफ़ा होते हैं। एक आ़लमे "मलकूत" और दूसरा आ़लमे "मुल्क" तक महदूद रहता है।

(3).....औताद

येह हर दौर में सिर्फ़ चार ह़ज़रात ही होते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन चारों के ज़रीए चारों जिहात या'नी मशरिक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में हर एक की विलायत एक जिहत में होती है। इन के सिफ़ाती नाम येह हैं : अ़ब्दुल ह़य्य, अ़ब्दुल अ़लीम, अ़ब्दुल क़ादिर और अ़ब्दुल मुरीद।

(4).....अब्दाल

येह हर दौर में सात(7) होते हैं। इन के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला सात ज़मीनों की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में से हर एक के

www.dawateislami.net

लिये एक ज़मीन होती है जहां उस की विलायत होती है । येह सातों बित्तरतीब इन सात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के क़दम पर होते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना हारून, ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस, ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह (عَلٰى نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अशरस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इसी क़िस्म के औलिया से थे । इन से अ़र्ज़ की गई : "येह मर्तबा किस अ़मल के ज़रीए़ मिलता है ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : चार बातों के ज़रीए़ : (1) भूक (2) बेदारी (3) ख़ामोशी और (4) तन्हाई ।

(5).....नुक़बा

येह हर दौर में सिर्फ़ 12 होते हैं । इन में से हर नक़ीब आस्मान के बारह बुर्जों में से एक एक बुर्ज की ख़ासिय्यतों का आ़लिम होता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन नुक़बा को आस्मानी अह़काम के उ़लूम से नवाज़ता है । नफ़्स में छुपी अश्या और आफ़ात का इ़ल्म रखते हैं और इस के मक्रो फ़रेब को निकालने पर क़ादिर होते हैं । शैत़ान इन से छुप नहीं सकता । येह उस के उन पोशीदा मुआ़मलात को भी जानते हैं जिन को शैत़ान ख़ुद नहीं जानता । इन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह शान अ़त़ा फ़रमाई है कि किसी शख़्स के ज़मीन पर लगे पाउं के नक़्श ही को देख कर इन्हें उस के शक़ी (या'नी बद बख़्त) और सईद (या'नी ख़ुश बख़्त) होने का इ़ल्म हो जाता है ।

(6).....नुजबा

हर दौर में आठ[8] से कम या ज़ियादा नहीं होते । इन ह़ज़रात के अह़वाल से ही क़बूलिय्यत की अ़लामात ज़ाहिर होती हैं । ह़ाल का इन पर ग़लबा होता है जिस को सिर्फ़ वोह औलियाए उ़ज़्ज़ाम पहचान सकते हैं जो मर्तबे में इन से ऊपर होते हैं ।

www.dawateislami.net

(7).....रजबी

येह हर दौर में 40 होते हैं। येह ऐसे बन्दे हैं जिन का ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़मत के साथ क़ाइम है। ह़क़ीक़त में येह (औलिया की एक क़िस्म) "**अफ़राद**" में से होते हैं। इन्हें रजबी इस लिये कहा जाता है कि इस मक़ाम का ह़ाल सिर्फ़ माहे रजब की पहली तारीख़ से आख़िरी तारीख़ तक त़ारी होता है। अलबत्ता ! बा'ज़ों पर इस कैफ़िय्यत का कुछ असर पूरे साल रहता है। येह मुख़्तलिफ़ शहरों में फैले हुवे होते हैं।

(8).....क़ल्बे आदम عَلَيْهِ السَّلَام के मुत़ाबिक़

येह हर ज़माने में 300 होते हैं। इन के बारे में ख़ुद हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया "येह क़ल्बे आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर हैं।" इस फ़रमाने आ़ली का मा'ना येह है कि मआ़रिफ़े इलाहिय्या में ग़ौरो फ़िक्र करने में इन के दिल उन के दिल की त़रह़ हैं। चूंकि उ़लूमे इलाहिय्या दिल पर वारिद होते हैं तो जिस त़रह़ येह उ़लूम व मआ़रिफ़ अकाबिर के दिलों पर नाज़िल होते हैं इसी त़रह़ इन ह़ज़रात के दिलों पर वारिद होते हैं। इन में से हर एक को 300 अख़्लाक़े ख़ुदावन्दी अ़त़ा होते हैं अगर किसी बन्दे को इन में से सिर्फ़ एक ख़ुल्क़ मिल जाए तो वोह सआ़दत याफ़्ता हो जाता है।

(9).....क़ल्बे नूह عَلَيْهِ السَّلَام के मुत़ाबिक़

येह हर दौर में 40 होते हैं। इन के बारे में भी फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है कि "मेरी उम्मत में हमेशा चालीस आदमी क़ल्बे नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर होंगे।" इन का मक़ाम, ग़ैरते दीनिय्या का मक़ाम है जिस तक पहुंचना बहुत दुश्वार व कठिन है। इन 40 में जो कमालात जुदा जुदा पाए जाते हैं वोह तमाम के तमाम ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ाते मुक़द्दसा में एक साथ मौजूद हैं।

www.dawateislami.net

(10).....क़ल्बे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़

येह हर ज़माने में सात अफ़राद होते हैं। इन के बारे में भी ह़दीसे पाक आई है। इन का मक़ाम हर त़रह़ के शको शुबा से सलामती वाला मक़ाम है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस दुन्या ही में इन के सीनों से कीने को दूर कर दिया है और येह सह़ीह़ इल्म वाले होते हैं। येह हस्तियां लोगों के ख़ैर ही पर नज़र रखती हैं।

(11).....क़ल्बे जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़

इन की ता'दाद हर दौर में पांच होती है जिस का ज़िक्र ह़दीस शरीफ़ में आया है। येह इस त़रीक़े विलायत के बादशाह होते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام इन ह़ज़रात की पर्दए ग़ैब से मदद करते हैं। और इस क़िस्म से तअ़ल्लुक़ रखने वाले औलियाए उ़ज़्ज़ाम रोज़े मह़शर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के साथ होंगे।

(12).....क़ल्बे मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़

येह हर ज़माने में तीन ही होते हैं। इन में कमी बेशी नहीं होती। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ख़ैरो रह़मत और नर्मी का मम्बअ़ व मर्कज़ होते हैं। इन में मुस्कुराहट, नर्मी और इन्तिहाई शफ़्क़त होती है। और येह उन्ही चीज़ों का मुशाहदा करते हैं जो बाइ़से शफ़्क़त हों।

(13).....क़ल्बे इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام के मुताबिक़

येह हस्ती हर दौर में एक ही होती है। अम्र व नही पर इन का तसल्लुत़ होता है। और इस के बारे में नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़दीस शरीफ़ भी मन्क़ूल है कि इसे इ़ल्मे इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام से ह़िस्सा अ़त़ा होता है।

www.dawateislami.net

(14).....रिजालुल ग़ैब

येह दस औलियाए किराम होते हैं जिन में कमी बेशी नहीं होती। येह अहले ख़ुशूअ़ हैं और रह़मानी तजल्ली के हमा वक़्त ग़लबे के सबब सिर्फ़ सर गोशी में गुफ़्त्गू करते हैं। अगर किसी को बुलन्द आवाज़ से बोलता सुन लें तो ह़ैरत में मुब्तला हो जाते हैं। अहलुल्लाह जब भी लफ़्ज़ "रिजालुल ग़ैब" बोलते हैं तो उन की मुराद येही औलियाए किराम होते हैं।

(15).....मज़हरे क़ुव्वते ख़ुदावन्दी

येह हर दौर में सिर्फ़ आठ ह़ज़रात होते हैं। क़ुरआने मजीद में इन की अ़लामत "اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ" (या'नी काफ़िरों पर सख़्त हैं) बयान की गई है। राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मलामत करने वाले की किसी मलामत को कोई ह़ैसिय्यत नहीं देते। इन्हें "रिजालुल क़ह्र" भी कहा जाता है। इन्हें बड़ी फ़अ़्आल हिम्मतें अ़त़ा की जाती हैं। और इसी अ़लामत से इन को पहचाना जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق ऐसे ही बुज़ुर्ग थे। رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن (جامع كرامات الاولياء، مقدمة الكتاب، ج١، ص٦٩-٧٤)

इन के इ़लावा भी औलियाए उ़ज़्ज़ाम की बे शुमार क़िस्में हैं मसलन **इलाहिय्यून, रह़मानिय्यून, रिजालुल ग़नी बिल्लाह, बुदला, रिजालुल इश्तियाक़, मलामतिय्यह, फ़ुक़रा, सूफ़ियह, उ़ब्बाद, ज़ुह्हाद, रिजालुल माअ, अफ़राद, उमना, क़ुर्रा, अह़बाब, मुह़द्दिसून, अख़िल्ला, सिद्दीक़ीन, शुहदा, सालिह़ीन, क़ानितीन, सादिक़ीन, ह़ामिदीन, ज़ाकिरीन, साबिरीन, वासिलीन, ह़ुलमा, अख़्यार, कुरमा** वग़ैरा वग़ैरा। यहां सिर्फ़ ह़ुसूले बरकत के लिये चन्द अक़्साम को बयान किया गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इन नेकों के फ़ुयूज़ो बरकात से ख़ूब माला माल फ़रमाए।

(آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ)

www.dawateislami.net

कोई वली किसी नबी से अफ़ज़ल नहीं

अहले सुन्नत व जमाअ़त का इस बात पर इजमाअ़ है कि कोई वली किसी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से अफ़्ज़ल नहीं हो सकता। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नजमुद्दीन अबू ह़फ़्स उ़मर बिन मुह़म्मद नसफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 538 हिजरी) फ़रमाते हैं : "कोई वली, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दर्जे को नहीं पहुंच सकता।"

(العقائدالنسفية مع شرحه،ص١٥٨)

और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 465 हिजरी) फ़रमाते हैं : "इस बात पर इजमाअ़ है कि कोई वली किसी नबी के मर्तबे को नहीं पहुंच सकता है।" (الرسالة القشيريه،باب كرامات الاولياء ص ٣٨٠)

नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 261 हिजरी या 234 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं :

"आ़म मोमिनों के मक़ाम की इन्तिहा सालिह़ीन के मक़ाम की इब्तिदा है और सालिह़ीन के मक़ाम की इन्तिहा शहीदों के मक़ाम की इब्तिदा है, और शहीदों के मक़ाम की इन्तिहा सिद्दीक़ों के मक़ाम की इब्तिदा है और सिद्दीक़ों के मक़ाम की इन्तिहा नबियों के मक़ाम की इब्तिदा है, और नबियों के मक़ाम की इन्तिहा रसूलों के मक़ाम की इब्तिदा है और रसूलों के मक़ाम की इन्तिहा ऊलुल अ़ज़्म रसूलों के मक़ाम की इब्तिदा है और ऊलुल अ़ज़्म रसूलों के मक़ाम की इन्तिहा ह़बीबे ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक़ाम की इब्तिदा है और ह़बीबे ख़ुदा अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक़ाम की इन्तिहा को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।"

(تذكره مشايخ نقشبنديه، ص٥٨، بحواله البرهان، ص٤٩٢)

ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल और रसूलों से आ'ला हमारा नबी

www.dawateislami.net

वली को नबी से अफ़्ज़ल कहने वाले का हुक्म

मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) "**फ़तावा रज़विय्या शरीफ़**" जिल्द 15, सफ़ह़ा 584 पर फ़रमाते हैं : "फ़क़ीर ने अपने फ़तवा मुसम्मा बेह "**रद्दुल रफ़ज़ह**" में शिफ़ा शरीफ़ इमाम क़ाज़ी इ़याज़ व रौज़ए इमाम नववी व इरशादुस्सारी इमाम क़स्त़लानी व शर्ह़े अ़क़ाइदे नस्फ़ी व शर्ह़े मक़ासिद इमाम तफ़्ताज़ानी व आ'लाम इमाम इब्ने ह़जर मक्की व मिनहुर्रोज़ अ़ल्लामा क़ारी व त़रीक़ए मुह़म्मदिय्या अ़ल्लामा बरकवी व ह़दीक़ए नदिय्या मौला नाबुलुसी वग़ैरहा कुतुबे कसीरा के नुसूस से साबित किया है कि ब इज्माए मुस्लिमीन कोई वली कोई ग़ौस कोई सिद्दीक़ भी किसी नबी से अफ़्ज़ल नहीं हो सकता, जो ऐसा कहे क़त़्अ़न इज्माअ़न काफ़िर मुल्ह़िद (या'नी बिल इत्तिफ़ाक़ पक्का काफ़िर व बे दीन) है, अज़ आं जुम्ला शर्ह़े सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है :

اَلنَّبِیُّ اَفْضَلُ مِنَ الْوَلِیِّ وَھُوَ اَمْرٌ مَقْطُوْعٌ بِهٖ وَالْقَائِلُ بِخِلَافِهٖ كَافِرٌ لِاَنَّهٗ مَعْلُوْمٌ مِنَ الشَّرْعِ بِالضَّرُوْرَةِ

या'नी हर नबी हर वली से अफ़्ज़ल है और येह अम्र यक़ीनी है और इस के ख़िलाफ़ कहने वाला काफ़िर है कि येह ज़रूरिय्याते दीन से है।"

(ارشاد الساری شرح صحیح البخاری، کتاب العلم، باب ما یستحب للعالم.....الخ، تحت الحدیث:۱۲۲، ج۱، ص۳۷۸)

क्या साह़िबे करामत वली ज़ियादा अफ़्ज़ल होता है

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : "ऐसा वली जिस से करामत का ज़ुहूर न हुवा कभी वोह साह़िबे करामत वली से अफ़्ज़ल होता है क्यूंकि अफ़्ज़ल होने का मदार यक़ीन की ज़ियादती पर है, करामत पर नहीं।"

(جامع کرامات الاولیاء، مقدمة الکتاب، المطلب الاول، ج۱، ص۳۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़फ़ीफ़ुद्दीन अ़ब्दुल्लाह बिन असअ़द बिन अ़ली याफ़ेई यमनी सुम्म मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی

www.dawateislami.net

(मुतवफ़्फ़ा 768 हिजरी) ने इरशाद फ़रमाया : "येह लाज़िम नहीं कि साहिबे करामत वली उस वली से अफ़्ज़ल हो जो साहिबे करामत नहीं बल्कि बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि जिस वली के पास करामत नहीं वोह साहिबे करामत वली से अफ़्ज़ल होता है।" (المرجع السابق)

करामत और इस के मुतअ़ल्लिक़ उमूर का बयान

करामत की ता'रीफ़

आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहुल उम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى (मुतवफ़्फ़ा 1143 हिजरी) करामत की ता'रीफ़ यूं फ़रमाते हैं : करामत से मुराद वोह ख़िलाफ़े आ़दत अम्र है जिस का ज़ुहूर तह़द्दी व मुक़ाबले के लिये न हो और वोह ऐसे बन्दे के हाथ पर ज़ाहिर हो जिस की नेक नामी मश्हूर व ज़ाहिर हो, वोह अपने नबी का मुत्तबेअ़, दुरुस्त अ़क़ीदा रखने वाला और नेक अ़मल का पाबन्द हो।"

(الحديقة الندية شرح الطريقة المحمدية، الباب الثانى فى الامورالمهمة فى الشريعة، ج١،ص٢٩٢)

ख़िलाफ़े आ़दत अम्र से क्या मुराद ?

ख़िलाफ़े आ़दत अम्र से मुराद वोह काम है जो आ़म तौ़र पर किसी इन्सान से ज़ाहिर न होता हो मसलन हवा में उड़ना, पानी पर चलना वग़ैरा अफ़्आ़ल कि आ़म तौ़र पर आदमी न तो हवा में उड़ सकता है और न ही पानी पर चल सकता है।

ख़िलाफ़े आ़दत अम्र की अक़्साम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल

www.dawateislami.net

सफ़हा 58 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 1367 हिजरी) ख़िलाफ़े आ़दत फ़े'ल की मुख़्तलिफ़ सूरतों को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "नबी से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत क़ब्ले नबुव्वत ज़ाहिर हो उस को इरहास कहते हैं (और बा'दे नबुव्वत हो तो मो'जिज़ा) और वली से जो ऐसी बात सादिर हो उस को करामत कहते हैं, और आ़म मोमिनीन से जो सादिर हो उसे मऊ़नत कहते हैं और बे बाक फ़ुज्जार या कुफ़्फ़ार से जो उन के मुवाफ़िक़ ज़ाहिर हो उस को इस्तिद्राज कहते हैं और इन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो तो इहानत है।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 1, ज़ि 1, स. 58)

अ़ल्लामतुद्दहर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ परहारवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 1239 हिजरी) ने भी "اَلنِّبْرَاسُ شَرْحُ شَرْحِ الْعَقَائِدْ" सफ़हा 272 पर इसी त़रह़ की तफ़्सील बयान फ़रमाई है।

मो'जिज़ा और करामत में फ़र्क़

मो'जिज़ा और करामत में कई ए'तिबार से फ़र्क़ है। चन्द फ़र्क़ बयान किये जाते हैं :

(1)....ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ाहिर क़ज़वीनी और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र फ़ूरक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا मो'जिज़ा व करामत में फ़र्क़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "मो'जिज़े का ज़ुहूर तह़द्दी (या'नी चेलेन्ज) और मुक़ाबले के लिये होता है जब कि करामत में ऐसा नहीं"

(حجة الله على العالمين، المقدمة، المبحث الاول، ص١٢_الرسالة القشيرية، ص٣٧٨)

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ाहिर क़ज़वीनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي ने इस की वज्ह यूं बयान फ़रमाई : "क्यूंकि जब वली ख़िलाफ़े आ़दत फ़े'ल के साथ अपनी विलायत का दा'वा करे तो येह मो'जिज़ए रसूल का मुन्किर नहीं होगा। अलबत्ता ! अगर वोह नबुव्वत का दा'वा कर बैठे

www.dawateislami.net

तो इस सूरत में वोह अपने दा'वे में झूटा होगा और कोई भी झूटा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली नहीं हो सकता।''

(حجة الله على العالمين،،المقدمة،المبحث الاول، ص ١٢)

(2)....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम बिन मुह़म्मद अस्फ़राईनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 418 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : ''मो'जिज़ात ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सच्चे नबी होने की दलील हैं और नबुव्वत की कोई दलील किसी ग़ैरे नबी में नहीं पाई जा सकती जैसे पुख़्ता व मोह़कम अ़क़्ल आ़लिम होने की दलील है जो ग़ैरे आ़लिम में नहीं पाई जा सकती।'' (الرسالة القشيرية، ص٣٧٨)

(3)....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अस्फ़राईनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : ''करामत वली से सादिर होती है और वोह किसी नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से सादिर होने वाले फ़े'ल या'नी मो'जिज़े के बराबर नहीं हो सकती।'' (المرجع السابق)

(4)....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र फ़ूरक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक फ़र्क़ मज़ीद बयान फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये मो'जिज़ात को ज़ाहिर करना लाज़िम है मगर वली के लिये करामत को छुपाना ज़रूरी है। (المرجع السابق)

करामत और इस्तिद्राज में फ़र्क़

(1)....मोह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) करामत और इस्तिद्राज के दरमियान फ़र्क़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : ''ज़ुहूरे करामत के वक़्त साह़िबे करामत बुज़ुर्ग पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ त़ारी होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ह्र से और ज़ियादा डरने लगता है क्यूंकि उसे येह डर होता है कि जिसे वोह करामत समझ रहा है कहीं इस्तिद्राज न हो। लेकिन इस्तिद्राज वाले का मुआ़मला इस के बिल्कुल उलट होता है। वोह अपने इस्तिद्राज को देख कर उन्स व

www.dawateislami.net

ख़ुशी महसूस करता है और समझता है कि मैं इसी का हक़दार हूं। और इस के सबब दूसरों को हक़ीर समझने लग जाता है। इस धोके में आ कर वोह ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इक़ाब व गिरिफ़्त से महफ़ूज़ समझने लग जाता है। अपने उख़रवी अन्जाम से बे ख़ौफ़ हो जाता है। पस अगर बन्दा ये हालात देखे तो वोह यक़ीन कर ले कि येह करामत नहीं, इस्तिद्राज है।" (جامع کرامات الاولیاء، ج۱،ص۲٤ملخصًا)

(2)....मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा व मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) "**फ़तावा रज़विय्या शरीफ़**" जिल्द 21, सफ़हा 557 पर सरदारे सिलसिलए चिश्तिया अशरफ़िया हज़रते क़ुत़बे रब्बानी महबूबे यज़दानी मख़्दूम अशरफ़ जहांगीर चिश्ती सिमनानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़रमान नक़्ल फ़रमाते हैं :

خارق عادت اگر ازولی موصوف باوصاف ولایت ظاہربود کرامت گویند
واگر ازمخالف شریعت صادر شود استدراج حفظنا اللّٰہ وایاکم

(**तर्जमा**) : अगर औसाफ़े विलायत वाले वली से ख़ारिक़े आ़दत ज़ाहिर हो तो वोह करामत है और अगर मुख़ालिफ़े शरीअ़त से सादिर हो तो इस्तिद्राज है। **अल्लाह** तआ़ला हमें और आप को महफ़ूज़ फ़रमाए।" (لطائف اشرفیه ، لطیفه پنجم ،ج۱،ص۱۲٦)

वली होने के लिये करामत ज़रूरी नहीं

हज़रते सय्यिदुना आ़रिफ़ बिल्लाह इमाम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 465 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "ज़रूरी नहीं कि जो करामत एक वली के हाथ पर ज़ाहिर हो वोही करामत तमाम औलिया के हाथ पर भी ज़ाहिर हो बल्कि अगर किसी वली से दुन्या में करामत का ज़ुहूर न भी हो तो उस की विलायत का इन्कार नहीं किया जाएगा।"

(الرسالة القشیریة ، باب کرامات الاولیاء ، ص۳۷۹)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 638 हिजरी) फ़रमाते हैं : "कभी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने वली को करामत के ज़ाहिर करने की कुदरत ही अ़ता नहीं फ़रमाता बा वुजूद येह कि वोह वली अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बड़ा मक़ाम रखने वालों में से होता है। और कभी करामत के इज़्हार पर कुदरत तो होती है मगर वोह वली अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये करामत को ज़ाहिर नहीं करता।" (جامع كرامات الاولياء ،مقدمة الكتاب ،المطلب الاول، ج١، ص٣٩ ملخصًا)

वली को करामत क्यूं मिलती है ?

मोह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत, हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "वलिय्युलाह को ख़िलाफ़े आ़दत फ़े'ल (या'नी करामत) इस लिये अ़ता होता है कि वोह अपनी ज़ात को ख़िलाफ़े आ़दत बना लेता है। यूं कि जब उस का नफ़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश करता है तो वोह उस के ख़िलाफ़ करता है ह़त्ता कि मुबाह़ (या'नी जाइज़) चीज़ों से भी नफ़्स को दूर रखता है। यूं ही जब शैत़ान मुख़्तलिफ़ अश्या को मुज़य्यन कर के उस के नफ़्स पर पेश करता है तो वोह अपने नफ़्स को उन अश्या से फेर देता है। अगर शैत़ान उस को किसी वाजिब के तर्क पर आमादा करे तो वोह उस की मुख़ालफ़त करता है। लिहाज़ा जब वोह अपनी ज़ात में ख़िलाफ़े आ़दत अफ़्आ़ल सर अन्जाम देता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन के लिये दुन्या में ख़िलाफ़े आ़दत काम पैदा फ़रमा देता है।" (المرجع السابق ،ص٤٣ ملخصًا)

करामत की अक़्साम :

करामत की दो अक़्साम हैं

(1) मह़सूसे ज़ाहिरी और (2) मा'क़ूले मा'नवी

चुनान्चे, मुजद्दिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा व मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) करामत की अक़्साम बयान करते

www.dawateislami.net

हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "करामत दो क़िस्म पर है, **महसूसे ज़ाहिरी व मा'क़ूले मा'नवी** । अवाम सिर्फ़ करामते महसूसा को जानते हैं जैसे किसी को दिल की बात बता देना, गुज़श्ता व मौजूदा व आइन्दा ग़ैबों की ख़बर देना, पानी पर चलना, हवा पर उड़ना, सदहा मन्ज़िले ज़मीन एक क़दम में तै करना, आंखों से छुप जाना कि सामने मौजूद हों और किसी को नज़र न आएं और करामाते मा'नविय्या को सिर्फ़ ख़वास पहचानते हैं वोह येह हैं कि अपने नफ़्स पर आदाबे शरइय्या की हिफ़ाज़त रखे, उम्दा ख़स्लतें हासिल करने और बुरी आदतों से बचने की तौफ़ीक़ दिया जाए तमाम वाजिबात ठीक अदा करने पर इल्तिज़ाम रखे ।"

(फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 21, स. 549)

महसूसे ज़ाहिरी की तफ़्सील

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा ताजुद्दीन अबू नस्र अब्दुल वह्हाब बिन अली सुबुकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) ने "**तबक़ातुल कुब्रा**" में (महसूसे ज़ाहिरी) करामत की पच्चीस अक़्साम तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाई हैं, यहां इन का खुलासा बयान किया जाता है :

(1)...मुर्दों को ज़िन्दा करना (2)...मुर्दों से बातें करना (3)...दरया का फट जाना, सूख जाना और पानी पर चलना (4)...किसी शै की अस्ल ही को तब्दील कर देना (5)...ज़मीन का लिपट कर फ़ासिला मुख़्तसर हो जाना (6)...जमादात व हैवानात का हम कलाम होना (7)...मरज़ों का दूर होना (8)...हैवानात का ताबेए फ़रमान होना (9)...ज़माने और वक़्त का सुकड़ जाना और महदूद हो जाना या (10)...उन का फैल जाना (11)...दुआ का शरफ़े क़बूलिय्यत पाना (12)...ज़बान का बात करने से रुक जाना या खुल जाना (13)...इन्तिहाई नफ़रत करने वाले दिलों को अपनी जानिब माइल कर लेना (14)...बा'ज़ गुयूब की ख़बर दे देना या कश्फ़ हो जाना (15)...अर्सए दराज़ तक खाए पिये बिग़ैर रहना (16)...तसर्रुफ़ का हासिल होना (17)...ज़ियादा

www.dawateislami.net

खाना खाने पर क़ुदरत होना (18)...ह़राम खाने से महफ़ूज़ रहना (19)...दूर दराज़ मक़ाम का मुशाहदा करना (20)...बा'ज़ औलियाए उ़ज़्ज़ाम को ऐसी हैअत व जलाल अ़त़ा होना जिसे देखने से इन्सान की मौत वाक़ेअ़ हो जाए (21)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से किफ़ायत व ह़िमायत ह़ासिल होना यूं कि अगर कोई औलियाए किराम से शर का इरादा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ख़ैर में तब्दील फ़रमा दे (22)...मुख़्तलिफ़ शक्लों और सूरतों को इख़्तियार कर लेना (23)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन्हें ज़मीनी ज़ख़ीरों पर आगाह फ़रमा देना (24)...क़लील वक़्त में कसीर तसानीफ़ लिख लेना (25)...ज़ह्र और हलाकत ख़ेज़ चीज़ों का असर न करना।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِي येह अक़्साम बयान करने के बा'द फ़रमाते हैं : "मेरे गुमान के मुत़ाबिक़ करामत की अक़्साम 100 से भी ज़ियादा हैं और हम ने जो पच्चीस अक़्साम बयान की हैं उन में से हर एक के तह़त कसीर अह़ादीस व वाक़िआ़त और ह़िकायात व रिवायात मन्क़ूल हैं।"

(جامع کرامات الاولیاء، مقدمة الکتاب،المطلب الثانی فی انواع الکرامات ج۱، ص۴۸تا۵۲،ملخصًا)

मा'क़ूले मा'नवी की तफ़्सील

मोह़क़्क़िक़े अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "मा'नवी करामात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ास बन्दे ही पहचानते हैं अ़वाम को वहां तक रसाई नहीं होती। मा'नवी करामात येह हैं कि आदाबे शरीअ़त उस वलिय्युल्लाह के लिये महफ़ूज़ हो जाते हैं। बेहतरीन अख़्लाक़ के ज़ुहूर और घटिया अख़्लाक़ से बचने की उसे तौफ़ीक़ मिल जाती है। वोह औक़ाते सह़ीह़ा में वाजिबात की अदाएगी पर मुह़ाफ़ज़त करता है। भलाइयों और नेकियों में जल्दी करता है, उस का सीना बुग़्ज़ो कीना और ह़सद व बद गुमानी से पाक होता है।

www.dawateislami.net

उस का दिल हर बुरी सिफ़त से पाक और मुराक़बे के ज़रीए आरास्ता होता है और वोह अपने और दीगर अश्या के मुआमले में हुक़ूक़ुल्लाह की रिआयत करता है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "हमारे नज़दीक येह तमाम करामाते मा'नविय्या हैं कि जिन में मक्र व इस्तिद्राज को दख़्ल नहीं।"

(المرجع السابق، ص٦٦ ملخصًا)

कसीर करामात के ज़ुहूर में हिक्मत

दीगर उम्मतों के मुक़ाबले में औलियाए उम्मते मुहम्मदिय्या علیٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام से बहुत ज़ियादा करामतों के ज़ुहूर की हिक्मत व अ़ज़मत बयान करते हुवे मोहक़्क़िक़े अहले सुन्नत, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नबहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى (मुतवफ़्फ़ा 1350 हिजरी) इरशाद फ़रमाते हैं : "उम्मते मुह़म्मदिय्या علیٰ صاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के औलियाए उ़ज़्ज़ाम से बहुत ज़ियादा करामतों के ज़ुहूर में हिक्मत येह है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सरदारे अम्बिया علیٰ نَبِيِّنَا وعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلام होने को ज़ाहिर किया जाए इस त़रह़ कि ह़याते ज़ाहिरी में भी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात कसीर हों और विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी (ब सूरते करामाते औलिया) ब कसरत मो'जिज़ात का ज़ुहूर हो (क्यूंकि करामत ह़क़ीक़त में नबी के मो'जिज़े का ततिम्मा होती है) और चूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुल अम्बिया और ह़बीबे ख़ुदा हैं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीन **"इस्लाम"** क़ियामत तक के लिये है, लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ के अस्बाब का बाक़ी रहना भी ज़रूरी है और इन अस्बाब में से एक क़वी सबब करामाते औलिया हैं जो दर ह़क़ीक़त हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के मो'जिज़ात हैं और येह करामात "मो'जिज़ए क़ुरआने करीम" के इ़लावा हैं।"

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : "और येह करामाते औलिया उन मो'जिज़ात के इलावा हैं जिन की ख़बर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा में ही दे दी थी मसलन क़ियामत की अ़लामात वग़ैरहा जिन का ज़ुहूर ब तदरीज हो रहा है। और उन करामात से ऐसा मह़सूस होता है कि हुज़ूर जाने दो जहान, मालिके कौनो मकान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत में बिल फ़े'ल मौजूद हैं और उम्मत आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल शरीफ़ के बा'द इसी त़रह़ मो'जिज़ात का मुशाहदा कर रही है जिस त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में करती थी। उन करामात के सबब मोमिनों के ईमान में इज़ाफ़ा और बे ईमानों को दीन की दौलत नसीब होती है।"

(حجة الله على العلمين ، الخاتمه فى اثبات كرامات الاولياء.....الخ ، ج١، ٦٠٧)

क़ुरआनो ह़दीस में करामात का बयान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

क़ुरआने मजीद और अह़ादीसे मुबारका में कई औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की करामात का ज़िक्रे ख़ैर मौजूद है। जो वाज़ेह़ त़ौर पर करामाते औलिया के ह़क़ होने की दलील है। इस मक़ाम पर करामाते औलिया पर मुश्तमिल बा'ज़ आयाते मुक़द्दसा और अह़ादीसे मुबारका तफ़्सीर व शर्ह़ के साथ पेश की जा रही हैं ताकि हमारे ईमान को ताज़गी और रूह़ को बालीदगी ह़ासिल हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़ा व त़ुफ़ैल में हमारे अ़क़ाइद व आ'माल की हिफ़ाज़त फ़रमाए और हमें अपने मह़बूब बन्दों की सच्ची मह़ब्बत पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाए और सिराते मुस्तक़ीम पर गामज़न रखे।

(آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَسَلَّمَ)

www.dawateislami.net

क़ुरआने पाक में करामात का ज़िक्र

लम्हा भर में इन्तिहाई वज़नी तख़्त हाज़िर कर दिया

(1)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۫

(پ۱۹، النمل: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था, कि मैं उसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले फिर जब सुलैमान ने तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस आयते मुबारका के तह़त "तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" में फ़रमाते हैं : "येह आसफ़ बिन बर्ख़िया थे किताब से मुराद या तो लौह़े मह़फ़ूज़ है या तौरात शरीफ़ या इब्राहीमी सह़ीफ़े। या'नी ह़ज़रते आसफ़ इन कुतुब की ता'लीम की बरकत से वली हो चुके थे क्यूं न होते कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के शागिर्दे रशीद थे। इ़ल्मे किताब से मुराद बात़िन या'नी इ़ल्मे तसव्वुफ़ है क्यूंकि ज़ाहिरी इ़ल्म, विलायत और त़ाक़त नहीं पैदा करता।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस आयत से वली की क़ुव्वत, वली की रफ़्तार, वली का ह़ाज़िरो नाज़िर होना मा'लूम हुवा क्यूंकि आसफ़ ने बिल्क़ीस के मक़ाम का पता किसी से न पूछा और आनन फ़ानन इतना वज़्नी तख़्त बिग़ैर छकड़े या गाड़ी के ले आए।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि विलायत बर ह़क़ है और औलिया उल्लाह की करामात भी बर ह़क़ हैं।"

www.dawateislami.net

बे मौसिम ग़ैब से फल मिलते

(2)....इरशादे बारी तआ़ला है :

كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۷﴾

(پ۳،ال عمران:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते कहा ऐ मरयम ! येह तेरे पास कहां से आया बोलीं वोह* **अल्लाह** *के पास से है बेशक* **अल्लाह** *जिसे चाहे बे गिनती दे।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस आयते मुबारका के तह़त "तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान" में फ़रमाते हैं : "इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे, एक येह कि करामते वली बर ह़क़ है क्यूंकि ह़ज़रते मरयम को बे मौसिम ग़ैबी फल मिलना उन की करामत थी। दूसरे येह कि बा'ज़ बन्दे मादर ज़ाद वली होते हैं, विलायत अ़मल पर मौक़ूफ़ नहीं, देखो ! ह़ज़रते मरयम लड़कपन में वलिया थीं। तीसरे येह कि वली को **अल्लाह** तआ़ला, इ़ल्मे लदुन्नी और अ़क़्ले कामिल अ़त़ा फ़रमाता है कि ह़ज़रते मरयम ने ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام के सुवाल का जवाब ऐसा ईमान अफ़रोज़ दिया कि سُبْحٰنَ اللّٰه । चौथे येह कि बा'ज़ **अल्लाह** वालों के लिये जन्नती मेवे आए हैं, ह़ज़रते मरयम को येह फल जन्नत से मिलते थे। पांचवें येह कि ह़ज़रते मरयम की परवरिश जन्नती मेवों से हुई न कि मां के दूध या दुन्यावी ग़िज़ाओं से।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद, ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई और ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा वग़ैरा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास गर्मियों के फल सर्दियों में देखते थे और सर्दियों के फल गर्मियों में देखते थे।" और इस आयत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों की करामात पर दलील है और अह़ादीसे करीमा में तो इस की बहुत मिसालें मौजूद हैं।

(تفسیر ابن کثیر، ال عمران، تحت الآیۃ: ۳۷، ج۲، ص۳۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1225 हिजरी) इसी आयते त़य्यिबा के तह़त फ़रमाते हैं : "येह क़िस्सा (या'नी वाक़िआ़) औलिया उल्लाह की करामत पर दलील है।" (تفسیر مظہری(مترجم)،ال عمران،تحت الآیۃ:۳۷، ج۲، ص۹۸)

सोते हुवे करामत का ज़ुहूर

(3)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَمۡ حَسِبۡتَ اَنَّ اَصۡحٰبَ الۡكَهۡفِ وَالرَّقِيۡمِ كَانُوۡا مِنۡ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝ اِذۡ اَوَى الۡفِتۡيَةُ اِلَى الۡكَهۡفِ فَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً وَّهَيِّئۡ لَنَا مِنۡ اَمۡرِنَا رَشَدًا ۝ فَضَرَبۡنَا عَلٰۤى اٰذَانِهِمۡ فِى الۡكَهۡفِ سِنِيۡنَ عَدَدًا ۝

(پ۱۵، الکھف: ۹تا۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे जब उन नौजवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब ! हमें अपने पास से रह़मत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी के सामान कर तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस थपका।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस आयते मुबारका के तह़त "**तफ़्सीरे नूरुल इ़रफ़ान**" में फ़रमाते हैं : "इस से दो मस्अले मा'लूम हुवे, एक येह कि करामते औलिया बर ह़क़ हैं उन का बे आबो दाना इतनी मुद्दत ज़िन्दा रहना करामत है।

www.dawateislami.net

दूसरे येह कि करामत वली से सोते में भी सादिर हो सकती है। इसी त़रह़ बा'दे मौत भी उन के जिस्मों को मिट्टी का न खाना येह भी करामते औलिया है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 606 हिजरी) इस आयते मुबारका की तफ़्सीर करते हुवे फ़रमाते हैं : "हमारे अस्ह़ाबे सूफ़िया رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی ने इस आयते त़य्यिबा से करामात के क़ौल की सिह़्ह़त पर इस्तिद्लाल किया है और येह इस्तिद्लाल बिल्कुल ज़ाहिर है।"

(التفسیر الکبیر، الکھف، تحت الآیۃ:۹تا۱۲، ج۷، ص۴۳۰)

अह़ादीसे मुबारका में करामात का ज़िक्र

चन्द दिन के बच्चे का कलाम करना

(1)....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इस्राईल में जुरैज नाम का एक (इ़बादत गुज़ार) शख़्स था। वोह एक रोज़ (अपनी इ़बादत गाह में) नमाज़ पढ़ रहा था कि इतने में उस की मां ने आ कर उसे आवाज़ दी। लेकिन उस ने जवाब न दिया और दिल में यूं कहा : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! नमाज़ पढ़ूं या उन का जवाब दूं।" उस की मां फिर आई और यूं दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे उस वक़्त तक मौत न देना जब तक येह किसी फ़ाह़िशा औ़रत के मुआ़मले में मुलव्वस न हो।" पस जुरैज एक दिन नमाज़ पढ़ रहा था कि एक औ़रत ने कहा मैं जुरैज को फ़ित्ने में मुब्तला कर दूंगी। चुनान्चे, वोह उस के सामने आई और उस से गुफ़्तगू की (या'नी बदकारी की दा'वत दी) मगर उस (इ़बादत गुज़ार नेक बन्दे) ने इन्कार किया। तो वोह औ़रत चरवाहे के पास गई और (बदकारी के लिये) उसे अपने

www.dawateislami.net

आप पर कुदरत दे दी। तो उस ने एक बच्चे को जनम दिया और कहने लगी कि येह जुरैज का है। लोग जुरैज के पास आए और उस की इबादत गाह तोड़ दी और उसे निकाल बाहर किया और उसे बहुत बुरा भला कहा। इस पर जुरैज ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर उस बच्चे के पास आया और (बच्चे के पेट में उंगली चुभो कर) उस से कहा : "ऐ बच्चे ! तेरा बाप कौन है ?" तो (चन्द दिन का) बच्चा बोल उठा कि : "फुलां चरवाहा।" लोगों ने (शर्मिन्दा हो कर) जुरैज से कहा : "हम तुम्हारे लिये सोने की इबादत गाह बना देते हैं।" मगर उस ने कहा : "नहीं ! वैसी ही मिट्टी की बना दो।"

(صحیح البخاری، کتاب المظالم ، باب اذھدم حائطافلیبن مثلہ، الحدیث:۲۴۸۲، ص۱۹۵۔صحیح مسلم، کتاب البروالصلۃوالادب،باب تقدیم برالوالدین علی التطوع بالصلوۃ وغیرھا ، الحدیث:۶۵۰۹،ص۱۱۲۵)

हदीसे पाक की शर्ह

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहयुद्दीन अबू ज़करिय्या यहया बिन शरफ़ नववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 676 हिजरी) इस हदीस शरीफ़ के तहत फ़रमाते हैं : "इस हदीसे पाक में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों की करामात का सुबूत है। और येही अहले सुन्नत का मज़हब है जब कि फ़िर्क़ए मो'तज़िला वाले इस मस्अले (या'नी करामात के सुबूत) में इख़्तिलाफ़ करते हैं या'नी नहीं मानते (और आज कल के बद मज़हबों का भी येही नज़रिय्या है) और इस हदीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि कभी कभार औलियाए उज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की करामात उन के इख़्तियार और तलब से भी वाक़ेअ होती हैं। हमारे मुतकल्लिमीन उलमा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के नज़दीक येही नज़रिय्या सहीह व दुरुस्त है।"

(شرح صحیح مسلم للنووی، کتاب البروالصلۃوالادب، باب تقدیم برالوالدین.....الخ، ج۱۶،ص۱۰۸)

www.dawateislami.net

खाना तीन गुना ज़ियादा हो गया

(2)....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बयान कर्दा त़वील ह़दीसे पाक में येह भी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और घर आए हुवे मेहमानों के सामने खाना रखा गया (वोह बयान करते हैं) हम जब भी कोई लुक़्मा उठाते तो उस के नीचे से और बढ़ जाता। फ़रमाते हैं : मेहमान सब के सब सैर हो गए और खाना जितना था उस से भी ज़ियादा बाक़ी बच गया। तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ देखा कि वोह उतना ही था जितना पहले था या उस से भी ज़ियादा था। तो अपनी ज़ौजा (ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से फ़रमाया : "ऐ बनी फ़राश की बहन ! येह क्या है ?" तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : "मेरी आंखों की ठन्डक की क़सम ! येह तो पहले के मुक़ाबले में तीन गुना ज़ियादा है।"

(صحیح البخاری، کتاب مواقیت الصلوۃ، باب السمر مع الاھل والضیف، الحدیث: ٦٠٢، ص٤٩)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

शारह़े बुख़ारी, फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1421 हिजरी) इस ह़दीसे पाक से ह़ासिल शुदा फ़वाइद लिखते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस से ह़ज़रते (सय्यिदुना) सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की करामत मा'लूम हुई कि खाने से वोह (खाना) कम न हुवा, ज़ियादा हो गया। और उसे कसीर आदमियों ने खाया।"

(नुज़्हतुल क़ारी शर्ह़े सह़ीह़ बुख़ारी, जि. 2, स. 285)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی (मुतवफ़्फ़ा 752 हिजरी) ने भी फ़त्ह़ुल बारी शर्ह़े सह़ीह़ुल बुख़ारी जिल्द 7 सफ़ह़ा 501 पर खाने के ज़ियादा हो जाने को अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

www.dawateislami.net

बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत क़रार देते हुवे फ़रमाया : "येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामत थी जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ज़ाहिर फ़रमाया।"

नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुद्दीन अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने शिहाबुद्दीन ह़म्बली अल मा'रूफ़ "**इब्ने रजब**" رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मुतवफ़्फ़ा 795 हिजरी) फ़रमाते हैं : "इस ह़दीस शरीफ़ में औलियाए उ़ज़्ज़ाम की करामात और इन से ज़ाहिर होने वाले ख़िलाफ़े आ़दत कामों का सुबूत है। और येही अहले सुन्नत का नज़रिय्या व अ़क़ीदा है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "येह करामात हर वक़्त और हर ज़माने में मिन जुम्ला अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात में से होती हैं क्यूंकि जिस शै के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया को इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी अ़ता फ़रमाता है वोह उन की अपने अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की इत्तिबाअ़ की बरकत और हुस्ने इक़्तिदा का सदक़ा है।" (فتح الباری لابن رجب، ج۳، ص۳۸۵)

दूर दराज़ मक़ाम पर लश्करे इस्लाम को देख लिया

(3)....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस्लामी लश्कर का सिपह सालार बना कर निहावन्द (इ़राक़ का एक अ़लाक़ा) भेजा, दुश्मन से मुक़ाबले के वक़्त ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने अ़क़ब से घात लगा कर ह़म्ला आवर होने वाले दुश्मन से ग़ाफ़िल थे। इधर मदीनए त़य्यिबा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़बा देते हुवे तीन बार पुकार कर फ़रमाया : **یَاسَارِیَۃُ الْجَبَلَ** "या'नी ऐ सारिया ! पहाड़ की त़रफ़ से होशयार।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह आवाज़ ह़ज़रते सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुनी और पलट कर दुश्मन पर ह़म्ला किया और फ़त्ह़ व कामयाबी ह़ासिल की।

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الفاروق رضی اللّٰہ عنہ، الحدیث۳۵۷۸۳، ج۱۲، ص۲۵۶)

www.dawateislami.net

हदीसे पाक की शर्ह

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अफ़ीफ़ुद्दीन अब्दुल्लाह बिन अस्अद बिन अली याफ़ेई यमनी सुम्म मक्की عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 768 हिजरी) फ़रमाते हैं : "इस हदीस शरीफ़ से अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की दो करामतें ज़ाहिर हुईं : (1)....मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से चौदह सौ (1400) मील दूर मक़ामे निहावन्द (इराक़) में मौजूद लश्करे इस्लाम और इन के दुश्मन को मुलाहज़ा फ़रमा लिया और (2)....मदीना शरीफ़ زَادَھَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا से इतनी दूर आवाज़ पहुंचा दी।" (الروض الرياحين فى حكايات الصالحين،صفحه۳۹)

और ऐसा क्यूं न होता कि उन के बारे में येह फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मरवी है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उमर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) की ज़बान और उन के दिल पर हक़ को जारी फ़रमा दिया है।" (جامع الترمذى،الحديث ۳٦٨٢، ص ٢٠٣١) और हज़रते सय्यिदुना सारिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की करामत भी मा'लूम हुई कि उन्हों ने दूर से आने वाली आवाज़ सुन ली। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अता से मुश्किलात में मदद फ़रमाते हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम हिबतुल्लाह हसन बिन मन्सूर तबरी ला लकाई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى (मुतवफ़्फ़ा 417 हिजरी) ने अपनी किताब كَرَامَاتُ اَوْلِيَاءِ اللّٰهِ (عَزَّوَجَلَّ) مَعَ شَرْحِ اُصُوْلِ اِعْتِقَادِ اَهْلِ السُّنَّةِ وَالْجَمَاعَة जिल्द 2, सफ़हा 1333 पर और हज़रते सय्यिदुना इमाम अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल क़ारी अल मा'रूफ़ मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى (मुतवफ़्फ़ा 1014 हिजरी) ने مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيْح شَرْحُ مِشْكٰوةِ الْمَصَابِيْح जिल्द 10, सफ़हा 415 पर इस वाक़िए को अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की करामात और मुकाशफ़ात से शुमार फ़रमाया है।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ताजुद्दीन अबू नस्र अ़ब्दुल वह्हाब बिन अ़ली सुबुकी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 771 हिजरी) फ़रमाते हैं : "येह वाक़िआ़ भी उन करामात में से एक है जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर ज़ाहिर हुई।" मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : "सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस करामत को दिखाने का इरादा नहीं था। बल्कि उन्हें कश्फ़ हुवा कि वोह लश्करे इस्लाम को अपनी आंखों से मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं गोया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़क़ीक़त में उन के दरमियान मौजूद हैं।"

(جامع کرامات الاولیاء،ذکر کرامات عمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،ج۱،ص۱۵۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़सम पूरी फ़रमाता है

(4)....ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत से ज़ईफ़, कमज़ोर, बोसीदा लिबास वाले ऐसे होते हैं कि अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को पूरा फ़रमा देता है और बरा बिन मालिक (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) भी उन्ही में से हैं।"

रावी बयान फ़रमाते हैं : इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुशरिकीन के ख़िलाफ़ एक जंग में शरीक हुवे। मुशरिकीन ने मुसलमानों को बहुत ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाया तो मुसलमानों ने ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "ऐ बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाओ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी क़सम को पूरा फ़रमाएगा। पस आप (मुशरिकीन के ख़िलाफ़) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर

www.dawateislami.net

क़सम खा लीजिये ।" ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ़ क़बूल हुई और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया । फिर एक मरतबा "सोस" के पुल पर मुसलमानों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा तो कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया, मुसलमानों ने कहा : "ऐ बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाइये । उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें कुफ़्फ़ार पर ग़लबा अ़ता फ़रमा और मुझे अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मिला दे (या'नी शहादत अ़ता फ़रमा) ।" ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ़ भी क़बूल हुई और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हुई और ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए ।

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب ذكر شهادة البراء بن مالك، الحديث ٥٣٢٥، ج٤، ص٣٤٠ تا ٣٤١)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़फ़ीफ़ुद्दीन अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द बिन अ़ली याफ़ेई यमनी सुम्म मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 768 हिजरी) इस ह़दीस शरीफ़ के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : करामत के सुबूत के बारे में अगर कोई और ह़दीस शरीफ़ न भी होती तो येही एक ह़दीसे पाक इस्बाते करामत के लिये काफ़ी थी । और करामत के मुतअ़ल्लिक़, सह़ाबए किराम, ताबेईने उ़ज़्ज़ाम और तब्अ़ ताबेईन رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن से इस क़दर रिवायात मन्क़ूल हैं कि वोह शोहरत और तवातुर तक पहुंची हुई हैं ।"

(روض الرياحين فی حكايات الصالحين، ص ٤٠)

www.dawateislami.net

औलिया के दुश्मनों पर क़हरे इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ग़ौर करना चाहिये कि जब एक आ़म मुसलमान से दुश्मनी करना, बुग़्ज़ो कीना रखना, ह़सद व बद गुमानी करना और उस की तौहीन व इहानत करना कबीरा गुनाह, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है तो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दों या'नी औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی से ऐसे मुआ़मलात रखना किस क़दर दुन्या व आख़िरत के ख़सारे का सबब होंगे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी पनाह में रखे और अपने मह़बूब बन्दों का बा अदब बनाए । हमें और हमारी औलाद को ता दमे ह़यात हर त़रह़ के बे अदब और बे अदबी से मह़फ़ूज़ रखे । (آمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ واَصْحَابِہٖ وَسَلَّم)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ए'लाने जंग

अह़ादीसे मुबारका में सिर्फ़ दो मक़ाम ऐसे हैं जहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ए'लाने जंग फ़रमाया है एक तो सूद के मुआ़मले में और दूसरे अपने वली से दुश्मनी रखने के बारे में । चुनान्चे,

(1)....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी उसे मेरा ए'लाने जंग है ।"

(صحیح بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث:٦٥٠٢، ص٥٤٥)

www.dawateislami.net

(2)....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पास बैठ कर रोते हुवे देख कर सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया कि "मुझे इस बात ने रुलाया है जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है कि "थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الفتن، باب من ترجی له السلامة من الفتن ، الحدیث ۳۹۸۹، ص ۲۷۱۶)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1391 हिजरी) इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे रोने की दूसरी वज्ह येह है कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के दोस्तों की ईज़ा, रब से जंग है और **अल्लाह** के औलिया ऐसे छुपे हुवे हैं कि उन की पहचान बहुत मुश्किल है बहुत दफ़्आ़ पड़ोसियों दोस्तों से शकर रन्जी हो जाती है। मुमकिन है कि उन में से कोई वलिय्युल्लाह हो उन की तक्लीफ़ मेरे लिये मुसीबत बन जावे ह़दीसे क़ुदसी में है : اَوْلِیَائِیْ تَحْتَ قُبَائِیْ لَایَعْرِفُھُمْ غَیْرِی मेरे वली मेरी क़ुबा में रहते हैं, उन्हें मेरे सिवा कोई नहीं पहचानता (मिरक़ात)।"

(مراۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح، ج۷، ص۱۳۸)

बा अद्ब बा नसीब, बे अद्ब बे नसीब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन हिबतुल्लाह तमीमी शाफ़ेई़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान फ़रमाते हैं कि भरी जवानी में इल्मे

www.dawateislami.net

दीन के हुसूल के लिये बग़दाद शरीफ़ हाज़िर हुवा। उन दिनों मद्रसए निज़ामिया में "इब्ने सक़ा" मेरा रफ़ीक़ व हम सबक़ था। हमारी येह आ़दत थी कि इबादत के साथ साथ सालिहीन की ज़ियारत करने जाया करते थे। उन्ही अय्याम की बात है बग़दादे मुअ़ल्ला में "ग़ौस" नाम से मश्हूर एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रहा करते थे। उन की निस्बत कहा जाता था कि वोह जब चाहते हैं ज़ाहिर हो जाते हैं और जब चाहते हैं ग़ाइब हो जाते हैं। एक दिन मैं, इब्ने सक़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) जो कि उन दिनों जवान थे, उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़ियारत के इरादे से निकले। रास्ते में इब्ने सक़ा कहने लगा कि "मैं उन से ऐसा मस्अला पूछूंगा, जिस का वोह जवाब न दे सकेंगे।" मैं ने कहा कि : मैं भी एक मस्अला पूछूंगा, देखूंगा कि वोह क्या जवाब देते हैं।" तो ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! मैं तो उन से कोई सुवाल न करूंगा बल्कि उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन की ज़ियारत की बरकतें लूटूंगा।"

पस जब हम वहां पहुंचे तो उन्हें अपनी जगह मौजूद न पाया। अभी हम कुछ देर ही ठहरे थे तो क्या देखा कि वोह वहीं तशरीफ़ फ़रमा हैं। फिर उन्हों ने इब्ने सक़ा की त़रफ़ ग़ुस्से से देख कर फ़रमाया : "ऐ इब्ने सक़ा ! तेरी हलाकत हो ! तू मुझ से ऐसा मस्अला पूछने आया है जिस का मुझे जवाब नहीं आएगा। सुन ! वोह मस्अला येह है और उस का जवाब येह है। बेशक मैं तेरे अन्दर कुफ़्र की आग भड़कते हुवे देख रहा हूं।" फिर उन्हों ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम मुझ से ऐसा मस्अला पूछने आए हो ताकि देखो कि मैं उस का क्या जवाब देता हूं। सुनो ! वोह मस्अला

www.dawateislami.net

येह है और उस का जवाब येह है। और तुम्हारी बे अदबी की वज्ह से दुन्या तुम्हारे कानों की लौ तक पहुंचेगी।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ नज़र फ़रमाई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने क़रीब कर लिया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'ज़ीमो तकरीम की और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दल क़ादिर ! आप ने अपने अदब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी व ख़ुश किया है। गोया कि मैं देख रहा हूं कि आप बग़दाद शरीफ़ में मिम्बर पर बैठे लोगों से फ़रमा रहे है : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ "या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है।" और मैं आप के ज़माने के औलियाए उ़ज़्ज़ाम को भी देख रहा हूं कि उन्हों ने आप की ता'ज़ीम की ख़ातिर अपनी गर्दनों को झुका दिया है।" येह फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग उसी वक़्त ग़ाइब हो गए। इस के बा'द हम ने उन्हें न देखा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی فरमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی का ह़ाल येह हुवा कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में जो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ुर्ब था उस की निशानी व अ़लामत ज़ाहिर हुई और हर आ़मो ख़ास (या'नी मशाइख़, औलिया, उ़लमा, और आ़म लोग) आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बारगाह से फ़ैज़याब होने लगा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह ऐ'लान भी फ़रमाया : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है। और ज़माने के तमाम औलियाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इस फ़ज़ीलत का इक़रार किया।

और इब्ने सक़ा का ह़ाल येह हुवा कि उ़लूमे शरइ़य्या के ह़ुसूल में लगा रहा ह़त्ता कि उन ज़ाहिरी उ़लूम में बे इन्तिहा माहिर हो गया और अपने ज़माने के बहुत से माहिरीन पर फ़ाइक़ हो गया, वोह ग़ज़ब का फ़सीह़ो बलीग़ था कि हर इ़ल्म में अपने मद्दे मुक़ाबिल मुनाज़िर को ज़ेर

www.dawateislami.net

कर लेता था। जब उस की बहुत ज़ियादा शोहरत हुई तो बादशाहे वक़्त ने उसे अपना मुक़र्रब बना लिया और उसे मुल्के रूम के बादशाह की त़रफ़ भेजा। पस जब शाहे रूम ने उस की कई उ़लूम में महारत और फ़साह़तो बलाग़त देखी तो बड़ा ह़ैरान और मुतअ़ज्जिब हुवा। चुनान्चे, बादशाह ने उस के साथ मुनाज़रे के लिये ईसाइय्यों के बड़े बड़े अहले इ़ल्म और पादरियों को जम्अ़ किया। उन्हों ने इब्ने सक़ा से मुनाज़रा किया तो उस ने तमाम को आ़जिज़ व बे बस कर दिया। यूं उसे शाहे रूम के दरबार में बहुत इ़ज़्ज़त व पज़ीराई ह़ासिल हुई। फिर एक दिन उस की नज़र बादशाह की लड़की पर पड़ी तो वोह उस पर फ़रेफ़्ता हो गया और बादशाह से दरख़्वास्त की, कि "अपनी लड़की का निकाह़ मेरे साथ कर दें।" बादशाह ने कहा : "अगर तुम ईसाई मज़हब इख़्तियार कर लो तो निकाह़ कर दूंगा।" (نَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنْ ذَالِک) इब्ने सक़ा ने ईसाई मज़हब क़बूल कर लिया और बादशाह ने अपनी लड़की का निकाह़ उस के साथ कर दिया। उस वक़्त इब्ने सक़ा को उस ग़ौस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बात याद आई तो उस ने जान लिया कि येह मुसीबत उसी बे अदबी के सबब है।

और मेरा (या'नी इस ह़िकायत के रावी का) ह़ाल येह हुवा कि मैं दिमश्क़ चला आया। जहां सुल्त़ान नूरुद्दीन मलिक शहीद ने मुझे बुला कर औक़ाफ़ की वज़ारत क़बूल करने पर मजबूर किया तो मैं ने वज़ारत क़बूल कर ली और मेरे पास दुन्या (या'नी मालो दौलत) इस क़दर ज़ियादा आई कि मैं ने मह़सूस किया दुन्या मेरे कानों की लौ तक पहुंच गई है। और इस त़रह़ उन ग़ौस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का कलाम हम तीनों के बारे में सच साबित हुवा।

(بهجة الاسرار و معدن الانوار، ذكر اخبار المشايخ عنه بذالك، ص ١٩)

प्यारे इस्लामी भाइयो !

आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि हमारे आक़ा व मौला हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली का अदब किया तो

www.dawateislami.net

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को वलियों की सरदारी की बिशारत व ख़ुश ख़बरी मिली । इस लिये हमें चाहिये कि महबूबाने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ का ख़ूब ख़ूब अदब किया करें । नीज़ औलियाए किराम की हर त़रह़ की बे अदबी से ख़ुद को बचाएं क्यूंकि इब्ने सक़ा ने ज़ियादा गुस्ताख़ी व बे अदबी की तो बहुत बड़ा नुक़्सान उठाया कि نَعُوْذُ بِالله उस ने मुर्तद हो कर ईसाइय्यत इख़्तियार कर ली और अबू सईद अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से थोड़ी सी बे अदबी सादिर हुई तो उन्हें माले दुन्या की आफ़त में मुब्तला होना पड़ा ।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 275 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "आदाबे मुर्शिदे कामिल" के सफ़ह़ा 27 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं कि "हमें ज़ियादा इ़ल्म ह़ासिल करने के मुक़ाबले में थोड़ा सा अदब ह़ासिल करने की ज़ियादा ज़रूरत है ।"

(الرسالة القشيرية ،باب الادب،ص۳۱۷)

औलिया उल्लाह का दुश्मन ज़लीलो ख़्वार होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इस्माईल ह़क़्क़ी ह़नफ़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1137 हिजरी) "**रूहुल बयान**" में सूरतुल ह़ज की आयत नम्बर 18 की तफ़्सीर करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "वली ऐसा मह़बूब इन्सान होता है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इ़ज़्ज़तो करामत से बुज़ुर्गी अ़त़ा फ़रमाता है कि ऐसी बुज़ुर्गी और किसी को अ़त़ा नहीं फ़रमाता । पस अगर ज़माने के सारे लोग मिल कर भी उस की तौहीन व इहानत करना चाहें तो नहीं कर सकते क्यूंकि उसे इ़ज़्ज़ते ह़क़ीक़ी मिल चुकी है और वोह इस त़रह़ कि उस ने अपने नफ़्स को फ़नाफ़िल्लाह के मक़ाम में गिरा दिया और येही ह़क़ीक़ी सजदा है । पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे इ़ज़्ज़त व बुलन्दी का ताज पहना दिया । क्या तुम इस ह़दीसे क़ुदसी में ग़ौर नहीं करते ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने मेरे

www.dawateislami.net

किसी वली से दुश्मनी की उस ने मुझ से जंग का ए'लान किया।" मत़लब येह है कि जो मेरे औलिया में से किसी वली पर नाराज़ हुवा, उसे अज़िय्यत दी या उस की तौहीन की तो गोया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ जंग करने निकला है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ अपने प्यारों (या'नी औलियाए किराम) ही की मदद फ़रमाता है लिहाज़ा रब عَزَّوَجَلَّ से जंग के लिये निकलने वाला ज़लीलो ख़्वार होता है। न उस का कोई मददगार होता है और न ही कोई ज़िल्लत से बचाने वाला होता है।"

(تفسیرروح البیان، سورۃ الحج ،تحت الایۃ:۱۸،ج٦،ص۱۸)

वलियों पर ए'तिराज़ करने वाले बिदअ़ती व जाहिल हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा दलजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي **شَرْحُ مَقَاصِدِ الْمَقَاصِد** में इरशाद फ़रमाते हैं : "करामात का इन्कार बिदअ़ती लोग ही करते हैं और इन का इन्कार कोई अ़जीब बात नहीं क्यूंकि इबादत व रियाज़त बजा लाने और गुनाहों से इज्तिनाब की कोशिश के बा वुजूद न उन्हें कोई करामत ह़ासिल हुई और न ही उन के बड़ों को येह दौलत मिली तो येह बिदअ़ती लोग औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى पर ए'तिराज़ात करने की आफ़त में मुब्तला हो गए। उन के गोश्त नोचना और खाल खींचनी शुरूअ़ कर दी। येह लोग इस बात से जाहिल हैं कि विलायत के मुआ़मले का मदार अ़क़ीदे की दुरुस्ती, बात़िन की सफ़ाई, त़रीक़त की पैरवी और ह़क़ीक़त के इन्तिख़ाब पर है।" (جامع کرامات الاولیاء، مقدمۃ الکتاب،المطلب الاول ،ج۱،ص۲۹)

तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी से महरूम लोग

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़फ़ीफ़ुद्दीन अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द बिन अ़ली याफ़ेई यमनी सुम्म मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 768 हिजरी) फ़रमाते हैं : "करामाते औलिया के मुन्किर पर इन्तिहाई तअ़ज्जुब

www.dawateislami.net

है हालांकि करामात के मुतअ़ल्लिक़ आयाते तय्यिबा, अह़ादीसे सह़ीह़ा, आसारे मश्हूरा, और सलफ़ व ख़लफ़ के मुशाहदात व ह़िकायात में बहुत सारे दलाइल मौजूद हैं । उन बहुत से मुन्किरीन की ह़ालत येह है कि अगर औलियाए किराम और सालेह़ीने उ़ज़्ज़ाम को हवा में उड़ता देख लें तो चिल्ला उठें कि "येह जादू है ।" या येह बकवास करें कि "येह औलिया नहीं शयात़ीन हैं ।" (نَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنْ ذَالِک) बिला शुबा येह वोह लोग हैं जो तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी से मह़रूम हैं । और हर लिह़ाज़ से ह़क़ को झुटलाने वाले हैं ।" (روض الریاحین فی حکایات الصالحین، الفصل الثانی،ص٤٣)

मुन्किर का इ़लाज

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 638 हिजरी) अपनी किताब "مَوَاقِعُ النُّجُوْم وَمَطَالِعُ اَهِلِ الْاَسْرَار وَالْعُلُوْم" में इरशाद फ़रमाते हैं : "अगर मुन्किरे करामात, साह़िबे करामत या'नी वली के बजाए उस के हाथ पर करामत को ज़ाहिर फ़रमाने वाले क़ादिरे मुत़लक़ रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो तो वोह करामत के ज़ुहूर को बईद समझेगा न ही इन्कार करेगा ।"

(جامع کرامات الاولیاء،مقدمة الکتاب ،المطلب الاول ج١،ص٣٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

आप ने इस मुक़द्दमे "**फ़ैज़ाने कमालाते औलिया**" में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों, उन की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत, करामात और उन की ज़वात से मुतअ़ल्लिक़ा अहम बातों का मुत़ालआ़ फ़रमाया । जिस से यक़ीनन आप पर येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ इ़यां हो गई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने औलिया को निहायत ही आ'ला व अरफ़अ़ मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है। और उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

का बे हद फ़ज़्लो करम है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि उन पाकीज़ा हस्तियों की महब्बत दिल में रासिख़ कर लें और उन पर ए'तिराज़ करने वाले ना आक़िबत अन्देशों से अपना ईमान व अक़ीदा महफ़ूज़ रखें। और किसी ऐसे माहोल से वाबस्ता हो जाएं जिस में औलिया उल्लाह की महब्बत न सिर्फ़ बताई जाती हो बल्कि पिलाई जाती हो और इस पुर फ़ितन और पुर आशोब दौर में वोह माहोल कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक "दा'वते इस्लामी" का मदनी माहोल है। आप से भी मदनी इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी के प्यारे और मदनी माहोल में रहते हुवे उन औलियाए उज़्ज़ाम के नक़्शे क़दम पर चल कर अपनी ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश करें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता पाएंगे।

आइये ! अब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के बा'दे विसाल करामात, उन के मज़ारात पर गुम्बद बनाने, चादर चढ़ाने उन से मदद तलब करने और बा'दे विसाल उन का ख़ल्क़े ख़ुदा की मुश्किलात को हल करने ऐसे इन्तिहाई अहम उमूर पर मुश्तमिल, आरिफ़ बिल्लाह, साहिबे करामाते कसीरह, हज़रते अल्लामा सय्यिदी अब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के मुबारक रिसाले كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر का तर्जमा बनाम "**फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया**" का अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मुतालआ कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस मुबारक रिसाले का बग़ौर मुतालआ करने से बे शुमार वस्वसों की जड़ कट जाएगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारों की महब्बत से दिल लबरैज़ हो जाएंगे। और उन की महब्बत ऐसी पुख़्ता हो जाएगी कि उन के बुग़ज़ को कभी भी दिल में जगह न मिलेगी।

www.dawateislami.net

दुआइय्या कलिमात :

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे औलिया के सदक़े इस रिसाले पर तर्जमा व तह़क़ीक़ का काम करने वाले मदनी उ़लमा كَثَّرَهُمُ اللهُ تَعَالٰى इस का मुत़ालआ़ करने वाले और इस को लंगरे रसाइल में तक़्सीम करने वाले हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को दीनो दुन्या की बे शुमार भलाइयां और बरकतें अ़त़ा फ़रमा और औलियाए उ़ज़्ज़ाम की मह़ब्बत को आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।

(آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلَّمَ)

आ़लिमो फ़ाज़िल मुरीद को नसीहत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 275 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**आदाबे मुर्शिदे कामिल**" के सफ़ह़ा 27 पर सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن का येह फ़रमान मन्क़ूल है कि "क्या वज्ह है कि मुरीद आ़लिम फ़ाज़िल और साह़िबे शरीअ़त व त़रीक़त होने के बा वुजूद (अपने मुर्शिद के फ़ैज़ से) दामन नहीं भर पाता ? ग़ालिबन इस की वज्ह येह है कि मदारिस से फ़ारिग़ अक्सर उ़लमाए दीन अपने आप को पीरो मुर्शिद से अफ़्ज़ल समझते हैं या अ़मल का ग़ुरूर या कुछ होने की समझ कहीं का नहीं रहने देती । वगरना ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللهِ الْھَادِی का मश्वरा सुनें : फ़रमाते हैं : "भर लेने वाले को चाहिये कि जब किसी चीज़ के ह़ासिल करने का इरादा करे तो अगर्चे कमालात से भरा हुवा हो मगर कमालात को दरवाज़े पर ही छोड़ दे (या'नी आ़जिज़ी इख़्तियार करे) और येह जाने कि मैं कुछ जानता ही नहीं । ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पाएगा । और जो अपने आप को भरा हुवा समझेगा याद रहे कि भरे बरतन में कोई और चीज़ नहीं डाली जा सकती ।"

(انوار رضا، امام احمد رضا اور تعلیمات تصوف، ص ۲۴۲)

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया

www.dawateislami.net

یک زمانہ صحبت با اولیاء

بہتر از صد سالہ طاعت بے ریا

या'नी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی की लम्हा भर की सोहबत, सौ साल की ख़ालिस इबादत से बेहतर है

औलिया का जो कोई हो बे अदब
नाज़िल उस पर होता है क़हरो ग़ज़ब

महफ़ूज़ शहा रखना सदा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

हम को सारे औलिया से प्यार है
اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** وَحدَهٗ لاشریک के लिये हैं, और दुरूदो सलाम हो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जिन के बा'द कोई नबी नहीं।

हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने इस रिसाले में औलियाए किराम رحمہم اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین की वफ़ात के बा'द उन की करामात के ज़ाहिर होने, उन की क़ब्रों पर मज़ारात बनाने और उन पर चादरें चढ़ाने के अह़काम लिखे हैं और मैं ने इस का नाम "كَشْفُ النُّوْرِ عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر" रखा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ है कि मुझे ह़क़ और दुरुस्त बात कहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और मेरे मुसलमान भाइयों को ह़क़ ज़ाहिर होने के बा'द इन्साफ़ के साथ इस को क़बूल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर शै पर क़ादिर है और दुआ की क़बूलिय्यत उस के शायाने शान है।"

करामत किसे कहते हैं ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! करामात, जिन के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी बारगाह में मुक़र्रब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को इ़ज़्ज़त बख़्शी वोह मख़्लूक़ में जारी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आ़दत के ख़िलाफ़ ऐसी बातें हैं जिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ महज़ अपनी क़ुदरते कामिला और इरादए ख़ास से पैदा फ़रमाता है,[1] वली की ज़ाती ताक़त व इरादे का इस करामत में ब ए'तिबारे तासीर व तख़्लीक़

1 .....ह़ज़रते मुसन्निफ़ आ़रिफ़ बिल्लाह सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने अपनी दूसरी मायानाज़ तस्नीफ़ اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ الطَّرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة में करामत की जो जामेअ़ व मानेअ़ ता'रीफ़ और फिर इस की शर्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम लाक़ानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی के ह़वाले से बयान फ़रमाई है वोह यूं है : (बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर)

www.dawateislami.net

यक़ीनन कोई दख़्ल नहीं, क्यूंकि वली की ज़ात में मौजूद क़ुदरत व इरादा सिर्फ़ इस बात का सबब है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ज़ात में इन करामात को पैदा फ़रमाए और इन की निस्बत उस वली की त़रफ़ की जाए, और जो येह अ़क़ीदा रखे कि किसी करामत में वली की ज़ाती क़ुदरत व इरादे को दख़्ल है तो ऐसा शख़्स "इ़ल्मे तौह़ीद" की रू से काफ़िर है ।"

मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जो करामात वली के हाथ पर पैदा फ़रमाता है उस की ह़क़ीक़त येह है कि वली को इस बात का यक़ीन है कि मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी अल्लाह وَحدہٗ لاشریک ही की ज़ात है, और उस के नज़दीक ख़ुद उस की अपनी ज़ात क़त़अ़न मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी नहीं, क्यूंकि उस की ज़ात

(बक़िय्या हाशिया)......

هِیَ اَمْرٌ خَارِقٌ لِلْعَادَةِ غَیْرُ مَقْرُوْنٍ بِالتَّحَدِّیْ یَظْهَرُ عَلٰی یَدِ عَبْدٍ ظَاهِرِ الصَّلَاحِ مُلْتَزِمٍ لِمُتَابِعَةِ نَبِیٍّ مِنَ الْاَنْبِیَاءِ عَلَیْهِمُ السَّلَام مَصْحُوْبٍ بِصَحِیْحِ الْاِعْتِقَادِ وَالْعَمَلِ الصَّالِحِ

तर्जमा : करामत से मुराद वोह ख़िलाफ़े आ़दत अम्र है जिस का ज़ुहूर तह़द्दी व मुक़ाबला के लिये न हो और वोह ऐसे बन्दे के हाथ पर ज़ाहिर हो जिस की नेक नामी मश्हूर व ज़ाहिर हो, वोह अपने नबी का मुत्तबेअ़, दुरुस्त अ़क़ीदा रखने वाला और नेक अ़मल का पाबन्द हो । फिर इस की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "तह़द्दी व मुक़ाबला न होने की क़ैद से करामत, मो'जिज़े से अलग हो गई । नेक नामी के मश्हूर व ज़ाहिर होने की क़ैद से मऊ़नत से जुदा हो गई और मऊ़नत से मुराद आ़म मुसलमानों के हाथ पर ज़ाहिर होने वाला वोह ख़िलाफ़े आ़दत काम है जो इब्तिला व आज़्माइश से छुटकारा दिलाए । और करामत में दुरुस्त अ़क़ीदा और नेक अ़मल की क़ैद से येह इस्तिद्राज (या'नी बेबाक फ़ुज्जार या कुफ़्फ़ार से उन के मुवाफ़िक़ ख़िलाफ़े आ़दत बात) से जुदा हो गई । नीज़ नबी की मुताबेअ़त (या'नी पैरवी) की क़ैद से उस ख़िलाफ़े आ़दत काम से जुदा हो गई जो नबुव्वत के झूटे दा'वेदारों के झूट को साबित करता हो जैसे मुसैलिमा कज़्ज़ाब ने मीठे पानी के कुंवें में उस की मिठास बढ़ाने के लिये थूका तो वोह नमकीन व खारा हो गया ।"

(الحدیقة الندیة شرح الطریقة المحمدیة، الباب الثانی فی الامور المهمة فی الشریعة، الفصل الاوّل فی تصحیح الاعتقاد، ج۱، ص۲۹۲)

www.dawateislami.net

की ह़रकातो सकनात या'नी रूह़ानी कुव्वतें जैसे देखने, सुनने, चखने, छूने, और सूंघने वाली कुव्वतें, अ़क़्ली बातिनी कुव्वत, तफ़क्कुर व तख़य्युल (या'नी ग़ौरो फ़िक्र और सोचने) की कुव्वत, याद करने की कुव्वत, इसी त़रह़ उस के तमाम आ'ज़ा और पठ्ठों की ज़ाहिरी ह़रकात वगै़रा येह तमाम यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही ने पैदा फ़रमाई हैं। और वोह वली इन तमाम रूह़ानी व ज़ाहिरी कुव्वतों का अपनी ज़ात में हर वक़्त मुशाहदा करता है, और यक़ीन रखता है, मगर बा'ज़ औक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर ग़फ़्लत त़ारी फ़रमा देता है तो उस वक़्त वोह अपनी साबिक़ा ह़ालत के मुत़ाबिक़ वली ही होता है, जैसे सोया हुवा मोमिन कि उस वक़्त उस पर ग़फ़्लत त़ारी होती है मगर वोह अपनी साबिक़ा ह़ालत (या'नी बेदारी) के मुत़ाबिक़ मोमिन ही होता है। और येह (या'नी बा'ज़ औक़ात ग़फ़्लत त़ारी हो जाना) औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अह़वाल व मुशाहदात का अदना दरजा है।''

इख़्तियारी मौत किसे कहते हैं?

बा'ज़ औक़ात उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام अपनी इस्तिलाह़ में इसे इख़्तियारी मौत का नाम देते हैं, और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान को दलील बनाते हैं :

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾

(پ۲۳، الزمر: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है।*

''مَيْت'' (یاء के सुकून के साथ) और ''مَيِّت'' (یاء की तशदीद के साथ) के दरमियान फ़र्क़ न करने की सूरत में इशारए आयत के मा'ना येह हैं, जैसा कि इमाम जोहरी ने ''اَلصِّحَاح'' में ज़िक्र किया कि ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप ने इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन्हों ने भी मरना है, अगर्चे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात से और उन से भी ज़ाहिरी व बातिनी तौ़र पर सोचने समझने और मुख़्तलिफ़

www.dawateislami.net

काम सर अन्जाम देने का मुआ़मला यक्सां ज़ुहूर पज़ीर होता है। क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका मख़्लूक़ (या'नी पैदा की गई) है जैसे इन की ह़यात मख़्लूक़ है, और येह ह़यात एक ऐसा अ़रज़ है (या'नी जो दूसरी चीज़ की वज्ह से क़ाइम है) कि जिस के मौजूद होते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी भी ज़ात में बातिनी तौ़र पर इदराक, और ज़ाहिरी तौ़र पर अफ़्आ़लो अक़्वाल को पैदा फ़रमाता है न कि इदराक व अफ़्आ़ल व अक़्वाल के सबब इस ह़यात को पैदा फ़रमाता है। क्यूंकि येह ह़यात उन के पैदा होने का सबब है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन तमाम लोगों में दर ह़क़ीक़त येह मौत है, और येही इख़्तियारी मौत है जो मक़ामे विलायत में शर्त़ है, और जब तक वली इस के साथ मुत्तसिफ़ नहीं होता वोह वली नहीं बन सकता। और इसी की त़रफ़ सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमाने आ़लीशान में इशारा मिलता है : مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهٗ या'नी जिस ने अपने आप को पहचान लिया बिला शुबा उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को पहचान लिया।

(کشف الخفاء، الحدیث ۲۵۳۰، ج۲، ص۲۳٤)

"مَنْ عَرَفَ نَفْسَهٗ" से इस बात की त़रफ़ इशारा है कि जिस शख़्स ने ग़लबए क़ुदरते इलाही عَزَّوَجَلَّ के सबब अ़दम से वुजूद में आने वाली अपनी ज़ाहिरी व बातिनी क़ुव्वतों को पहचान लिया उस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को पहचान लिया।

और लफ़्ज़े रब का मा'ना है मालिक, तो मा'ना येह हुवे कि उस ने अपने ज़ाहिरी व बातिनी मुआ़मले के मालिक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पहचान लिया। क्यूंकि वोह जानता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही इन क़ुव्वतों को पैदा करता और जिस त़रफ़ चाहता है फेर देता है और वोह येह भी जानता है कि उस की जान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है और वोह जिस त़रह़ चाहता है उस में तसर्रुफ़ फ़रमाता है, जैसा कि

www.dawateislami.net

रसूले पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़सम के लिये येह अल्फ़ाज़ अदा फ़रमाते थे : وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ या'नी क़सम है उस ज़ात की जिस के तसर्रुफ़ में मेरी तमाम ज़ाहिरी व बातिनी कुव्वतें हैं ! और मेरा उस में ज़ाती तौर पर यक़ीनन कोई दख़्ल नहीं। और इसी से नवाफ़िल के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब हासिल करने के मुतअ़ल्लिक़ मरवी इस ह़दीसे पाक का मफ़्हूम समझा जा सकता है कि "मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है और उस की आंखें बन जाता हूं जिस से वोह देखता है.....الٰی اٰخرہ

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق ، باب التواضع ، الحدیث ٦٥٠٢، ص٥٤٥)

पस इसी लिये नवाफ़िल के ज़रीए क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ हासिल करने वाले के लिये येह ज़ाहिर हो जाता है कि उस की तमाम क़ुव्वतों में तसर्रुफ़ करने वाला कोई फ़ाइले ह़क़ीक़ी (या'नी रब عَزَّوَجَلَّ) है। और येह तमाम क़ुव्वतें उस के पास आ़रिज़ी और ज़ाइल होने वाली हैं जैसा कि ह़क़ीक़त भी येही है, जब येह क़ुव्वतें क़ुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ हासिल करने वाले की नज़र से ज़ाइल हो जाती हैं तो इन की जगह अन्वारे इलाही ज़ुहूर पज़ीर होते हैं, और येह उसी सूरत में हो सकता है जब कि उस के लिये इख़्तियारी मौत को तस्लीम किया जाए।

मौत करामात के मनाफ़ी नहीं

जब ह़क़ीक़त येह है तो आ़रिफ़ीन के नज़दीक विलायत मौते इख़्तियारी के इदराक और उस के साथ मुतह़क़्क़िक़ होने से मशरूत़ हुई, और उस वक़्त इन ह़ज़रात के नज़दीक करामाते औलिया के लिये मौत शर्त़ होगी न कि ज़िन्दगी। तो कोई आ़क़िल येह गुमान कैसे कर सकता है कि मौत करामात के मनाफ़ी है ? ह़ालांकि मौत तो करामात के लिये शर्त़ है। फिर जब तक कोई इन्सान अपनी ज़ात में इस मौत का यक़ीन

www.dawateislami.net

न कर ले वोह आ़रिफ़ हो सकता है न वली, बल्कि वोह सिर्फ़ आ़म मोमिन है जो ग़ाफ़िल है और उस पर पर्दे पड़े हैं।

वली और ग़ैरे वली में फ़र्क़

येह सब कुछ इस लिये है क्यूंकि वली अपने तमाम ज़ाहिरी व बातिनी मुआ़मलात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर देता है जैसा कि पीछे हम ने ज़िक्र किया है, जब कि ग़ैरे वली पर उस का नफ़्स ह़ावी होता है, क्यूंकि वोह तमाम मुआ़मलात के ह़क़ीक़ी मालिक से ग़फ़्लत और पर्दे में होता है और वोह ह़क़ीक़ी मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है कि वोही हर मोमिन व काफ़िर, ग़ाफ़िल व होशमन्द के तमाम मुआ़मलात का मालिक है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ (پ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ! क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान, नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं।*

मत़लब येह कि अ़क़्ल वाले ही इस बात को जानते हैं कि मोमिन व काफ़िर दोनों के दरमियान इस ए'तिबार से कोई फ़र्क़ नहीं कि हर एक के तमाम मुआ़मलात का ह़क़ीक़ी मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है।

बा'दे विसाल सुबूते करामात पर दलाइल

दलील नम्बर 1 :

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के कई अक़्वाल मौत के बा'द करामात के सुबूत पर दलालत करते हैं। मसलन :

(1).....फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "क़ब्रों को पामाल करना (चलना, रोंदना वग़ैरा) मकरूह है।"

www.dawateislami.net

(2).....इमाम ख़ब्बाज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى "مُخْتَصَرمُحِيْطِ سَرَخْسِى" में फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने क़ब्र को पामाल करने, इस पर बैठने, सोने, पेशाब, और क़ज़ाए ह़ाजत करने को मकरूह क़रार दिया है।"

(بدائع الصنائع ، کتاب الصلاۃ ، فصل فی سنن الدفن ، ج۲ ، ص٦٥)

क्यूंकि इस में साह़िबे क़ब्र की तौहीन है।

(3).....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ली बिन फ़ारिस किनानी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى अल मा'रूफ़ क़ारियुल हिदाया की तस्नीफ़ "जामेउ़ल फ़तावा" में है कि "बा'ज़ जय्यिद उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से क़ब्रों को पामाल करने के बारे में सुवाल किया गया तो उन्हों ने इस फ़े'ल को मकरूह क़रार दिया।" पूछा गया : "क्या मकरूह से मुराद ख़िलाफ़े औला है ?" फ़रमाया : नहीं, बल्कि क़ब्र पर चलने वाला शख़्स गुनहगार है, क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक मुझे अपना पाउं आग के अंगारे पर रखना इस से ज़ियादा पसन्द है कि किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाउं रखूं।"

(سنن ابن ماجه ، ابواب الجنائز ، باب ماجاء فی النهی عن......الخ، الحدیث١٥٦٧، ص٢٥٧٠، ماخوذاً)

(4).....फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से पूछा गया : "सन्दूक़ और उस के ऊपर की मिट्टी छत की मानिन्द है (या'नी जब छत पर चलना जाइज़ है तो क़ब्र पर क्यूं नाजाइज़ है) ?" इरशाद फ़रमाया : "अगर्चे मय्यित का सन्दूक़ और उस की मिट्टी छत की मानिन्द होती है लेकिन मय्यित का ह़क़ तो अब भी बाक़ी है।"

(الفتاوی الهندیه ، کتاب الکراهیة ، الباب السادس عشر فی زیارہ القبور، ج٥، ص٣٥١، مفهومًا)

लिहाज़ा इस को पामाल करना जाइज़ नहीं।

www.dawateislami.net

(5).....इमाम ख़ुजन्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से सुवाल किया गया अगर किसी शख़्स के वालिदैन की क़ब्रें दीगर मुसलमानों की क़ब्रों के दरमियान हों तो क्या उस शख़्स के लिये जाइज़ है कि वोह दुआ व तस्बीह और क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुवे उन के दरमियान से गुज़रे और अपने वालिदैन की क़ब्रों की ज़ियारत करे ? तो इरशाद फ़रमाया : "अगर मुसलमानों की क़ब्रों पर चले बिग़ैर मुमकिन हो तो इजाज़त है वरना नहीं।" (المرجع السابق)

(6).....फ़त्हुल क़दीर में है कि "क़ब्र पर बैठना और उसे पामाल करना मकरूह है। इसी वज्ह से वोह लोग जिन्हों ने अपने रिश्तेदारों की क़ब्रें बनाईं बा'द में उन के क़रीब दीगर मुसलमानों की क़ब्रें भी बन गईं तो उन का दीगर क़ब्रों पर चलते हुवे अपने क़रीबी रिश्तेदार की क़ब्र पर जाना मकरूह है, और क़ब्र के पास सोना व क़ज़ाए ह़ाजत करना भी मकरूह है, बल्कि क़ज़ाए ह़ाजत ब दरजए औला मकरूह है। और हर वोह काम जो सुन्नत से साबित न हो मकरूह है और सुन्नत से सिर्फ़ खड़े हो कर ज़ियारत करना और दुआ करना साबित है। जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नतुल बक़ीअ़ की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते तो फ़रमाते : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ دَارَ قَوْمٍ مُؤْمِنِینَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِکُمْ لَاحِقُونَ اَسْأَلُ اللّٰهَ لِیْ وَلَکُمُ الْعَافِیَةَ या'नी तुम पर सलामती हो ऐ मोमिनीन के गिरौह ! और बेशक हम भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जल्द तुम से मिलने वाले हैं, और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं।"

(فتح القد یرشرح الهدایه ،کتاب الصلاة ، فصل فی الدفن ، ج۲، ص۱۰۲)

क़ब्रों पर चलना, बैठना वग़ैरा क्यूं मकरूह है ?

फ़िक़्ह की किताबों से येही साबित है कि "क़ब्रों पर चलना और उन पर बैठना मरने के बा'द मुसलमानों की करामत (या'नी इ़ज़्ज़त) की वज्ह से ही मकरूह है, और येह करामत शरअ़ से साबित है, और

www.dawateislami.net

करामत मख़्लूक़ में जारी ख़िलाफ़े आ़दत काम को कहते हैं क्यूंकि आ़दत इस त़रह़ जारी है कि इन्सान के लिये ज़मीन पर चलना, बैठना और मुर्दा जानवरों के आ'ज़ा को पाउं से रोंदना जाइज़ है मगर येह तमाम उमूर अहले ईमान मुर्दों के साथ क़त़्अ़न जाइज़ नहीं । उन (अहले ईमान) के ह़क़ में आ़दत मुख़्तलिफ़ हो गई लिहाज़ा उन के ह़क़ में मज़्कूरा तमाम अफ़्आ़ल मकरूहे तह़रीमी हैं। क्यूंकि मुत़्लक़न मकरूह बोला जाए तो इस से मुराद मकरूहे तह़रीमी होता है और येह हुक्मे कराहत अहले ईमान की मौत के बा'द उन की ता'ज़ीम के लिये दिया गया है, येह तमाम अह़काम तो आ़म मोमिनीन की क़ब्रों के लिये हैं तो जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया हों और उस की बारगाह में मुक़र्रब हों उन की क़ब्रों के क्या अह़काम होंगे ! हमारे इस बयान से वाज़ेह़ हो गया कि शरअ़न मौत के बा'द करामत (या'नी इ़ज़्ज़त व तकरीम) साबित है ।

दलील नम्बर 2 :

मौत के बा'द सुबूते करामात पर येह बात वाज़ेह़ दलील है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियारते क़ुबूर के लिये जन्नतुल बक़ीअ़ तशरीफ़ ले जाते और उन के पास खड़े हो कर उन के लिये दुआ़ फ़रमाते ।

(صحیح مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند دخول القبور والدعاء لاھلھا ، الحدیث ۲۲۵۵، ص ۸۳۰)

क्यूंकि अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस बात को पेशे नज़र न रखते कि मोमिनीन के दफ़्न होने के सबब उन की क़ब्रों के पास ख़ुसूसिय्यते मक़ाम की वज्ह से दुआ़ क़बूल होती है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस जगह येह दुआ़ न फ़रमाते : اَسْاَلُ اللّٰهَ لِیْ وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ या'नी मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं ।

(المرجع السابق ، الحدیث ۲۲۵۷، ص ۸۳۱)

www.dawateislami.net

और मोमिनीन की क़ुबूर कि जिन पर रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूल होता है, की बरकत से दुआ़ का क़बूल होना मोमिनीन के इन्तिक़ाल के बा'द उन की करामात में से है और येह तो आ़म अहले ईमान की क़ब्रों का ह़ाल है तो फिर ख़ास अहले तौह़ीद, कामिल यक़ीन वाले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रबीन की क़ुबूर का आ़लम क्या होगा ! और इस में भी इन्तिक़ाल के बा'द करामत का सुबूत है ।

दलील नम्बर 3 :

शरीअ़त का हुक्म है कि मुसलमान मय्यित को उस के एह़तिराम की वज्ह से ग़ुस्ल देना, कफ़न पहनाना और दफ़्न करना वाजिब है और येह ऐसी करामत (या'नी इ़ज़्ज़त व तकरीम) है जो शरीअ़त ने इन्तिक़ाल के बा'द मोमिनीन के लिये रखी है और येह ख़िलाफ़े आ़दत बात है क्यूंकि बनी आ़दम में से तमाम काफ़िरों और तमाम जानवरों के ह़क़ में उन के मरने के बा'द येह आ़दत जारी है कि उन को ग़ुस्ल नहीं दिया जाता ।

दलील नम्बर 4 :

साह़िबे निहाया ने शर्ह़े हिदाया में फ़रमाया : "मय्यित मौत के सबब नजिस हो जाती है और नजासत को ज़ाइल करने के लिये उस को ग़ुस्ल देना वाजिब है । और येह बात भी आदमी के लिये मौत के सबब करामत (या'नी ए'जाज़ो इकराम) को साबित करती है जब कि बाक़ी तमाम ह़ैवानात में ऐसा नहीं ।"

दलील नम्बर 5 :

जामेउ़ल फ़तावा में है : "मय्यित को इस लिये ग़ुस्ल दिया जाता है कि वोह ख़ून वाले जानवरों की त़रह़ मौत के सबब नजिस हो जाती है अलबत्ता ! मोमिन बा'दे ग़ुस्ल करामत (या'नी इ़ज़्ज़त) की वज्ह से पाक हो जाता है ।" बा'ज़ उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

“चूंकि वोह मोमिन है इस लिये नापाक नहीं होता अलबत्ता ! उसे ग़ुस्ल इस लिये दिया जाता है कि वोह (जोड़ों के ढीले पड़ जाने वग़ैरा अस्बाब की वज्ह से) बे वुज़ू हो जाता है।”

(فتح القدير شرح الهدايه، باب الجنائز، فصل فى الغسل، ج٢، ص١٠٨، مفهومًا)

येह अक़्वाल भी मोमिन के इन्तिक़ाल के बा'द उस की करामत (या'नी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत) के सुबूत पर दलालत करते हैं।

दलील नम्बर 6 :

जामेउ़ल फ़तावा में मज़ीद येह भी है : “जब मय्यित मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम, उ़लमा व सादाते किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की हो तो उस के ऊपर इमारत (या'नी मक़्बरह वग़ैरा) बनाना मकरूह नहीं।” उसी में है कि “मय्यित को ग़ुस्ल देने वाला बा तहारत हो (या'नी उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हो) और जुनुबी और हैज़ वाली का ग़ुस्ल देना मकरूह है।”

(ردالمحتار، باب صلاة الجنائز، مطلب فى حديث......الخ، ج٣، ص١١١۔الفتاوى الهنديه، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون، الفصل الثانى، ج١، ص١٥٩)

येह भी मोमिन के लिये बा'द अज़ वफ़ात करामत का वाज़ेह सुबूत है। बल्कि तमाम करामात मोमिन के लिये उस की मौत के बा'द ही होती हैं, दुन्यावी ज़िन्दगी में उस के लिये ह़क़ीक़तन नहीं बल्कि मजाज़न करामत होती है क्यूंकि वोह दुश्मनाने इलाही عَزَّوَجَلَّ के पड़ोस में ऐसे घर में रहता है जिस में ज़ाते बारी तआ़ला को झुटलाया जाता है, और इस में किसी अ़क़्लमन्द को शक नहीं हो सकता।

बा'दे मौत ईमान क़ाइम रहता है

उ़म्दतुल ए'तिक़ाद में ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल बरकात अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन मह़मूद नसफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : “हर मोमिन इन्तिक़ाल के बा'द भी ह़क़ीक़तन मोमिन ही होता है जैसा कि सोने की

www.dawateislami.net

हालत में मोमिन था। और इसी त़रह़ रुसुल व अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी वफ़ात के बा'द भी ह़क़ीक़तन रुसुल व अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही होते हैं इस लिये कि रूह़ नबुव्वत और ईमान के साथ मुत्तसिफ़ होती है और वोह मौत के सबब तब्दील नहीं होती।" (تفسیر روح البیان، پ۱۷، الانبیاء، تحت الایۃ ۳۵، ج۵، ص۴۷۸)

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) हम कहते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नसफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की मुराद येह है कि मोमिन से मुराद मोमिने कामिल या'नी वली और ईमान से मुराद ईमाने कामिल या'नी विलायत है, और विलायत मौत के बा'द भी बाक़ी रहती है, क्यूंकि येह रूह़ की सिफ़त है और रूह़ मौत के सबब तब्दील नहीं होती। या मोमिन से मुराद मुत़लक़ मोमिन और ईमान से मुराद मुत़लक़ ईमान है, तो इस सूरत में मोमिने कामिल और ईमाने कामिल का हुक्म ब त़रीक़े औला वोही समझा जाएगा जो हम ने बयान किया। ख़ुसूसन जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अहले जन्नत के बारे में इरशाद फ़रमाता है :

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ (پ۲۵، الدخان: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में पहली मौत के सिवा फिर मौत न चखेंगे।*

अब हम अहलुल्लाह के त़रीक़े पर चलते हुवे इस आयते मुबारका के इशारे (या'नी इशारतुन्नस) पर कलाम करते हैं, और उस की इ़बारत (या'नी इ़बारतुन्नस) का इन्कार भी नहीं करते।"(1)

पस हम कहते हैं :

---

1 ...किसी आयते मुबारका की इ़बारत से जो हुक्म समझ आ रहा हो उसे इ़बारतुन्नस और जो हुक्म इशारतन समझ आ रहा हो उसे इशारतुन्नस कहते हैं।" मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया : لِلْفُقَرَاءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ (پ۲۸، الحشر: ۸)

(बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर)

www.dawateislami.net

नफ़्सानी मौत और बदनी मौत

आ़रिफ़ीन की मौत दो त़रह़ की है, एक नफ़्सानी मौत और दूसरी बदनी मौत और उ़रफ़ा के नज़्दीक नफ़्सानी मौत मो'तबर है न कि बदनी । क्यूंकि बदन नफ़्स की रिहाइश गाह है और ए'तिबार साकिन या'नी घर में रहने वाले का होता है न कि घर का और राज़ रहने वालों में होता है न कि रिहाइश गाह में । पस जब आ़रिफ़ीन ज़ाहिरी और बात़िनी त़ौर पर अपने नफ़्स के साथ शरई मुजाहदा करते हैं और इस्तिक़ामत की राह पर चलते रहते हैं तो उन के नुफ़ूस (इख़्तियारी मौत) मर जाते हैं, और मौत का ज़ाइक़ा चख लेने की बिना पर ह़क़ तआ़ला को पा लेते हैं । उन की रूहें दुन्या में नुफ़ूस के वासित़े के बिग़ैर जिस्मों की तदबीर में मसरूफ़ रहती हैं । पस वोह आ़रिफ़ीन सूरते बशरी में फ़िरिश्ते होते हैं, क्यूंकि फ़िरिश्ते भी मह़ज़ अरवाह़ हैं, और आ़रिफ़ीन भी नुफ़ूस की मौत के बा'द सिर्फ़ रूहें ही रह जाते हैं, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना देह़या कल्बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सूरत में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी दिया करते थे ।

जब आ़रिफ़ीन की रूहों का तअ़ल्लुक़ उन के जिस्मों के निज़ाम से मुन्क़त़अ़ हो जाता है उस वक़्त वोह ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام की त़रह़ होते हैं जब वोह सूरते बशरी से

(बक़िय्या ह़ाशिया)..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** (माले ग़नीमत) उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए ।" इस आयते मुबारका में "मुहाजिर फ़ुक़रा के लिये माले ग़नीमत के मुस्तह़िक़ होने का ह़ुक्म" इ़बारतुन्नस है क्यूंकि आयते मुबारका की इ़बारत से येही समझ आ रहा है । और "मुसलमान के माल पर क़ब्ज़ा करने के बा'द काफ़िर की मिल्किय्यत के सुबूत का ह़ुक्म" इशारतुन्नस है क्यूंकि आयते मुबारका से इशारतन येह ह़ुक्म समझ आ रहा है ।

(ماخوذ اَز تلخیصِ اُصول الشاشی، ص٤٦، مطبوعہ مکتبۃ المدینہ)

www.dawateislami.net

जुदा हो कर आ़लमे अरवाह़ की त़रफ़ लौट जाते हैं, उन आ़रिफ़ीन के ह़क़ में उसे मौते ह़क़ीक़ी नहीं बल्कि एक आ़लम से दूसरे आ़लम और एक हैअत से दूसरी हैअत में मुन्तक़िल होना कहते हैं, इसी लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन के ह़क़ में इरशाद फ़रमाया :

لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰی ۚ (پ۲۵،الدخان:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : इस में पहली मौत के सिवा फिर मौत न चखेंगे ।

येह आयते मुबारका का एक इशारा है जिस के मआ़नी व मफ़ाहीम की कोई ह़द नहीं और इस की ह़िक्मतें, असरार और इशारात कभी ख़त्म न होंगे ।

जब ह़क़ीक़ते ह़ाल येही है तो फिर कोई अ़क़्लमन्द येह गुमान कैसे कर सकता है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने इस वली से इन्आ़मो इकराम को मुन्क़त़अ़ फ़रमा देगा जिस की विलायत उस की त़बई मौत के सबब कामिल हो गई और वोह आ़लमे मुजर्रदात या'नी आ़लमे अरवाह़ के साथ मुल्ह़िक़ हो कर फ़िरिश्तों की मइय्यत में पहुंच गया । जैसा कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने विसाले ज़ाहिरी के वक़्त फ़रमा रहे थे : اَللّٰهُمَّ الرَّفِيْقَ الْاَعْلٰى तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे रफ़ीक़े आ'ला से मिला दे ।

(صحیح البخاری،کتاب الدعوات ، باب دعاء النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم :اللّٰھم الرفیق الأعلی، الحدیث ٦٣٤٨، ص ٥٣٤)

बा'दे विसाल करामात का सुबूत

मौत के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों से करामात ज़ाहिर होने से मुतअ़ल्लिक़ ह़िकायात और वाज़ेह़ ख़बरों पर मुश्तमिल मुह़क़्क़िक़ीन अहलुल्लाह की किताबें भरी पड़ी हैं, और मैं ने उन को ऐसे क़ाबिले ए'तिमाद रावियों से लिया है जिन के इन्कार की क़त़अ़न गुन्जाइश नहीं ।

www.dawateislami.net

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की करामत

हमारे पेश्वा, मुज्तहिदे कामिल, आ़लिमे बा अ़मल ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपनी किताब "رُوْحُ الْقُدُسْ فِيْ مناصحة النُّفُس" में ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी इश्बीली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के ह़ालात लिखते हुवे बयान फ़रमाते हैं : "आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का शुमार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों में होता है, एक रात आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के रद में अबुल क़ासिम बिन ह़मदीन की लिखी हुई किताब पढ़ रहे थे, तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बीनाई चली गई, उसी वक़्त आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सजदा किया और गिर्या व ज़ारी की और क़सम खाई कि आइन्दा कभी भी इस किताब को न पढ़ूंगा और इसे अपने आप से दूर रखूंगा, उसी वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बीनाई वापस लौटा दी । येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى की करामत है जो उन के इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के ज़रीए ज़ाहिर हुई ।"

इसी त़रह़ के वाक़िआ़त ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने तज़्किरए मौत में तस्नीफ़ कर्दा अपनी किताब "بشرى الكئيب بلقاء الحبيب" में बयान फ़रमाए हैं ।

फ़िरिश्तों का अहले सुन्नत को क़ब्र में तल्क़ीन करना

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ अबुल क़ासिम लालकाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपनी किताब "अस्सुन्नह" में एक वाक़िआ़ नक़्ल करते हैं कि मुह़म्मद बिन नस्र साइग़ फ़रमाते हैं : "मेरे वालिद साह़िब नमाज़े जनाज़ा पढ़ने

www.dawateislami.net

के बहुत शौक़ीन थे, उन्हों ने मुझ से अपना एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हुवे कहा : बेटा एक दफ़्आ़ मैं किसी जनाज़े में शरीक हुवा, जब लोगों ने मय्यित को क़ब्र में उतार दिया तो मैं ने देखा कि दो शख़्स क़ब्र में उतरे, फिर एक तो बाहर निकल आया मगर दूसरा क़ब्र में ही था कि लोगों ने मिट्टी डाल दी, मैं ने कहा : ऐ लोगो ! क्या मय्यित के साथ ज़िन्दा शख़्स को भी दफ़्न कर दोगे ? लोगों ने कहा : "क़ब्र में तो कोई नहीं है" मैं ने सोचा हो सकता है येह मेरा वह्म हो, मैं दोबारा क़ब्र पर गया और फिर सोचा कि मैं ने ख़ुद अपनी आंखों से दो शख़्सों को क़ब्र में उतरते देखा था जिन में से एक तो निकल आया था मगर दूसरा क़ब्र ही में मौजूद था, लिहाज़ा अब मैं क़ब्र के पास ही मौजूद रहूंगा यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर येह मुआ़मला मुन्कशिफ़ फ़रमा दे। चुनान्चे, मैं ने दस मरतबा सूरए यासीन और दस मरतबा सूरए मुल्क की तिलावत की, फिर बारगाहे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ के लिये हाथ बुलन्द किये और गिड़ गिड़ाते हुवे यूं इल्तिजा की : "ऐ मेरे परवरदगार عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ मैं ने देखा उस का ह़ाल मुझ पर मुन्कशिफ़ फ़रमा, बेशक मैं अपनी समझ और दीन के बारे में ख़ौफ़ज़दा हूं।" तो अचानक क़ब्र शक़ हुई उस में से एक शख़्स निकल कर एक जानिब चल दिया। मैं उस के पीछे दौड़ा और उस से कहा : "ऐ शख़्स तुझे तेरे मा'बूद का वासित़ा ! क्या तू थोड़ी देर नहीं रुक सकता कि मैं तुझ से कुछ पूछ लूं ?" लेकिन उस ने मेरी त़रफ़ तवज्जोह न दी और मुसलसल चलता ही रहा, मैं ने दूसरी और तीसरी मरतबा कहा तो उस ने मेरी त़रफ़ तवज्जोह की और कहा : "क्या तुम नस्र साइग़ ही हो ?" मैं ने कहा : "जी हां मैं ही नस्र साइग़ हूं।" उस ने कहा : "क्या तुम मुझे नहीं पहचानते ?" मैं ने कहा : "नहीं।"

www.dawateislami.net

उस ने कहा : "हम रह़मत के फ़िरिश्तों में से दो फ़िरिश्ते हैं, हमारे ज़िम्मे येह काम है कि अहले सुन्नत में से जब भी किसी का इन्तिक़ाल होता है और उसे क़ब्र में रखा जाता है तो हम उस की क़ब्र में उतर कर उसे हुज्जत (या'नी सुवालाते क़ब्र के जवाबात) की तल्क़ीन करते हैं।" इतना कह कर वोह फ़िरिश्ता ग़ाइब हो गया।"

(شرح اصول اعتقاد اهل السنة والجماعة، الرقم ٢١٤٥، ج٢، ص٩٦٩)

क़ब्रों के मुख़्तलिफ़ अह़वाल

नर्म व मुलाइम रेशमी लिबास वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुस्सआ़दात अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي "रौज़ुर्रयाह़ीन" में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक वली का वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हैं कि "उन्हों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे क़ब्र वालों के मरातिब दिखा।" फ़रमाते हैं : एक रात मैं ने ख़्वाब में मुख़्तलिफ़ क़ब्रों को देखा कि शक़ हो चुकी हैं, और क़ब्र वालों के मुख़्तलिफ़ अह़वाल हैं कोई मज़े से निहायत नफ़ीस व रेशमी बिस्तर पर, कोई रेशम के नर्म व मुलाइम उ़म्दा क़ीमती बिस्तर पर, कोई ख़ुश्बूदार बिस्तर पर मह़वे इस्तिराह़त है तो कोई शाही मस्नद पर और कोई रो रहा है तो कोई ख़ुशी से मुस्कुरा रहा है।"

मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अगर तू चाहता तो इन सब को यक्सां ए'ज़ाज़ो इकराम से नवाज़ देता, तो अचानक क़ब्र वालों में से किसी ने पुकारा : ऐ फ़ुलां ! येह सब कुछ आ'माल का बदला है, जो निहायत रेशमी नर्म बिस्तर वाले हैं येह ह़ज़रात अच्छे अख़्लाक़ के मालिक हैं और जो रेशम के उ़म्दा व क़ीमती बिस्तर वाले हैं वोह शुहदा हैं, और जो ख़ुश्बूदार बिस्तरों वाले हैं वोह रोज़ादार हैं, जो शाही मस्नदों वाले हैं वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के

www.dawateislami.net

लिये बाहम महब्बत रखने वाले हैं और जो रो रहे हैं वोह गुनाहगार हैं और जो मुस्कुरा रहे हैं वोह तौबा वाले हैं।"

(روض الرياحين، الحكاية الحادية والستون بعد المئة،ص١٧٩)

मुर्दों को अच्छी या बुरी हालत में देखना

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुस्सआ़दात अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي मज़ीद फ़रमाते हैं : "मुर्दों को अच्छी या बुरी हालत में देखना येह कश्फ़ की एक क़िस्म है, जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी ख़ुश ख़बरी, नसीहत, या मय्यित की बेहतरी, किसी ख़ैर के पहुंचने, या अदाए क़र्ज़ वग़ैरा के सबब ज़ाहिर फ़रमाता है। फिर येह कश्फ़ आ़म तौ़र पर सोने की हालत में होता है, अलबत्ता ! कभी बेदारी की हालत में भी होता है और येह उन औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى की करामात में से है जो आ'ला मक़ामात और अह़वाल के मालिक हैं।"

(روض الرياحين، الحكاية الحادية والستون بعد المئة، ص١٨١)

औलियाए किराम का अहले क़ुबूर से बातें करना

"किफ़ायतुल मो'तक़द" में फ़रमाया कि हमें बा'ज़ दोस्तों ने येह भी ख़बर दी कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ नेक बन्दे ऐसे भी हैं जो बा'ज़ औक़ात अपने वालिद के मज़ार पर आते हैं और उन से गुफ़्तगू करते हैं।" (شرح الصدور، باب زيارة القبور...الخ، ص٢٠٩)

औलियाए किराम का अपनी क़ब्रों में अज़ान का जवाब देना

हज़रते सय्यिदुना इमाम ला लकाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه किताब "अस्सुन्नह" में नक़्ल करते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना यह़या बिन मुईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने फ़रमाया : मुझे एक गोरकन ने बताया कि मैं ने उस

www.dawateislami.net

क़ब्रिस्तान में निहायत ही अ़जीबो ग़रीब बात देखी कि एक दिन जब मुअज़्ज़िन अज़ान दे रहा था तो एक क़ब्र वाला उस का जवाब दे रहा था।''

(شرح اصول اعتقاد اهل السنة والجماعة ، الرقم ۲۱۵۳ ، ج۲ ، ص۹۷۳)

औलियाए किराम का अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ना

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى **''ह़िल्यतुल औलिया व त़बक़ातुल अस्फ़िया''** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! मैं ने और ह़ज़रते सय्यिदुना हुमैद त़वील رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى को लह़द में उतारा जब हम ने क़ब्र की ईंटें दुरुस्त कीं तो एक ईंट गिर गई, मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं। और वोह दुन्या में यूं दुआ़ किया करते थे :

اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ اَعْطَيْتَ اَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ الصَّلَاةَ فِىْ قَبْرِهٖ فَاَعْطِنِيْهَا

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को उस की क़ब्र में नमाज़ अदा करने का शरफ़ बख़्शा है तो मुझे भी येह शरफ़ ज़रूर अ़त़ा फ़रमाना। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ने येह गवारा न किया कि वोह उन की इस दुआ़ को रद फ़रमाए।''

(بشرى الكئيب مع شرح الصدور، ذكر المؤمن فى قبره ، ص ۳۵۰ـحلية الاولياء ، ثابت البنانى، الرقم ۲۵۶۸، ج۲،ص ۳۶۲،عن شيبان بن جسرعن ابيه)

www.dawateislami.net

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का अपनी क़ब्रों में तिलावत फ़रमाना

क़ब्र में सूरए मुल्क की तिलावत

(1)....हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बे ख़याली में एक क़ब्र पर ख़ैमा नस्ब कर दिया, उन्हें मा'लूम न था कि येह क़ब्र है, उन्हों ने देखा कि उस क़ब्र में एक शख़्स सूरए मुल्क की तिलावत कर रहा है यहां तक कि उस ने सूरत की तिलावत मुकम्मल कर ली । वोह सहाबी हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवे और सारा वाक़िआ़ बयान किया, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह सूरत रोकने वाली और नजात देने वाली है जो अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात देगी ।"

(جامع الترمذی، ابواب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورة الملك، الحديث ٢٨٩٠، ص١٩٤٢)

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی "**किताबुल इस्फ़ाह़**" में फ़रमाते हैं : मज़्कूरए बाला वाक़िए में सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से इस बात की तस्दीक़ होती है कि "मरने वाला अपनी क़ब्र में तिलावत भी करता है ।" क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस बात की ख़बर दी और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तस्दीक़ फ़रमाई ।"

(بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکر قراءة الموتی فی قبورهم، ص ٣٥١)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़ब्र में तिलावत करना

(2)....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं मक़ामे "ग़ाबा" में अपना माल लेने गया, वहां रात हो गई, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र के पास ठहर गया। मैं ने उन की क़ब्र से इतनी शीरीं क़िराअत सुनी कि इस से पहले ऐसी क़िराअत न सुनी थी। जब मैं सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो मैं ने सारा मुआ़मला अ़र्ज़ किया, शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या तू नहीं जानता कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन बन्दों में से है जिन की रूह़ों को क़ब्ज़ फ़रमा कर उस ने ज़बर जद व याक़ूत की क़िन्दीलों में रख दिया और फिर उन क़िन्दीलों को जन्नत के दरमियान मुअ़ल्लक़ कर दिया। जब भी रात आती है तो उन की रूहें उन की त़रफ़ लौटा दी जाती हैं और वोह पूरी रात यहीं रहती हैं और जब फ़ज्र तुलूअ़ होती है तो उन्हें वापस उस जगह लौटा दिया जाता है जहां उन को रखा गया है।" (المرجع السابق)

सय्यिदुना साबित बुनानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ब्र में तिलावत करना

(3)....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नुऐम अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی "**ह़िल्यतुल औलिया**" में नक़्ल करते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सिम्मह मुह़ल्लबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सह़री के वक़्त क़ल्ए़ के पास से गुज़रने वालों ने मुझे बताया कि जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो हमें क़ुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ आती है।"

(حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲۵۸۳، ج۲، ص۳۶۵، بتغیرٍ۔شرح الصدور، ص۱۸۸، بتغیرٍ)

www.dawateislami.net

क़ब्र में तिलावत

(4)....हज़रते सय्यिदुना सलमह बिन शुऐब رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने एक परहेज़गार गोरकन हज़रते सय्यिदुना अबू हम्माद علیہ رَحْمَۃُ اللہِ الجَوَاد को फ़रमाते सुना : "मैं जुमुअ़तुल मुबारक के दिन दोपहर के वक़्त क़ब्रिस्तान में गया, जिस क़ब्र के क़रीब से गुज़रता उस से कुरआने पाक की तिलावत सुनाई देती ।"

(شرح الصدور، باب احوال الموتٰی فی قبورھم......الخ ، ص۱۸۸)

बल्ख़ी बुज़ुर्ग का क़ब्र में तिलावत करना

(5)....हज़रते सय्यिदुना आ़सिम सक़ती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "हम ने बल्ख़ (शहर) में एक क़ब्र खोदी तो वोह दूसरी क़ब्र में खुल गई, उस में सब्ज़ चादर ओढ़े क़िब्ले की त़रफ़ मुंह किये एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ फ़रमा थे और उन के इर्द गिर्द सब्ज़ा ही सब्ज़ा था और आग़ोश में कुरआने पाक रखा था जिस की वोह तिलावत फ़रमा रहे थे ।" (بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکرقراءۃ الموتی فی قبورھم ، ص۳۵۱)

क़ब्र में तिलावत करने वाला नौजवान

(6)....हज़रते सय्यिदुना इब्ने मन्दह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि इन्तिहाई मुत्तक़ी गोरकन हज़रते सय्यिदुना अबू नस्र नैशापुरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने एक क़ब्र खोदी तो उस में एक और क़ब्र खुल गई, मैं ने उस में देखा कि ख़ुश्बू से मुअ़त्तर एक ख़ूब सूरत नौजवान बेहतरीन लिबास पहने चार ज़ानू बैठा है और उस की आग़ोश में निहायत ही ख़ुश ख़त़, सब्ज़ रंग से लिखा हुवा कुरआने पाक मौजूद है, मैं ने इस से पहले कभी ऐसा कुरआने पाक न देखा था, और वोह उस

www.dawateislami.net

की तिलावत कर रहा था उस नौजवान ने मेरी त़रफ़ देख कर पूछा : क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ? मैं ने कहा : नहीं, उस ने कहा : मेरी क़ब्र बन्द कर दो । तो मैं ने उस की क़ब्र बन्द कर दी ।''

(بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکرقراءۃالموتی فی قبورھم ، ص ۳۵۱)

शहीद का अपनी क़ब्र में क़ुरआने पाक पढ़ना

(7)...ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैली رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ''दलाइलुन्नुबुव्वह'' में बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से नक़्ल फ़रमाते हैं कि ''उन्हों ने एक जगह क़ब्र खोदी, उस में एक त़रफ़ खिड़की खुल गई, क्या देखते हैं कि एक शख़्स तख़्त पर बैठा है और उस के सामने क़ुरआने पाक रखा है जिस की वोह तिलावत कर रहा है, और सामने ही एक सब्ज़ बाग़ है'' येह वाक़िआ़ उहुद में पेश आया और ऐसा मा'लूम होता था जैसे वोह शहीद हो क्यूंकि उस के चेहरे पर एक त़रफ़ ज़ख़्म दिखाई दे रहा था ।'' इस वाक़िए़ को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़य्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان ने भी अपनी तफ़्सीर में बयान फ़रमाया ।''

(بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکرقراءۃالموتی فی قبورھم ، ص ۳۵۲)

क़ब्र में सोने का क़ुरआने पाक पढ़ना

(8)...ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुस्सआ़दात अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ''**रौज़ुर्रयाह़ीन**'' में बा'ज़ सालिह़ीन से नक़्ल करते हैं, फ़रमाया : मैं ने एक आ़बिद शख़्स के लिये क़ब्र खोद कर उस में लह़द बनाई, मैं लह़द को बराबर कर रहा था कि साथ वाली क़ब्र की एक ईंट गिर गई, मैं ने उस क़ब्र में देखा तो सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस में तशरीफ़ फ़रमा हैं, और उन के सामने सोने से लिखा हुवा क़ुरआने पाक रखा है जिस की वोह तिलावत फ़रमा रहे हैं, उन्हों ने मेरी त़रफ़ सर उठा कर देखा और

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ?" मैं ने कहा : नहीं । तो फ़रमाने लगे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमाए, ईंट को अपनी जगह पर रख दें ।" पस मैं ने ईंट को उस की जगह पर रख दिया ।"

(بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکرقراءۃالموتی فی قبورھم ، ص۳۵۲)

क़ब्र में तख़्त पर बैठ कर क़ुरआने पाक पढ़ना

(9)....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मज़ीद फ़रमाते हैं : "हमें एक मो'तबर क़ब्र खोदने वाले ने बताया कि उस ने एक क़ब्र खोदी, उस में एक शख़्स तख़्त पर बैठा हुवा नज़र आया जो हाथ में क़ुरआने पाक लिये तिलावत कर रहा था और उस के नीचे एक नह्र बेह रही थी, येह मन्ज़र देख कर उस पर बेहोशी त़ारी होने लगी , वोह जूं तूं कर के क़ब्र से निकला और किसी को पता न चल सका कि उसे क्या हुवा है, फिर तीसरे दिन उसे होश आया ।"

(المرجع السابق۔ روض الریاحین ، الحکایۃ الثانیۃوالستون بعد المئۃ،ص۱۸۰)

कफ़न की वापसी

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मन्सूर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना उहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साह़िब ज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना उ़दैसह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं, वोह फ़रमाती हैं : "हमारे वालिदे मोह़तरम ने हमें वसिय्यत की थी कि मेरे मरने के बा'द मुझे एक क़मीस में कफ़नाना, हम ने आप की वसिय्यत पर अ़मल करते हुवे ऐसा ही किया, दूसरी सुब्ह़ हम ने देखा कि जिस क़मीस में हम ने उन्हें दफ़नाया था वोह हमारे पास ही थी ।"

(شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ و الجماعۃ ، الرقم ۱۱٤، ج۲،ص۱۳٦٤، بتغیرٍقلیلٍ)

www.dawateislami.net

मुर्दों को अश्या पहुंचना

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه "किताबुल मनामात" में हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मुर्सल रिवायत बयान करते हैं कि "एक शख़्स की ज़ौजा का इन्तिक़ाल हो गया, रात को उस ने ख़्वाब में चन्द औ़रतों को देखा जिन में उस की ज़ौजा न थी, उस ने उन औ़रतों से अपनी ज़ौजा के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने कहा : "तुम लोगों ने उसे कम क़ीमत का कफ़न दिया था इस लिये उसे हमारे साथ निकलते हुवे शर्म आती है।" वोह शख़्स सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और सारा माजरा बयान किया, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या कोई ऐसा शख़्स है जो मरने के क़रीब हो ?" फिर वोह एक ऐसे अन्सारी के पास गया जो क़रीबे मर्ग था, और उसे सूरते हाल से आगाह किया तो उस ने कहा अगर मुर्दों को कोई चीज़ पहुंचाई जा सकती है तो मैं पहुंचा दूंगा, जब उस अन्सारी का इन्तिक़ाल हो गया तो उस शख़्स ने ज़ा'फ़रान से रंगे हुवे दो कपड़े उस अन्सारी के कफ़न में ला कर रख दिये। जब रात हुई तो उसे ख़्वाब में वोही औ़रतें नज़र आईं और इस दफ़्आ़ उन के साथ उस की ज़ौजा भी थी और उस ने ज़र्द रंग के वोही दो कपड़े पहन रखे थे।"

(الموسوعة للامام ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، الحدیث ۱۶۱، ج۳، ص۹۵)

इन्तिक़ाल के बा'द औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का मदद फ़रमाना

हज़रते सय्यिदुना शैख़ शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی अपनी किताब "**तबक़ातुल अख़्यार**" में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बदवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के हालाते ज़िन्दगी लिखते हुवे बयान फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

"ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दीरीनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बदवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाता तो फ़रमाते : "वोह ऐसा समन्दर हैं जिस की कोई ह़द नहीं, वोह फ़िरंग (या'नी यूरोप) से क़ैदियों को लाते और डाकूओं के ख़िलाफ़ लोगों की मदद फ़रमाते, डाकूओं और मदद मांगने वालों के दरमियान उन के ह़ाइल होने के वाक़िआ़त इस क़दर हैं कि कई दफ़्तर भी उन का इह़ाता नहीं कर सकते।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शा'रानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : "मैं ने ख़ुद अपनी आंखों से 945 हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ़ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मिनारे पर एक क़ैदी को देखा जो बेड़ियों में जकड़ा और घबराया हुवा था, मैं ने इस ह़ालत के मुतअ़ल्लिक़ उस से पूछा तो उस ने बताया : "मैं फ़िरंगियों के अ़लाक़े में क़ैद था, रात के आख़िरी ह़िस्से में, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد को देखा, मैं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अचानक मेरे सामने तशरीफ़ ले आए और मुझे झपट कर पकड़ लिया और हवा में उड़ने लगे और मुझे यहां ला कर छोड़ दिया।" ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد के तेज़ी से झपटने के सबब दो दिन तक उस का सर चकराता रहा।

(الطبقات الکبریٰ للامام الشعرانی ، الرقم ۲۸۷، الجزء الاول ، ص ۲٦۰)

औलिया की तौहीन शैत़ानी काम है

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) "येह तमाम वाक़िआ़त मौत के बा'द करामात के सुबूत पर सराह़तन दलालत करते हैं, और फ़ी नफ़्सिही येह बात ह़क़ है इस में वोही शक करेगा जिस का ईमान नाक़िस हो, उस की बसीरत ख़त्म हो चुकी हो, फ़ज़्ले इलाही عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

के दरवाज़े से धुतकार दिया गया हो, बन्दगाने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से तअ़स्सुब रखता हो, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे अपने वलियों की मुख़ालफ़त के गढ़े में डाल दिया हो, उसे ज़लीलो ख़्वार कर दिया हो, और उस पर ग़ज़ब फ़रमाया हो। पस ऐसे शख़्स पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शैतान को मुसल्लत कर देता है, वोह उस से खेलता है और उस के दिल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारों का बुग़्ज़ डालता है, और उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों, उन की करामात और उन के मज़ारात की तौहीन पर उक्साता है, हालांकि जिस ने इल्मे कलाम और इल्मे तौहीद पढ़ा उस के लिये येह बात अज़हर मिनश्शम्स (या'नी सूरज से भी ज़ियादा ज़ाहिर) है कि रूहें अपने महल में होने के बा वुजूद मौत के बा'द भी जिस्मों के साथ वैसे ही मुत्तसिल रहती हैं जिस तरह शुआएं सूरज में होने के बा वुजूद ज़मीन के साथ मुत्तसिल होती हैं, तो यक़ीनन मोमिनीन की क़ब्रों का एहतिराम वाजिब है।"

रूहों का अपने जिस्मों की तरफ़ लौटना

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अपनी किताब "بشرى الكئيب بلقاء الحبيب" में बयान फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुस्सआदात अ़ब्दुल्लाह बिन अस्अ़द याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : "अहले सुन्नत का मज़हब येह है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहता है तो मरने वालों की रूहें बा'ज़ औक़ात "इल्लिय्यीन" या "सिज्जीन"[1] से क़ब्रों में उन के जिस्मों की तरफ़ लौटाई जाती हैं ख़ुसूसन जुमुअ़तुल मुबारक की रात, और वोह मिल बैठ कर गुफ़्तगू भी करती हैं और नेक रूहों को इन्आ़मो इकराम से नवाज़ा जाता है जब कि बदकार रूहों को अ़ज़ाब दिया जाता है।" मज़ीद फ़रमाते

---

1 ....."**इल्लिय्यीन**" नेक रूहों का ठिकाना है और "**सिज्जीन**" बदकार रूहों का ठिकाना हैं। इल्मिय्या

www.dawateislami.net

हैं : "**इल्लिय्यीन**" या "**सिज्जीन**" में इन्आ़मो इकराम या अ़ज़ाब देने का तअ़ल्लुक़ जिस्म के साथ नहीं बल्कि रूह़ के साथ होता है जब कि क़ब्र में इस का तअ़ल्लुक़ जिस्म और रूह़ दोनों के साथ होता है।"

(بشری الکئیب مع شرح الصدور، ذکر تزاورالموتی فی قبورھم، ص۳۵۷۔ روض الریاحین،الحکایۃ الثامنۃ والستون بعد المئۃ، ص۱۸۳)

"मौत के बा'द भी रूहें क़ब्रों में अपने जिस्मों के साथ मुत्तसिल रहती हैं।" इस बात पर वोह कलाम दलालत करता है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नसफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی ने अपनी किताब "बह़रुल कलाम" के बाब "अ़ज़ाबुल क़ब्र" में नक़्ल फ़रमाया। चुनान्चे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं अगर येह कहा जाए कि क़ब्र में गोश्त को कैसे तक्लीफ़ होती है ह़ालांकि उस में तो रूह़ ही नहीं होती ? तो हम कहेंगे कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येही बात पूछी गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे दांतों में कैसे तक्लीफ़ होती है ? ह़ालांकि उस में भी रूह़ नहीं होती !" पता चला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब, हम गुनहगारों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ त़ौर पर बता दिया कि "जिस त़रह़ दांत में रूह़ न होने के बा वुजूद सिर्फ़ गोश्त के साथ मुत्तसिल होने की वज्ह से तक्लीफ़ होती है, इसी त़रह़ मौत के बा'द जब रूह़ गोश्त के साथ मुत्तसिल होती है तो इस में भी तक्लीफ़ होती है। (بحرالکلام، قولہ فی عذاب القبر)

और येह इस बात की दलील है कि मौत के बा'द क़ब्रों में रूहों का अपने जिस्मों के साथ तअ़ल्लुक़ होता है अगर्चे उन के जिस्म बोसीदा और मिट्टी हो गए हों, इसी वज्ह से शरीअ़त ने उन की क़ब्रों के एह़तिराम का हुक्म दिया जैसा कि पीछे हम ने ज़िक्र किया। फिर

www.dawateislami.net

मोमिनों के लिये उन की क़ब्रों का एह़तिराम करना, ता'ज़ीम करना, ज़ियारत करना और उन से बरकत ह़ासिल करना कैसे नाजाइज़ हो सकता है ? ह़ालांकि तमाम मोमिनीन जानते हैं कि मिट्टी होने के बा वुजूद कामिल रूह़ों का तअ़ल्लुक़ त़य्यिबो त़ाहिर जिस्मों के साथ होता है जैसा कि अह़ादीसे नबविय्या عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से साबित है ।

एक अहमक़ाना अ़क़ीदा और इस का रद्द

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मेरे नज़दीक वोह शख़्स सरासर जाहिल है जो बा'ज़ गुमराह फ़िर्क़ों की त़रह़ येह अ़क़ीदा रखता है कि "रूह़ें आ़रिज़ी हैं और मौत के सबब वोह ऐसे ज़ाइल हो जाती हैं जैसे मुर्दे से ह़रकात व सकनात ज़ाइल हो जाती हैं ।" और वोह गुमराह फ़िर्क़े येह समझते हैं कि जब औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इन्तिक़ाल कर जाते हैं तो वोह मिट्टी हो जाते हैं और ज़मीन की मिट्टी के साथ मिल कर उन की रूह़ें भी ख़त्म हो जाती है लिहाज़ा उन की क़ब्रों की कोई ता'ज़ीम नहीं, इसी वज्ह से येह लोग उन की तौहीन व तह़क़ीर करते हैं और उन की ज़ियारत, उन से बरकत ह़ासिल करने वालों पर ए'तिराज़ करते हैं ।

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :) एक दिन मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अर्सलान दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये जा रहा था तो मैं ने ख़ुद अपने कानों से एक शख़्स को येह कहते सुना : "तुम उन मिट्टी के ढेरों पर क्यूं जाते हो ? येह तो सरासर बे वुक़ूफ़ी है ।" उस की बात सुन कर मुझे इन्तिहाई तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने दिल में कहा : "कोई मुसलमान ऐसी बात नहीं कह सकता ।

وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

www.dawateislami.net

क़ब्र जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गढ़ा

अह़ादीसे करीमा में आया है कि "बेशक क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।"

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفتن، باب العلامات بین یدی الساعۃ وذکر الدجال، تحت الحدیث ۵٤۷۲، ج۹، ص ۳۷۵۔المعجم الاوسط، الحدیث ۸٦۱۳، ج٦، ص ۲۳۲)

इस से मुराद येही है कि "मरने वालों की रूहों को या तो इन्आमो इकराम से नवाज़ा जाता है या अ़ज़ाब दिया जाता है।" और येह इन्आमो इकराम या अ़ज़ाब का सिलसिला इसी सूरत में है कि रूहें अपने उन अज्साम के साथ मुत्तसिल हों जो दुन्या में न रहे, और वोह तमाम मोमिन होने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की ताअ़त करने के सबब या तो पाकीज़ा थे या फिर काफ़िर होने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की ना फ़रमानी करने के सबब ख़बीस हो गए, तो उस वक़्त मोमिनीन की क़ब्रें वैसे ही मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़तरम और मुस्तह़िक़े ता'ज़ीम व तौक़ीर हैं जैसे वोह ख़ुद ह़याते ज़ाहिरी में मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम थे। फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस बात की तसरीह़ की है कि "जो शख़्स किसी आ़लिम को ह़क़ीर जाने या उस से बुग़्ज़ रखे तो उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होने का अन्देशा है।"(1) (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हर

1......दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 186 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" हिस्सा 9, सफ़ह़ा 183 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "इल्मे दीन और उ़लमाए दीन की तौहीन बे सबब या'नी मह़ज़ इस वज्ह से कि आ़लिमे इल्मे दीन है कुफ़्र है, यूं ही आ़लिमे दीन की नक़्ल करना मसलन किसी को मिम्बर वग़ैरा किसी ऊंची जगह पर बिठाएं और उस से मसाइल बत़ौरे इस्तिह्ज़ा दरयाफ़्त करें फिर उसे तक्या वग़ैरा से मारें और मज़ाक़ बनाएं येह कुफ़्र है।"

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲، ص ۲۷۰)

मज़ीद फ़रमाते हैं : "यूं ही शरअ़ की तौहीन करना मसलन कहे : मैं शरअ़ वरअ़ नहीं जानता या आ़लिमे दीन मोह़तात़ का फ़तवा पेश किया गया उस ने कहा : मैं फ़तवा नहीं मानता या फ़तवा को ज़मीन पर पटक (या'नी फेंक) दिया।" (येह भी कुफ़्र है)

www.dawateislami.net

वली आ़लिम ज़रूर होता है लिहाज़ा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से बुग़्ज़ रखने वाले का ख़ातिमा भी कुफ़्र पर होने का ख़ौफ़ है ।)

ज़िन्दा और मुर्दा ता'ज़ीम में बराबर हैं

ता'ज़ीम व तौक़ीर के ए'तिबार से ज़िन्दों और मुर्दों के माबैन कोई फ़र्क़ नहीं, क्यूंकि ज़िन्दा और मुर्दा सब के सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ हैं और उन में कोई भी किसी शै में क़त़्अन मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी नहीं, क्यूंकि मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी तो हर ह़ाल में सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है, और ज़िन्दा व मुर्दा मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी न होने में यक़ीनन बराबर हैं, लेकिन एह़तिराम सब के ह़क़ में वाजिब है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآىِٕرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿۳۲﴾

(پ۱۷، الحج: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो* **अल्लाह** *के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़्गारी से है ।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियां वोह चीज़ें है जिन के सबब मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल होती है जैसा कि उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام और नेक परहेज़्गार लोग चाहे वोह ज़िन्दा हों या वफ़ात पा चुके हों ।

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की क़ुबूर पर गुम्बद बनाना

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की क़ब्रों पर गुम्बद बनाना, और उन के लिये आ'ला क़िस्म की लकड़ी के ताबूत बनाना ताकि अ़वामुन्नास उन को बे अदबी की निगाह से न देखें येह भी उन की ता'ज़ीम ही है । अगर्चे येह बिदअ़त है लेकिन बिदअ़ते ह़सना या'नी अच्छी बिदअ़त है । जैसा कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "उ़लमाए किराम

www.dawateislami.net

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के लिये बड़े बड़े इमामे, खुले खुले कपड़े पहनना जाइज़ है ताकि आम लोग इन को हक़ीर न समझें और इन की ता'ज़ीम करें।" अगर्चे येह ऐसी बिदअ़त है जिस पर हमारे अस्लाफ़ का अ़मल न था।

क़ब्रों पर कुब्बा बनाना मकरूह नहीं

जामेउ़ल फ़तावा में क़ब्र पर कुब्बा (या'नी गुम्बद वग़ैरा) बनाने के बारे में एक क़ौल येह है : "मय्यित मशाइख़, उ़लमा और सादाते किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की हो तो उन की ता'ज़ीम के लिये कुब्बा बनाना मकरूह नहीं।" (ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، بَابُ صَلَاةِ الْجِنَازَةِ ،مطلب فی دفن المیت ، ج۳، ص۱۷۰)

क़ब्र के लिये पक्की ईंटों का इस्ति'माल कैसा ?

"मुज़्मरात" में है : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र मुह़म्मद बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "हमारे हां क़ब्रों के लिये पक्की ईंटें और रफ़रफ़ लकड़ी इस्ति'माल करने में कोई ह़रज नहीं।"

(المبسوط للسرخسی، کتاب الصلاۃ ، باب غسل المیت ،ج۱، الجزء۲، ص۹۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम तुमुरताशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : "क़ब्र के लिये पक्की ईंटों के इस्ति'माल में इख़्तिलाफ़ उस वक़्त है जब कि मय्यित के इर्द गिर्द लगाई जाएं, और अगर क़ब्र के ऊपर हों तो जाइज़ है क्यूंकि इस त़रह़ क़ब्र की दरिन्दों से हिफ़ाज़त होती है।" जैसा कि कफ़न को चोरी से बचाने के लिये क़ब्र को कच्ची ईंटों के साथ कोहान नुमा[1]

---

1 .....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 846 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़ब्र चौखूंटी न बनाएं बल्कि उस में ढाल रखें जैसे ऊंट का कोहान और उस पर पानी छिड़कने में ह़रज नहीं बल्कि बेहतर है और क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या कुछ ख़फ़ीफ़ ज़ियादा।"

(الفتاوی الھندیہ ، کتاب الصلاۃ ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس ،ج ۱، ص۱۶۶۔ ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، باب الصلاۃ الجنائز ، مطلب فی دفن المیت ، ج۳ ، ص۱۶۸)

www.dawateislami.net

बनाने का रवाज है और अ़वामो ख़वास में इसे बहुत अच्छा समझा जाता है ।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، بَابُ صَلَاۃِ الْجِنَازَۃِ ، مطلب فی دفن المیّت ، ج۳، ص۱۶۷تا۱۷۰)

''**तन्वीरुल अब्सार**'' में है : ''क़ब्र पर कुब्बा बनाने में कोई ह़रज नहीं और येही सह़ीह़ है ।''

(تنویرالابصارمع رد المحتار، کتاب الصلاۃ ، بَابُ صَلَاۃِ الْجِنَازَۃِ ، مطلب فی دفن المیّت ، ج۳ ، ص۱۶۹)

क़ब्र पर लिखने और पथ्थर रखने का हुक्म

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जै़लई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ''**शर्ह़े कन्ज़ुद्दक़ाइक़**'' में फ़रमाते हैं : ''क़ब्र के ऊपर बत़ौरे निशानी कुछ लिखने या पथ्थर रखने में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र पर बत़ौरे निशानी एक पथ्थर रखा था ।'' (تبیین الحقائق، کتاب الصلاۃ ، باب الجنائز، ج۱، ص۵۸۸)

मज़ाराते पर चादर वग़ैरा चढ़ाने का हुक्म

फ़ुक़हाए किराम ने सालिह़ीन और औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की क़ब्रों पर चादरें चढ़ाने, इमामे और कपड़े वग़ैरा रखने को मकरूह कहा है, जैसा कि ''फ़तावा हुज्जत'' में है : ''क़ब्रों पर चादरें चढ़ाना मकरूह है ।''

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، بَابُ صَلَاۃِ الْجِنَازَۃِ ، مطلب فی دفن المیت ، ج۳ ، ص۱۷۱)

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :) लेकिन हम कहते हैं : ''अगर चादरें चढ़ाने और इमामे व कपड़े वग़ैरा रखने का मक़्सद येह है कि आ़म लोगों की नज़र में उन की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत में ज़ियादती हो, ताकि लोग साह़िबे मज़ार से नफ़रत न

www.dawateislami.net

करें, और ग़ाफ़िल ज़ाइरीन के दिलों में उन का अदबो एह़तिराम पैदा हो, क्यूंकि उन के दिल मज़ारात में मौजूद औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام (का मक़ाम न जानने के सबब उन) की बारगाह में ह़ाज़िरी देने और उन का अदबो एह़तिराम करने से ख़ाली होते हैं, जैसा कि हम पीछे बयान कर चुके कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की मुक़द्दस अरवाह़ उन के मज़ारात के पास जल्वा अफ़रोज़ होती हैं। लिहाज़ा चादरें चढ़ाना और इमामे वग़ैरा रखना बिल्कुल जाइज़ है और इस से मन्अ़ नहीं करना चाहिये,[1] क्यूंकि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर एक के लिये इसी का बदला है जो उस ने निय्यत की, अगर्चे येह ऐसी बिदअ़त है जिस पर हमारे अस्लाफ़ का अ़मल न था।" लेकिन येह बात वैसे ही जाइज़ है जैसे फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام "**किताबुल ह़ज**" में फ़रमाते हैं : "ह़ज करने वाला त़वाफ़े वदाअ़ के बा'द उलटे पाउं चलता हुवा मस्जिदे ह़राम से निकले क्यूंकि येह बैतुल्लाह शरीफ़ زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا की ता'ज़ीमो तकरीम है। और "मिन्हजुस्सालिक" में है : "त़वाफ़े वदाअ़ के बा'द लोगों का उल्टे पाउं वापस लौटना न तो सुन्नत है

---

1 .....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "और जब चादर मौजूद हो और वोह हुनूज़ (अभी) पुरानी या ख़राब न हुई कि बदलने की ह़ाजत हो तो बेकार चादर चढ़ाना फ़ुज़ूल है। बल्कि जो दाम इस में सर्फ़ करें वलिय्युल्लाह की रूहे मुबारक को ईसाले सवाब के लिये मोह़ताज को दें। हां जहां मा'मूल हो कि चढ़ाई हुई चादर जब ह़ाजत से ज़ाइद हो, ख़ुद्दाम, मसाकीन ह़ाजत मन्द ले लेते हैं और इस निय्यत से डाले तो मुज़ाइक़ा नहीं कि येह भी तसद्दुक़ हो गया।"

(अह़कामे शरीअ़त, ह़िस्सा अव्वल, स. 89)

www.dawateislami.net

और न ही इस बारे में कोई वाज़ेह् ह़दीस है । इस के बा वुजूद बुज़ुर्गाने दीन ऐसा किया करते थे ।"

(الفتاوٰی تنقیح الحامدیة ، وَضْعُ السُّتُورِ.....الخ ، ج۲، ص۳۵۷)

बैतुल्लाह शरीफ़ से बढ़ कर ता'ज़ीम

जब बैतुल्लाह शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا की इस क़दर ता'ज़ीम है जो एक बे जान पथ्थर है तो औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की कितनी ता'ज़ीम होगी जो बिला शुबा बैतुल्लाह शरीफ़ से अफ़्ज़ल हैं, क्यूंकि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام तो ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने के मुकल्लफ़ (या'नी पाबन्द) हैं और बैतुल्लाह शरीफ़ मुकल्लफ़ (या'नी शरई अह्काम का पाबन्द) नहीं कि इस की इबादत बिग़ैर मुकल्लफ़ होने के है। और अगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام इन्तिक़ाल कर जाएं तो मय्यित ब ज़ाहिर एक बे जान चीज़ की त़रह़ होती है लेकिन सब का एह्तिराम करना लाज़िम है ।

नीज़ का'बतुल्लाह शरीफ़ زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا पर ग़िलाफ़ चढ़ाना भी जाइज़ है, फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : "का'बतुल्लाह शरीफ़ पर रेशमी ग़िलाफ़ चढ़ाना जाइज़ है, और सालिह़ीन व औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मज़ारात अगर्चे का'बतुल्लाह नहीं और न ही अह्काम में का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रह़ हैं (मसलन मज़ाराते औलिया का त़वाफ़ नहीं किया जाता वग़ैरा) मगर क़ाबिले एह्तिराम ज़रूर हैं, क्यूंकि हमें नमाज़ में का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह करने, इस का त़वाफ़ और अदबो एह्तिराम करने का हुक्म दिया गया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हम इस के पाबन्द हैं वरना वोह महज़ पथ्थरों का मजमूआ़ है ।"

www.dawateislami.net

बि ऐनिही का'बतुल्लाह शरीफ़ को सजदा करने वाला काफ़िर है

जो शख़्स ख़ास का'बतुल्लाह शरीफ़ को सजदा करे वोह बुतों की इबादत करने वाला और काफ़िर है, इसी लिये अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दौराने त़वाफ़ ह़जरे अस्वद को बोसा देने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "मैं जानता हूं कि तू सिर्फ़ एक पथ्थर है जो बि ज़ातिही न तो नफ़्अ़ दे सकता है और न ही नुक़्सान, अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तुझे बोसा देते हुवे न देखा होता तो मैं कभी तुझे बोसा न देता।"

(صحیح البخاری ، کتاب الحج ، باب ماذکر فی الحجرالاسود ، الحدیث ۱۵۹۷، ص۱۲۶)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं इस का सबब येह था कि ज़मानए जाहिलिय्यत में बैतुल्लाह शरीफ़ زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के इर्द गिर्द बुत रखे हुवे थे और कुफ़्फ़ार उन को सजदा किया करते थे पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़दशा हुवा कि मुझे ह़जरे अस्वद को बोसा देते हुवे कोई इसे ज़मानए जाहिलिय्यत की मुशाबहत ही न समझ बैठे, इसी लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बोसा देने के बा'द इरशाद फ़रमाया।

मज़ाराते, का'बतुल्लाह नहीं

(ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :) मैं ने अ़वामो ख़वास में किसी से नहीं सुना जिस का येह अ़क़ीदा हो कि "सालिह़ीन की क़ब्रें का'बतुल्लाह हैं, उन का त़वाफ़ करना या उन की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है।" ह़त्ता कि हमें इस बात से किसी त़रह़ का ख़ौफ़ हो और अ़वामुन्नास सब अच्छी त़रह़ जानते हैं कि "क़िब्ला बस का'बा शरीफ़ ही है और वोह मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا में है इसी वज्ह से येह लोग

www.dawateislami.net

मज़ारात की बहुत ज़ियादा ता'ज़ीम और उन का एह़तिराम करते हैं क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया उस के पसन्दीदा बन्दों और सूफ़ियाए किराम के मज़ारात हैं।" अ़वामुन्नास के बारे में हमें येही इ़ल्म है, और मोमिन, अहले ईमान के बारे में अच्छा ही गुमान रखता है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने "जामेउ़स्सग़ीर" में ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई है। चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ** या'नी हुस्ने ज़न अच्छी इ़बादत है।

(الجامع الصغير للسيوطی، الحديث ٣٧٢٢، ص٢٢٦)

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوْا وَ لَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ (پ٢٦، الحجرات:١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो बहुत गुमानों से बचो बेशक कोई गुमान गुनाह हो जाता है और ऐ़ब न ढूंडो और एक दूसरे की ग़ीबत न करो।*

आ़म मोमिनीन के ह़क़ में वाजिब है कि उन के अफ़्आ़ल को अच्छाई पर मह़मूल किया जाए जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के साथ मुआ़मला फ़रमाते थे ह़ालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उन के बारे में बता दिया था कि उन में से बा'ज़ मुनाफ़िक़ीन भी हैं जिन के बात़िन में कुफ़्र व इन्कार और ज़ाहिर में ईमान है, इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब के साथ मोमिनों वाला मुआ़मला फ़रमाते, क्यूंकि हुक्म ज़ाहिर पर होता है, और दिलों के ह़ालात ब ज़ाते ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे लोगों से उस वक़्त तक जिहाद करने का हुक्म दिया गया है जब तक वोह इस बात की गवाही न दें कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं, पस जब वोह येह गवाही दे देंगे तो मुझ से अपने ख़ून और माल मह़फ़ूज़ कर लेंगे, मगर वोह जिन का तअ़ल्लुक़ दमा और अम्वाल से है (या'नी क़िसास और ज़कात वग़ैरा) और उन का ह़िसाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे है।"

(سنن النسائی، کتاب الجهاد ، باب وجوب الجهاد ، الحدیث ۳۰۹۵ تا ۹۷، ص ۲۲۸٦)

हर नया काम नाजाइज़ नहीं

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि जो नया काम देखे फ़ौरन उस का इन्कार इस लिये कर दे कि येह काम सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में तो नहीं था, जब तक कि वोह इस के अन्दर कोई बुराई न देख ले या येह बात न देख ले कि इस को करने वाला ग़ैर शरई त़रीक़े पर कर रहा है। क्या आप देखते नहीं कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने कोई अच्छा त़रीक़ा ईजाद किया तो उसे इस का सवाब मिलेगा और जो क़ियामत तक इस पर अ़मल करते रहेंगे उन का सवाब भी मिलेगा।"

(الجوهرة النيرة، کتاب الطهارة ، قوله سنن الطهارة ، ص ٥ ـ مسند امام احمد بن حنبل، حدیث جریر بن عبدالله، الحدیث ۱۹۱۷۷، ج۷، ص ٥٦ ـ سنن ابن ماجه ، کتاب السنة ، باب من سن سنة......الخ ، الحدیث ۲۰۳، ص ۲٤۸۹)

लिहाज़ा हर वोह नया काम जो इस उम्मत में ईजाद हुवा और वोह मक़्सूदे शरअ़ के ख़िलाफ़ भी नहीं, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में न होने के बा वुजूद उस को सुन्नत कहेंगे,

www.dawateislami.net

पस वोह बिदअ़ते ह़सना जो मक़्सूदे शरअ़ के मुवाफ़िक़ हो उस को भी सुन्नत का नाम दिया जाता है। क्यूंकि उस को सुन्नत कहना शारेअ़ عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान पर जारी हुवा है।

मदीनए मुनव्वरा में बत़ौरे ता'ज़ीम पैदल चलना

और येह बात भी इस बात की त़रह़ है जिसे फ़ुक़हाए किराम ने ज़ियारतुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बह़स में ज़िक्र फ़रमाया कि "बा'ज़ लोगों की आ़दत है कि अदबन मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا के क़रीब उतर जाते हैं और पैदल चल कर उस में दाख़िल होते हैं येह फ़े'ल बहुत अच्छा है क्यूंकि हर वोह काम जो अदबो एह़तिराम में दाख़िल हो वोह अच्छा ही होता है जैसा कि मेरे (या'नी सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के) वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد ने अपने "ह़ाशिया शर्हुद्दुरर, किताबुल ह़ज" में बयान फ़रमाया।

मज़ाराते औलिया पर चराग़ां करने का हुक्म[1]

औलिया व सालिह़ीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात के पास लाल टेन और मोम बत्तियां वग़ैरा रौशन करने को इसी पर क़ियास किया जाएगा, क्यूंकि येह भी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की

1.....मुजद्दिदे आ'ज़म, फ़क़ीहे बे बदल, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अलबत्ता ! रौशनी का बे फ़ाइदा और फ़ुज़ूल इस्ति'माल जैसा कि बा'ज़ लोग ख़त्मे क़ुरआन वाली रात या बुज़ुर्गों के उ़र्सों के मवाक़ेअ़ पर करते हैं सेकड़ों चराग़ अ़जीबो ग़रीब वज़अ़ व तरतीब के साथ ऊपर नीचे और बाहम बराबर त़रीक़ों से रखते हैं महल्ले नज़र है और इसराफ़ के ज़ुमरे में आता है चुनान्चे फ़ुक़हाए किराम ने क़ुतुबे फ़िक़्ह मसलन ग़मज़ुल उ़यून वग़ैरा में इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) की बिना पर ऐसा करने से मन्अ़ फ़रमाया है। इस में कोई शक नहीं कि जहां इसराफ़ सादिक़ आएगा वहां परहेज़ ज़रूरी है। अल्लाह तआ़ला पाक, बरतर और ख़ूब जानने वाला है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23 स. 259)

www.dawateislami.net

ता'ज़ीमो तौक़ीर में से है, और इस का अच्छा ही मक़्सद है ख़ास तौ़र पर अगर फ़ुक़रा वली की ख़िदमत करते हों तो उन्हें रात के वक़्त क़ुरआने पाक, तस्बीह़, तहज्जुद वग़ैरा इबादात के लिये चराग़ रौशन करने की ज़रूरत होती है।

क्या मज़ाराते के पास नमाज़ अदा कर सकते हैं

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने क़ब्रों के पास नमाज़ पढ़ने को मकरूह फ़रमाया है लेकिन येह इस सूरत में है जब कि क़ब्रों से दूर नमाज़ के लिये तय्यार शुदा जगह के इलावा किसी और जगह पढ़ी जाए। मेरे (या'नी सय्यिदी अ़ब्दुल ग़नी नाबुलुसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के) वालिदे मोह़तरम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم "**ह़ाशिया शर्हुदुरर**" में फ़रमाते हैं : "क़ब्रिस्तान में नमाज़ पढ़ना मकरूह है क्यूंकि इस में यहूदियों के साथ मुशाबहत है, और अगर ऐसी जगह नमाज़ के लिये बनाई गई हो जिस में कोई क़ब्र न हो, न ही नजासत हो तो कोई ह़रज नहीं।" जैसा कि "**फ़तावा ख़ानिया**" और "**ह़ावी**" में है : "अगर क़ब्रें नमाज़ी के पीछे हों तो नमाज़ मकरूह नहीं, अगर (क़ब्रें सामने हों और) इतने फ़ासिले पर हों कि अगर येह शख़्स नमाज़ में हो और कोई सामने से गुज़रे तो उस का गुज़रना मकरूह न हो तो यहां भी नमाज़ मकरूह नहीं।"

(الفتاوى التاتارخانية، كتاب الصلاة، ما يكره للمصلى.....الخ، ج١، ص٥٧٠)

मज़ाराते औलिया को छूने[1] का हुक्म

क़ब्रों पर हाथ रखने और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की पाकीज़ा अरवाह़ वाली जगहों से बरकत ह़ासिल करने में भी कोई ह़रज

1.....मुजद्दिदे आ'ज़म, फ़क़ीहे बे बदल, इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा यूं बयान फ़रमाते हैं : "मज़ाराते शरीफ़ा पर ह़ाज़िर होने में पाईंती की त़रफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मवाजहा में खड़ा हो और मुतवस्सित आवाज़ बा अदब सलाम अ़र्ज़ करे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِىْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ फिर दुरूदे ग़ौसिय्या तीन बार,..... (बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर)

www.dawateislami.net

नहीं। "जामेउ़ल फ़तावा" में है : क़ब्रों पर हाथ रखना न तो सुन्नत है और न ही मुस्तह़ब, मगर इस में कोई ह़रज भी नहीं।"

(الـقنية ، كتاب السير، باب فيما يتعلق بالمقابر.....الخ ، ص٢٢٧)

क्यूंकि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है पस अगर इस का मक़्सद अच्छा है तो येह फ़े'ल भी अच्छा है। बहर ह़ाल दिलों के राज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है।

मज़ाराते औलिया पर चराग़ जलाने की नज़्र मानना

कुबूरे औलिया पर बत़ौरे ता'ज़ीम व महब्बत ज़ैतून का तेल और मोम बत्तियां वग़ैरा रौशन करने की नज़्र मानना जाइज़ है। क्या आप को मा'लूम नहीं कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام बैतुल मुक़द्दस के चराग़ में जलाए जाने वाले ज़िम्मी के वक़्फ़ किये हुवे ज़ैतून के तेल के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि "येह भी जाइज़ है क्यूंकि हमारे और उन के नज़दीक येह इबादत है।" और इमाम ख़स्साफ़ की "किताबुल औक़ाफ़" में वक़्फ़े ज़िम्मी की बह़स में है : "अगर ज़िम्मी कहे कि मेरी ज़मीन वक़्फ़ है जिस की पैदावार बैतुल मुक़द्दस के चराग़ के तेल के लिये ख़र्च होगी। येह जाइज़ है क्यूंकि येह बिल इत्तिफ़ाक़ हमारे और उन के नज़दीक इबादत है।"

(बक़िय्या ह़ाशिया).....सूरए फ़ातिह़ा एक बार, आयतुल कुर्सी एक बार, सूरए इख़्लास सात बार, फिर दुरूदे ग़ौसिय्या सात बार और वक़्त फ़ुरसत दे तो **सूरए यासीन** और सूरए मुल्क भी पढ़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अ़मल के क़ाबिल है और इसे मेरी त़रफ़ से इस बन्दए मक़्बूल को नज़्र पहुंचा फिर अपना जो मत़लब जाइज़ शरई हो उस के लिये दुआ करे और साहिबे मज़ार की रूह़ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर उसी त़रह़ सलाम कर के वापस आए। मज़ार को न हाथ लगाए न बोसा दे और त़वाफ़ बिल इत्तिफ़ाक़ नाजाइज़ है और सजदा ह़राम।"

(फ़तावा रज़विय्या, (मुख़र्रजा) जि. 9 स. 522)

www.dawateislami.net

बैतुल मुक़द्दस बा अ़ज़मत मस्जिद है उस में चराग़ जलाना इस की ता'ज़ीम वाले कामों में से है, इसी त़रह़ नेक बन्दों और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात का मुआ़मला है (या'नी वहां चराग़ जलाना उन की ता'ज़ीम है और शरअ़न जाइज़ हैं)।"

दिरहमो दीनार की नज़्र मानना जाइज़ है

इसी त़रह़ मज़ाराते औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام पर दिरहमो दीनार नज़्र करना कि उन के मुजावर फ़ुक़रा पर सर्फ़ किये जाएं, येह भी फ़ी नफ़्सिही जाइज़ है क्यूंकि इस मुआ़मले में नज़्र, तोह़फ़ा देने की त़रह़ है जैसा कि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़ुक़रा को हिबा (या'नी बिला इ़वज़ किसी चीज़ का मालिक) करने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "फ़ुक़रा के लिये येह सदक़ा है, और देने वाला इसे वापस नहीं ले सकता।" और अग़निया को सदक़ा देने के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "अग़निया के लिये येह हिबा है और देने वाला वापस ले सकता है।" **क्यूंकि ए'तिबार मक़ासिदे शरअ़ का होता है न कि अल्फ़ाज़ का।** नज़्र महज़ ज़ाते बारी तआ़ला के लिये मख़्सूस है, अगर ग़ैरुल्लाह के लिये की जाए मसलन कोई शख़्स कहे : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे मरीज़ को शिफ़ा दे दे तो मैं तुझे दस दिरहम दूंगा।" फिर कहे : "मैं ने फ़ुलां के लिये इतने दराहिम की नज़्र मानी।" तो येह उस नज़्र मानने वाले की त़रफ़ से उस के साथ वा'दा होगा, अब अगर वोह शख़्स मालदार है तो येह हिबा है और अगर फ़क़ीर है तो सदक़ा है। और कई लोग होते हैं जो ज़िम्मी[1] काफ़िरों को कह देते हैं : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे

---

1 .....ज़िम्मी उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जानो माल की हिफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने जिज़्ये के बदले ज़िम्मा लिया हो। (فتاوی فیض الرسول، ج۱، ص۵۰۱) और दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 931 पर है "हिन्दुस्तान अगर्चे दारुल इस्लाम है मगर यहां के कुफ़्फ़ार ज़िम्मी नहीं, उन्हें सदक़ाते नफ़्ल मसलन हदिय्या वग़ैरा देना नाजाइज़ है।"

www.dawateislami.net

मरीज़ को शिफ़ा दे तो मैं तुझे सौ दिरहम दूंगा।" तो ऐसा कहना गुनाह नहीं क्यूंकि येह तो सदक़ा है। और फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने अपनी कुतुब में इस बात की तसरीह़ की है कि ज़िम्मी फ़ुक़रा पर (नफ़्ली) सदक़ा करना जाइज़ है, अलबत्ता ! उन को ज़कात देना जाइज़ नहीं। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स वली के इन्तिक़ाल के बा'द उसे यूं कहे : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे मरीज़ को शिफ़ा दे तो मैं आप की ख़िदमत में सौ दिरहम पेश करूंगा तो कोई अ़क़्लमन्द इसे ह़राम नहीं कह सकता और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام तो दूसरों के मुक़ाबले में इस बात के ज़ियादा ह़क़दार हैं, अगर्चे वोह इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हों, क्यूंकि नज़्र मानने वाला जानता है कि उस के पैसे उस वली के ख़ुद्दाम और फ़ुक़रा मुजावरों पर ख़र्च किये जाएंगे, लिहाज़ा इस क़ाइल की त़रफ़ से येह चीज़ लेने वाले के ए'तिबार से वा'दा, तोह़फ़ा और मुबाह़ क़रार दी जाएगी क्यूंकि मोमिन का क़ौल ह़त्तल इमकान सह़ीह़ सूरत पर मह़मूल किया जाएगा। और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ देने वाला है।

किसी चीज़ को ह़राम क़रार देने के लिये दलीले क़त़ई दरकार होती है

बा'ज़ लोग इन तमाम बातों पर बिग़ैर किसी दलीले क़त़ई के ह़राम होने का फ़तवा लगा देते हैं, इस का सबब येह है कि उन के दिलों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ और शर्मो ह़या नहीं, क्यूंकि किसी काम से रोकने में ह़राम की वोही हैसिय्यत है जो किसी काम के करने में फ़र्ज़ की है और इन दोनों को साबित करने के लिये दलीले क़त़ई चाहिये, या तो किताबुल्लाह में से कोई आयत हो, या ख़बरे मुतवातिर हो, या मो'तबर इजमाअ़ हो, या वोह किसी मुज्तहिद का क़ियास हो, किसी मुक़ल्लिद का क़ियास न हो क्यूंकि ऐसे मुक़ल्लिदीन के क़ियास का कोई ए'तिबार नहीं जिन में कुतुबे उसूले फ़िक़ह में मज़कूर शराइते इजतिहाद न पाई जाती हों।

www.dawateislami.net

ता'ज़ीमे मज़ारात से रोकने वालों की ख़बीस तौजीह और इस का रद

(हज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) बा'ज़ फ़रेबी लोग कहते हैं : "हमें तो सिर्फ़ इस बात का डर है कि अ़वामुन्नास जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों से अ़क़ीदत रखेंगे, उन की क़ब्रों की ता'ज़ीम करेंगे, उन से बरकत और मदद चाहेंगे, तो कहीं वोह येह अ़क़ीदा न बना लें कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रह़ येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी मुअस्सिर बिज़्ज़ात हैं (या'नी अ़त़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर ज़ाती त़ौर पर असर करते हैं) और जब उन का येह अ़क़ीदा होगा तो काफ़िरो मुशरिक हो जाएंगे, इस लिये हम उन्हें ता'ज़ीमो तौक़ीर से रोकते हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों के मज़ारात और उन के ऊपर बनी हुई इमारात गिरा देते हैं, उन पर चढ़ाई गई चादरों को उतार कर फेंकते हैं, और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के साथ येह बे अदबी हम दिल से नहीं करते बल्कि सिर्फ़ ज़ाहिरी त़ौर पर करते हैं ताकि जाहिल अ़वाम को पता चल जाए कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रह़ येह औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी अगर मुअस्सिर बिज़्ज़ात होते तो अपने साथ होने वाली इस बे अदबी को ज़रूर रोकते जो हम उन के साथ कर रहे हैं।"

मुन्किरीने ता'ज़ीमे औलिया का हुक्म

मज़ीद फ़रमाते हैं : "ख़बरदार ! होशयार ! फ़रेबी और धोकेबाज़ लोगों की मज़्कूरा तमाम बकवासात सरीह़ कुफ़्र हैं और येह फ़िरऔ़न के उस क़ौल से माख़ूज़ हैं जिस को हमारे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक में ह़िकायत करते हुवे बयान फ़रमाया :

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿۲۶﴾ (پ ۲۴، المؤمن: ۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और फ़िरऔ़न बोला मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल करूं और वोह अपने रब को पुकारे, मैं डरता हूं कहीं वोह तुम्हारा दीन बदल दे या ज़मीन में फ़साद चमकाए।*

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ उन धोके बाज़ों का ह़ाल है जिन्हें अभी तक कामिल यक़ीन नहीं हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मह़ब्बत फ़रमाता है, और उन की ज़िन्दगी में हर वोह चीज़ जिस का येह इरादा करते हैं उन के लिये ज़ाहिर फ़रमा देता है जब कि वोह ख़िलाफ़े शरअ़ न हो और उन की रूहें जिस चीज़ का इरादा करती हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से वोह तमाम ग़ैर मा'मूली चीज़ें उन के लिये पैदा हो जाती हैं। गोया उन मुन्किरीन ने अभी तक नहीं जाना कि ईमान ह़क़ है और येही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक नजात दिलाने वाला है, क्यूंकि उन लोगों के दिल बुरे गुमानों, शुकूको शुबहात, औहाम और कजी या'नी टेढ़ेपन से भरे हुवे हैं, येह अन्धे और बहरे हो चुके हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के दिलों पर मोहर कर दी है कि वोह ह़क़ और बात़िल में फ़र्क़ ही नहीं कर सकते, और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुमराह करे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं।

और अगर बिलफ़र्ज़ इन लोगों को अ़वामुन्नास के कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला होने का वाक़ेई ख़ौफ़ होता तो येह ज़रूर मुसलमानों के लिये अ़क़ाइद व तौह़ीद के अह़काम सिखाते और बिग़ैर किसी झगड़े के उन को बराहीन और दलाइले क़त़इ़य्या की ता'लीम देते और उन को अ़क़ाइद समझने और फ़ज़ाइल में ग़ौरो फ़िक्र करने पर उभारते, और इस मुआ़मले में उन पर बहुत ज़ियादा शिद्दत करते, क्यूंकि आ़म लोग जब अपनी ज़ात में ग़ौरो फ़िक्र कर के जान लेंगे कि फ़ाइले ह़क़ीक़ी हर ह़ाल में एक ही है और कोई शै मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी नहीं तो उन के दिल इस अ़क़ीदे से फिर जाएंगे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई और भी मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी है, और वोह जान लेंगे कि हर मख़्लूक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के

www.dawateislami.net

क़ब्ज़ए क़ुदरत में है। वस्वसे और शुकूक व शुबहात ऐसे अस्बाब हैं जिन के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहे गुमराह फ़रमाता है और जिसे चाहे सीधी राह चलाता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاللّٰهُ مِنْ وَّرَآىِٕهِمْ مُّحِيْطٌ ۚ﴿۲۰﴾
(پ ۳۰، البروج: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और **अल्लाह** उन के पीछे से उन्हें घेरे हुवे है।*

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम हि़स्सी व अ़क़्ली अश्या को मुही़त़ है, मा'ना येह हुवे कि ज़ाते बारी तआ़ला किसी शै के मुशाबेह नहीं और न ही कोई शै ज़ाते बारी तआ़ला के मुशाबेह है।

और अगर बिलफ़र्ज़ उन का मक़्सद वोही हो जो बयान किया गया, फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों और उस के ख़ास बन्दों की इस त़रह़ तज़्लील हरगिज़ जाइज़ नहीं कि आ़म लोगों के सामने उन की क़ब्रों को मुन्हदिम कर दिया जाए और उन के मज़ारात की बे अदबी की जाए, और उन की ता'ज़ीम की ख़ाति़र जो वोह चादरें चढ़ाते थे उन्हें उतार कर फेंक दिया जाए, और येह सारी बे हुरमती सिर्फ़ उस बात (अ़वाम के गुमराह होने के डर) की वज्ह से की जाए जो सरासर वहम है। नीज़ आ़म मुसलमानों के ह़क़ में बद गुमानी कैसे जाइज़ हो सकती है हा़लांकि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कभी इस त़रह़ नहीं किया, क्यूंकि मुसलमानों के बारे में बद गुमानी करना यक़ीनन ह़राम है, जैसा कि हम पीछे बयान कर चुके हैं।

पीरे कामिल की इत्तिबाअ़ शरअ़न पसन्दीदा है

मुरीद का मख़्सूस शैख़ (पीर)[1] से अ़क़ीदत व निस्बत रखना और उस के मख़्सूस नक़्शे क़दम पर चलना एक ख़ास मक़्सद है

1....दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त" जिल्द अव्वल (बक़िय्या अगले सफ़ह़ा पर)

www.dawateislami.net

क्यूंकि ज़ाहिरी आ'माल में जिस त़रह़ मुक़ल्लिद अगर मुज्तहिद न हो तो वोह किसी मख़्सूस मज़हब पर चलने का मोह़ताज होता है मसलन ह़नफ़ी ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक़्लीद करता है और शाफ़ेई ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तक़्लीद करता है वग़ैरा। इसी त़रह़ मा'रिफ़ते इलाही عَزَّوَجَلَّ ह़ासिल करने वाला राहे त़रीक़त में एक मख़्सूस शैख़ (या'नी पीर) का मोह़ताज होता है, ताकि उस शैख़ से मह़ब्बत और अ़क़ीदत के सबब उसे बरकतें मिलें और मुश्किलात में उस की मदद हो। और जिस त़रह़ शैख़ की ह़याते ज़ाहिरी में उस के ख़ादिमीन, अ़क़ीदत रखने वाले और उस से मदद मांगने वाले को बरकत पहुंचती है इसी त़रह़ जब शैख़ इन्तिक़ाल के बा'द क़ब्र में आराम फ़रमा हो तो भी उस से बरकत पहुंचती है, क्यूंकि मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है। और जब मुरीद को इस बात की मा'रिफ़त ह़ासिल हो गई कि उस का पीर चाहे ज़िन्दा हो या फ़ौत हो चुका हो, दोनों ह़ालतों में वोह क़त़्अन मुअस्सिरे ह़क़ीक़ी नहीं तो उस के लिये शैख़ की ज़िन्दगी व इन्तिक़ाल के बा'द मदद त़लब करने में कोई फ़र्क़ नहीं। तो जब कोई मुरीदे सादिक़ अपने पीर के वसीले से, चाहे वोह ज़िन्दा हो या फ़ौत हो चुका हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सिद्क़ दिल से मदद त़लब करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बिल्कुल ना मुराद नहीं करता। क्यूंकि मुर्शिदे कामिल जब ज़िन्दा हो तो अपने मुरीद को रब عَزَّوَجَلَّ से मिलाने में उस की

(बक़िय्या ह़ाशिया)..... सफ़ह़ा 278 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत़्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "पीरी के लिये चार शर्तें हैं, क़ब्ल अज़ बैअ़त उन का लिह़ाज़ फ़र्ज़ है : **अव्वल :** सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो। **दुवुम :** इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरिय्यात के मसाइल किताबों से निकाल सके। **सिवुम :** फ़ासिक़े मो'लिन न हो। **चहारुम :** उस का सिलसिला नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल (या'नी पहुंचता) हो।" (ब ह़वाला फ़तावा रज़विय्या, जि. 21 स. 492-505-603)
नोट : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये आदाबे मुर्शिदे कामिल मत़्बूआ़ मक्तबतुल मदीना का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

ज़ाती ताक़त का कोई दख़्ल नहीं, क्यूंकि हक़ीक़ी तौर पर मिलाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है और येह पीर तो सिर्फ़ सबब है, जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मत के सब से बड़े मुर्शिदे कामिल या'नी हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाया :

اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ یَهْدِیْ مَنْ یَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿۵۶﴾

(پ۲۰، القصص: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक येह नहीं कि तुम जिसे अपनी तरफ़ से चाहो हिदायत कर दो, हां* **अल्लाह** *हिदायत फ़रमाता है जिसे चाहे, और वोह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को ।*[1]

और एक मक़ाम पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाया : لَیْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَیْءٌ (پ۴، ال عمران: ۱۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** येह बात तुम्हारे हाथ नहीं ।[2]

(या'नी मुअस्सिरे हक़ीक़ी सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है अगर्चे हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बड़े सबब हैं ।)

---

1 .....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयते मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : "यहां महब्बत के मुक़ाबिल मशिय्यत इरशाद हुवा । या'नी वोह हिदायत नहीं पाता जिस से आप महब्बत करें । क्यूंकि आप तो रहमते आ़लम हैं । सब से रहम की बिना पर महब्बत करते । बल्कि हिदायत वोह पाएगा जो आप से सच्ची महब्बत करे जैसे कि हर वोह शख़्स हिदायत नहीं पाता जिस से रब महब्बत करे क्यूंकि वोह रबूबिय्यत की महब्बत हर बन्दे से करता है । बल्कि हिदायत वोह पाएगा जिस की हिदायत रब चाहे । इसी लिये येह न फ़रमाया कि یَهْدِیْ مَنْ یُّحِبُّ इस से मा'लूम हुवा कि मक़्बूल इबादत हमारे मिल्क नहीं बल्कि रब तआ़ला की चीज़ें हैं लिहाज़ा वोह न दुन्या में हैं और न फ़ानी हैं बल्कि वोह माइन्दल्लाह में दाख़िल हैं । (تفسیر نور العرفان، پ۲۰، القصص تحت الآیۃ: ۵۶)

2 .....इस आयते मुबारका की तफ़्सीर करते हुवे मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ऐ महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उहुद के ज़ालिम काफ़िरों के लिये बद दुआ़ करना या एक मुसला के इवज़ तीस मक़्तूल कुफ़्फ़ार का मुसला करना या बीरे मऊना के ग़द्दार काफ़िरों के..... **(बक़िय्या अगले सफ़हा पर)**

www.dawateislami.net

जब मा'मूली अश्या रहनुमा हैं तो औलियाए किराम क्यूं नहीं ?

हमारे पेश्वा हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुहयुद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "वोह तमाम राहबर जिन से मैं ने त़रीक़त की राह में नफ़अ़ ह़ासिल किया, उन में से एक वोह परनाला भी है जो "फ़ास" शहर की दीवार में लगा हुवा था, जिस से छत का पानी नीचे गिरता था, मैं ने उस से भी राहनुमाई ह़ासिल की। (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सारी मख़्लूक़ वसाइल और अस्बाब की हैसिय्यत रखती है, और इन के सबब ह़ासिल होने वाला तमाम नफ़अ़ व नुक़्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से होता है) हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुहयुद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی के राहनुमाओं में से ऐसे भी हैं जिन का साया उन की ज़ात से भी दराज़ था (या'नी साये का लम्बा होना कमाल नहीं क्यूंकि वोह तो साहिबे साया का अ़क्स है, इसी त़रह़ तमाम मख़्लूक़ से नफ़अ़ व नुक़्सान का ह़ासिल होने में मख़्लूक़ का कोई कमाल नहीं क्यूंकि तमाम नफ़अ़ व नुक़्सान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से होता है) और इसी त़रह़ की दीगर कई मिसालें उन्हों ने अपनी किताब "**रूहुल कुदुस**" में बयान फ़रमाई हैं।

तो येह तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जो अपनी क़ब्रों में तशरीफ़ फ़रमा हैं क्या येह सब इस परनाले और साये से भी आ'ला नहीं ? जिन से शैख़े अक्बर رَحمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपनी त़लबे सादिक़ की वज्ह से राहनुमाई लेते थे। तो एक अ़क़्लमन्द शख़्स कैसे किसी फ़ौतशुदा वली से मदद चाहने का इन्कार कर सकता है ह़ालांकि वोह जानता है कि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की रूह़ानियत क़ब्रों में उन के

(बक़िय्या ह़ाशिया)...... लिये फ़ज्र की नमाज़ में क़ुनूते नाज़िला की शक्ल में बद दुआ़ फ़रमाना वग़ैरा इन में से कोई चीज़ भी आप की शाने रह़ीमी के लाइक़ नहीं, इन मुआ़मलात को आप रब तआ़ला पर छोड़ दें, कि रब तआ़ला उन्हें या तो तौबा की तौफ़ीक़ दे जिस से वोह मुसलमान हो कर आप के क़दमों में आ गिरें, और आप के दामने करम से वाबस्ता हो जाएं, या फिर उन्हें अ़ज़ाब दे, कि वोह ज़ालिम तो हैं ही।" (तफ़्सीरे नईमी जि.4 स.169)

www.dawateislami.net

अज्साम के साथ मुत्तसिल हैं, जैसा कि पहले इस का बयान गुज़र चुका । और कोई मुसलमान इन फ़ौतशुदा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मदद चाहने को कैसे बईद जान सकता है, जो यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त से ग़ाफ़िल ज़िन्दा लोगों से अफ़्ज़ल हैं ।

औलियाए किराम से मदद के मुन्किरीन को तम्बीह

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) जो औलिया उल्लाह से मदद त़लब करने को नाजाइज़ कहता है जब ख़ुद उसे कोई ह़ाजत पेश आती है और उसे किसी ज़ालिम, फ़ासिक़ या काफ़िर के पास जाना पड़ जाता है तो वहां उस के सामने बड़ी आ़जिज़ी व इन्किसारी करता है और उस की चापलूसी भी करता है, और उसे अपनी ह़ाजत पूरी करने को कहता है, उस से मदद मांगता है। साथ ही येह भी कहता है कि "फ़ुलां ने मेरी ह़ाजत पूरी कर दी या फ़ुलां ने मुझे नफ़्अ़ दिया ।" बल्कि जब वोह भूका हो तो भूक मिटाने और प्यासा हो तो प्यास बुझाने और बे लिबास हो तो सित्र छुपाने में मदद लेता है, इसी त़रह़ त़बीअ़त के मुत़ाबिक़ कई क़िस्म की मदद त़लब करता है ह़ालांकि वोह जानता है कि खाना, पीना और लिबास वग़ैरा तमाम अश्या बे जान हैं। तो अगर इस मदद त़लब करने की सराह़त करते हुवे यूं कह दे कि, "मैं जो खाना पीना वग़ैरा अश्या से मदद ह़ासिल करता हूं येह सब ह़क़ीक़तन नहीं बल्कि मजाज़न है क्यूंकि मेरा अ़क़ीदा है कि ह़क़ीक़ी त़ौर पर मदद करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है ।" तो इस में कोई ख़त़ा नहीं, कोई गुनाह नहीं, कोई आ़र नहीं ।

और ऐसे ही मदद का मुन्किर ग़ाफ़िल शख़्स ख़ुद कहता है : "फ़ुलां दवा क़ब्ज़ ख़त्म करती और फ़ुलां क़ब्ज़ लाती है, फ़ुलां मा'जून बहुत मुफ़ीद है ।" तो इस त़रह़ कहने में कोई मस्अला नहीं होता, उस वक़्त कोई ए'तिराज़ नहीं होता, कोई गुनाह याद नहीं आता, हां ! अगर कोई मस्अला या ए'तिराज़ या गुनाह है तो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

www.dawateislami.net

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मदद त़लब करने में है जो हर दवा और हर मा'जून से अफ़्ज़ल हैं। ऐसी बातें वोही करता है जिस का नूरे बसीरत ज़ाइल हो चुका हो और जो राहे रास्त देखने से अन्धा हो चुका हो।

बा'ज़ बातें ऐसी हैं जो मुरीद को शैख़ की ज़िन्दगी में उस से राहनुमाई त़लब करने या उस के इन्तिक़ाल के बा'द उस से मदद त़लब करने पर उभारती हैं, जिन को ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वहहाब शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने अपनी किताब "अल उ़हूदुल मुह़म्मदिय्या" में ज़िक्र फ़रमाया है। चुनान्चे,

बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अपने मुरीदीन से फ़रमाया करते : "जब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तुम्हें कोई ह़ाजत दर पेश हो तो इस पर मेरी क़सम उठाया करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम न उठाया करो" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से जब इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल नहीं है, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की दरख़्वास्त क़बूल नहीं फ़रमाएगा, हां ! अगर उन्हें भी उस की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाए तो ज़रूर उन की दुआ क़बूल फ़रमाएगा।"

इसी त़रह़ का वाक़िआ ह़ज़रते सय्यिदी मुह़म्मद ह़नफ़ी शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي का भी है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और आप का क़ाफ़िला मिस्र से रौज़ा[1] की त़रफ़ पानी पर चलता हुवा जा रहा था, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन से फ़रमाया : "**या ह़नफ़ी, या ह़नफ़ी** कहते हुवे मेरे पीछे पीछे चलना, और "या **अल्लाह**" न कहना वरना डूब जाओगे।" उन में से एक शख़्स ने ह़ज़रत की बात न मानी और "या **अल्लाह**" कहा तो वोह डगमगा कर गिरा और दाढ़ी तक पानी में डूब गया। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "बेटे ! अभी तुझे

---

1 .....येह बड़े जज़ीरों के सिलसिले में से एक जज़ीरा है, जज़ीरों का येह सिलसिला क़दीम क़ाहिरा के क़रीब है। (اردو دائرۂ معارفِ اسلامیہ، ج۱۰، ص۳۹۲، ملخصًا)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त हासिल नहीं हुई कि तू उस के नाम के साथ पानी पर चल सके, ठहर ! तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त अ़ता कर दूं फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तमाम पर्दे उठा दिये ।

(العهود المحمدية ، قسم المأمورات ، ص٢٣٦)

औलिया उल्लाह पर ए'तिराज़ बाइ़से हलाकत है

अल ग़रज़ ज़िन्दा पीरे कामिल मुयस्सर हो तो उस का दामन थाम लेना वरना फ़ौतशुदा से वाबस्ता हो जाना बेहतर है और ह़क़ीक़त में सब ने मरना है जैसा कि हम ने पीछे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान ज़िक्र किया : اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ۝ (پ٢٣، الزمر: ٣٠) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है ।" बस इन तमाम बातों को समझने की कोशिश करो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ हिदायत पा जाओगे और ए'तिराज़ मत करना वरना हलाक हो जाओगे । जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों की बे अदबी की जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सख़्त ग़ैरत फ़रमाता है और उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं । बेशक क़ुरआने पाक ज़रूर फ़ैसले की बात है और कोई हंसी की बात नहीं, बेशक काफ़िर अपना सा दाव चलते हैं और मैं अपनी ख़ुफ़्या तदबीर फ़रमाता हूं तो तुम काफ़िरों को ढील दो, उन्हें कुछ थोड़ी मोहलत दो ।

नाम निहाद जा'ली पीरों का कोई ए'तिबार नहीं

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :) येह जो आज कल के नाम निहाद पेशावर भिकारी ढोल, बांसरियां और झन्डे वग़ैरा इख़्तियार करते हैं इसी त़रह़ आज कल के नाम निहाद पीरों ने जो ग़ैर शरई रस्में ईजाद की हुई हैं येह तमाम चीज़ें जहालत, फ़ुज़ूल और बात़िल हैं । मुर्शिदे कामिल को चाहिये कि वोह हरगिज़ ऐसे काम न करे और न ही इन की ताईद करे । क्यूंकि इन में ग़ैरे ख़ुदा के फ़रेब में मुब्तला

www.dawateislami.net

होने और इल्मे नाफ़ेअ़ की त़लब और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीस और सुन्नतों में कोशिश से मुंह फेरने वाला फ़साद पाया जाता है, अगर्चे उ़रफ़ाए कामिलीन से येह अफ़्आ़ल सादिर हों तो हम इस पर इन्कार भी नहीं करते (क्यूंकि औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की लग़्ज़िश पर गिरिफ़्त करना ख़त़ा है)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ (پ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ! क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान, नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं ।*

इजतिमाए ज़िक्रो ना'त और बा आवाज़े बुलन्द ज़िक्र करना जाइज़ व मुस्तह़ब है

अ़क़ाइदे सह़ीह़ा, इ़बादात व मुआ़मलात में से जिन का जानना ज़रूरी है उन के इ़ल्म के बा'द, बिग़ैर मूसीक़ी, अदब व ख़ुशूअ़ के साथ इजतिमाए ज़िक्रो ना'त मुन्अ़क़िद करना भी न सिर्फ़ जाइज़ है बल्कि मुस्तह़ब है और जो तअ़स्सुब व जहालत की वज्ह से इस का इन्कार करे उस के मुंह लगने की ज़रूरत नहीं । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى **"अल जामेउ़स्सग़ीर"** की शर्ह़ में नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि اَكْثِرُوْا ذِكْرَ اللهِ حَتّٰى يَقُوْلُوْا مَجْنُوْنٌ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र इस कसरत से करो कि लोग तुम्हें दीवाना कहने लगें (جامع الصغير، الحديث١٣٩٧، ص٨٦) और इस त़रह़ की दीगर अह़ादीसे मुबारका से येह नतीजा अख़्ज़ करते हैं : "सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام जो मसाजिद में ज़िक्र के ह़ल्क़े मुन्अ़क़िद करते हैं, और ऊंची आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह करते हैं, और बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढ़ते हैं इस में कोई कराहत नहीं ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस को अपने **"फ़तावा ह़दीसिय्या"** में ज़िक्र फ़रमाया ।

www.dawateislami.net

ज़िक्र से मुतअ़ल्लिक़ अहादीसे मुबारका में तत़्बीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : "बा'ज़ अह़ादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करना मुस्तह़ब है जब कि बा'ज़ आहिस्ता ज़िक्र करने पर दलालत करती हैं। इन में तत़्बीक़ (या'नी मुवाज़ना) येह है कि येह मुख़्तलिफ़ ह़ालतों और मुख़्तलिफ़ लोगों के ए'तिबार से है (बा'ज़ ह़ालात में बा'ज़ अफ़राद के लिये बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह बेहतर है और बा'ज़ के लिये आहिस्ता आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह बेहतर है।) जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़करिय्या यह़या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने इन अह़ादीसे मुबारका में तत़्बीक़ फ़रमाई जिन में से बा'ज़ बुलन्द आवाज़ से ज़िक्रुल्लाह के मुस्तह़ब होने पर और बा'ज़ आहिस्ता आवाज़ से मुस्तह़ब होने पर दलालत करती हैं।

(فیض القدیر شرح جامع الصغیر، تحت الحدیث۱۳۹۷، ج۲، ص۱۰۸)

इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में चीख़ने चिल्लाने का हुक्म

(ह़ज़रते मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :)

"अलबत्ता ! इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में चीख़ने चिल्लाने, तड़पने और इज़्हारे ग़म करने" के बारे में हम मुत़्लक़न कुछ नहीं कहते, हां ! हम इस की वज़ाह़त दो सूरतों में करते हैं :

(1)....अगर उस की येह कैफ़िय्यत ह़क़ है कि उस के दिल पर वारिद होने वाले मआ़निये इलाहिय्या ने उस को इस ह़ालत पर मजबूर कर दिया है और वोह ह़ालते वज्द में बे साख़्ता इस त़रह़ कर रहा है तो ऐसे शख़्स का हम इन्कार नहीं करेंगे, लेकिन ऐसा करने वाले से येह ज़रूर कहेंगे कि येह कमाल नहीं, क्यूंकि कमाल तड़पने में नहीं बल्कि सुकून में है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अर्सलान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने "इल्मुत्तौह़ीद"

www.dawateislami.net

के मौज़ूअ़ पर लिखे हुवे अपने रिसाले में बयान किया कि "जब तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त ह़ासिल हो जाएगी तो तुझे सुकून मिल जाएगा और जब तक उसे न पहचानेगा मुज़्तरिब रहेगा।"

(2)....अगर महज़ ख़्वाहिशे नफ़्स ने उसे खड़ा होने, वज्द में आने और जान बूझ कर ऐसी ह़रकात पर उभारा है और उसे ख़ुशी और त़रब में मुब्तला किया है तो येह सरकश शैत़ान है, उसे मन्अ़ करना, दूर करना और ह़ल्क़ए ज़िक्र से निकाल देना ज़रूरी है ताकि ज़िक्र करने वाले दीगर लोगों के ज़ौक़ में ख़लल न आए, उन के दिल मुन्तशिर न हों और उन का ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ और अदब ज़ाइल न हो।

ह़क़ीक़ी व बनावटी वज्द में फ़र्क़ मा'लूम करने का त़रीक़ा

अगर कोई येह कहे कि "येह कैसे पता चलेगा कि फ़ुलां शख़्स बे ख़ुदी के आ़लम में ऐसा कर रहा है या सिर्फ़ बनावटी त़ौर पर ऐसा कर रहा है ? तो हम कहेंगे कि "जो शख़्स शराब पी ले वोह बद मस्त हो जाता है या उस के मुंह से शराब की बू ज़रूर आती है।" या'नी हम ऐसे शख़्स से पूछेंगे कि वोह कौन सी चीज़ थी जिस ने तुझे चीख़ने चिल्लाने पर उभारा ? अगर वोह कहे कि मुझे ज़िक्रुल्लाह के दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से वारिद होने वाले किसी मा'ना ने इस पर उभारा और उस मा'ना की तफ़्सील बयान कर देता है, ताकि हम फल से शाख़ों पर और फूल से बाग़ पर इस्तिद्लाल कर सकें तो हम उस की बात मान लेंगे और उस के बारे में अच्छा गुमान रखेंगे कि वोह सह़ीह़ था और उस की वोह कैफ़िय्यत वाक़ेई दुरुस्त थी।

और अगर हम उस से उस की कैफ़िय्यत के बारे में सुवाल करें मगर वोह इस से ज़ियादा कुछ न कह सके कि "बस मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में गुम था, मैं जो ज़िक्र कर रहा था इस की वज्ह से मुझे किसी चीज़ का पता नहीं था।" तो ऐसा शख़्स फ़ज़्लो कमाल

www.dawateislami.net

से ख़ाली और सरकश शैत़ान है। उसे वहां से निकालना और तादीब करना ज़रूरी है।

और आ़रिफ़ीन मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन इब्ने फ़ारिज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़े अक्बर मुह़युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़फ़ीफ़ुद्दीन तलमिसानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल हादी अस्सौदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى और इन की मिस्ल दीगर सादात सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अश्आ़र पढ़ना दिलों को बारगाहे इलाहिय्या की त़रफ़ माइल करता है, और ह़क़ाइक़ को समझने वाले शख़्स के लिये इन अश्आ़र का सुनना और पढ़ना जाइज़ है और जिसे येह अश्आ़र ग़ाफ़िल कर दें और नफ़्सानी ख़्वाहिशात में डाल दें, उसे इन अश्आ़र का सुनना नाजाइज़ है, क्यूंकि इस सूरत में इन का सुनना बिल्कुल फ़ुज़ूल और बात़िल है। जैसा कि शाइ़र कहता है :

لَقَدْ أَسْمَعْتَ لَوْ نَادَيْتَ حَيًّا وَ لٰكِنْ لَا حَيَاةَ لِمَنْ تُنَادِى

तर्जमा : अगर तू ने ज़िन्दा को पुकारा है तो तू ने उसे ज़रूर सुनाया है और लेकिन जिसे तू पुकार रहा है वोह तो ज़िन्दा ही नहीं।

और हम पर लाज़िम है कि काइनात के किसी शख़्स के बारे में बद गुमानी न करें अलबत्ता ! ऐसे शख़्स का ए'तिबार नहीं किया जाएगा जिस का कुफ़्र ज़ाहिर हो और वोह अपने फ़िस्क़ के सबब बदनाम हो। जब वोह अपने बारे में ख़ुद कोई बात बताए, या हमें उस की बेहूदा गुफ़्तगू के बारे में मा'लूम हो जाए, और हम पर आश्कार हो जाए कि उसे मा'रिफ़त ह़ासिल नहीं और वोह अपने रब पर यक़ीन नहीं रखता वरना हमारे नज़्दीक तमाम अच्छाई पर मह़मूल हैं।

इस क़दर बयान हम पर वाजिब था। और हर मुसलमान पर वाजिब है कि अपने आप से ख़ियानत न करे और न ही अपने आप को

www.dawateislami.net

मुग़ालते में डाले, अगर अपने नफ़्स में मा'रिफ़त की कुव्वत पाता है और महाफ़िले ज़िक्र वग़ैरा में हाज़िरी देने से उसे फ़ाइदा होता है तो ज़रूर हाज़िर हो वरना उस के लिये उ़लूमे नाफ़ेआ़ को त़लब करने में मश्गूल हो जाना ज़ियादा बेहतर है। जैसे शाइर ने कहा है :

إِذَا لَمْ تَسْتَطِعْ شَيْئاً فَدَعْهُ وَجَاوِزْهُ إِلٰى مَا تَسْتَطِيعُ

तर्जमा : जिस काम को तू नहीं कर सकता उसे छोड़ दे, और ऐसा काम कर जो तू कर सकता है।

और राहे त़रीक़त में अपने आप को मुकम्मल त़ौर पर मुनाफ़क़त से बचाए यक़ीनन जांचने वाला ही साहिबे बसीरत है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर है।

और सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی जैसी ह़ालत बनाना जैसे मुराक़आ़,[1] ऊनी चादरें और टोपियां पहनना ऐसा काम है जिस के ज़रीए अपने साबिक़ा बुज़ुर्गों से बरकत ह़ासिल की जाती है, लिहाज़ा न तो इस काम से मन्अ़ किया जाएगा और न ही इस को करने का हुक्म दिया जाएगा।

इस (या'नी मुसन्निफ़ के) ज़माने में अक्सर लिबास इसी त़रह़ के हैं जैसा कि फ़ुक़हाए किराम और मुह़द्दिसीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के इमामे और वोह इमामे जो लश्करी फ़ौजी पहनते हैं और वोह लिबास जो सब अ़वामो ख़वास पहनते हैं येह तमाम मुबाह़ या'नी जाइज़ हैं, अगर्चे इन में से बहुत ही कम इमामे सुन्नत के मुत़ाबिक़ होते हैं, मगर फिर भी हम इस को बिदअ़त नहीं कहेंगे, क्यूंकि बिदअ़त से मुराद दीन में ऐसा नया काम है जो शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम व ताबेई़ने उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के त़रीक़े के ख़िलाफ़ हो, और

---

1 .....मुराक़आ़ सूफ़ियाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का एक मख़्सूस लिबास है जिस में पैवन्द लगे होते हैं उसे गुदड़ी भी कहते हैं। (इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

मज़कूरा अन्दाज़ व लिबास और इमामे दीन में बिदअ़त नहीं बल्कि आ़दत में बिदअ़त हैं और ख़िलाफ़े सुन्नत भी नहीं । क्यूंकि फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की ता'रीफ़ के मुताबिक़ सुन्नत हर वोह फ़े'ल है जो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बतौ़रे इ़बादत किया हो न कि बतौ़रे आ़दत । और हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इमामा शरीफ़ और दीगर मख़्सूस लिबास बतौ़रे इ़बादत जे़बे तन न फ़रमाते थे ।[1] और कपड़े पहनने से मक़्सूद जिस्म ढांपना और गर्मी सर्दी की तक्लीफ़ से बचना है, इसी लिये नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ऊन और रूई वग़ैरा के आ़म और बेहतरीन कपड़े पहनना साबित है लिहाज़ा लिबास की मुख़ालफ़त सुन्नत की मुख़ालफ़त नहीं अगर्चे हर चीज़ में इत्तिबाए नबवी अफ़्ज़ल और मुस्तह़ब है ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَابِ وَاِلَيْهِ الْمَرْجِعُ وَالْمَآب، وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحَابَتِهٖ اَجْمَعِيْن، آمين

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा बेहतर जानता है और सब ने उसी की त़रफ़ लौटना है, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आल व अस्ह़ाब رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर दुरूद नाज़िल फ़रमाए । (آمين)

تَمَّتْ بِالْخَيْر

---

1 .....ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "जो काम हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आ़दते करीमा के त़ौर पर किये वोह सुन्नते ज़वाइद हैं जैसे बालों में कंघी करना, कद्दू रग़बत से खाना, और जो काम इ़बादतन किये वोह सुन्नते हुदा हैं । सुन्नते हुदा की दो क़िस्में हैं : मुअक्कदा और ग़ैर मुअक्कदा । जो काम हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने हमेशा किये वोह मुअक्कदा हैं और अगर उन का हुक्म भी दिया वोह वाजिब, और जो काम कभी कभी किये वोह ग़ैर मुअक्कदा हैं । लिहाज़ा जमाअ़त की नमाज़ और मस्जिद में ह़ाज़िरी, ह़क़ येह है कि दोनों वाजिब हैं ।"

(مرآة المناجيح ، باب الجماعة وفضلها، الفصل الثالث ،ج٢، ص١٧٥)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلامِ باری تعالٰی	ضیاء القرآن
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن
التفسیرالکبیر	امام فخر الدین ابوعبداللّٰہ محمدبن عمر رازی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۰ ھ
تفسیر روح البیان	امام اسماعیل حقی البر وسوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیر ابن کثیر	الامام الحافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ۱۴۱۹ھ
تفسیر مظہری (مترجم)	علامہ قاضی محمد ثناء اللّٰہ پانی پتی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۲۵ھ	ضیاء القرآن ۱۳۲۳ھ
تفسیرخزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن
تفسیرنور العرفان	مولانامفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی
تفسیر نعیمی	مولانامفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل البخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
جامع الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ الترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن أبي داود	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب النسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
المسندللامام احمد بن حنبل	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد الطبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
موسوعۃ لابن ابی الدنیا	الحافظ ابی بکرعبداللّٰہ بن محمدبن عبیدابن ابی دنیارحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
حلیۃ الاولیاء	امام الحافظ ابونعیم الاصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ۱۴۱۸ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ
التمہید لابن عبدالبر	الامام ابن عبد البر رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
المستدرک	الامام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۱۸ ھ
شرح مسلم للنووی	امام یحییٰ بن شرف النووی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۰۱ ھ
فیض القدیرللمناوی	امام محمد عبد الرءُوف المناوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ۱۴۲۲ ھ
جامع کرامات اولیاء	علامہ محمد یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
الطبقات الکبریٰ	امام ابوالمواہب عبدالوہاب الشعرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
شرح الصدورمع بشری الکئیب بلقاء الحبیب	امام جلال الدین السیوطی الشافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	مرکز اہل السنۃ برکات رضا۱۴۲۳ھ
طبقات الشافعیۃ الکبری	علامہ تاج الدین السبکی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۷۷۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو القاسم عبدالکریم ہوازن قشیری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ۱۴۱۸ ھ

www.dawateislami.net

الحدیقۃ الندیۃ	امام عبد الغنی بن اسماعیل نابلسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۴۳ھ	نوریہ رضویہ فیصل آباد ۱۹۷۷ء
تاریخ دمشق	امام ابن عساکر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
البرھان	فقیہ عصر حضرت علامہ مولانا الحاج مفتی امین مدظلہ العالی	مکتب سلطانیہ ۱۴۱۷ھ
شرح العقائد	سعد الدین مسعود بن عمر تفتازانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۱ھ	ضیاء القرآن
ارشاد الساری	امام شہاب الدین احمد القسطلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ
کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
فتح الباری لابن رجب	امام زین الدین ابو الفرج عبد الرحمن ابن شہاب الدین حنبلی المعروف ابن رجب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الشاملۃ
حجۃ اللہ علی العالمین	علامہ محمد یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا
روض الریاحین	ابو السَّعَادَات عبد اللہ بن اسعد یافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
کشف الخفاء	امام اسمٰعیل بن محمد بن الھادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ
المبسوط للسرخسی	شیخ الاسلام ابوبکر محمد بن احمد السرخسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۹۰ھ	کوئٹہ پاکستان
بدائع الصنائع	امام علاء الدین ابی بکر بن مسعود الکاسانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۸۷ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
الفتاوی الھندیہ	ملا نظام الدین متوفّٰی ۱۱۶۱ھ وعلمائے ہند	دار الفکر بیروت ۱۴۱۱ھ
فتح القدیر شرح الھدایہ	علامہ کمال الدین بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۶۱ھ	باب المدینہ، کراچی
رد المحتار	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
الجوھرۃ النیرۃ	علامہ ابوبکر بن علی حداد رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۰۰ھ	کوئٹہ پاکستان
الفتاوی تنقیح الحامدیۃ	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	پشاور پاکستان
تنویر الابصار مع رد المحتار	علامہ شمس الدین محمد بن عبد اللہ رحمۃ اللہ علیہ تمرتاشی متوفّٰی ۱۰۰۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
تبیین الحقائق	امام فخر الدین عثمان بن علی الزیلعی الحنفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۳ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۰ھ
الفتاوی التاتارخانیۃ	علامہ عالم بن العلاء الانصاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۸۶ھ	باب المدینہ کراچی
القنیہ	ابو رجاء مختار بن محمود الزاھدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۵۸ھ	مخطوطہ
اصول الشاشی	امام نظام الدین الشاشی رحمۃ اللہ علیہ	مکتبۃ المدینہ
کتاب السنہ	علّامہ ابو القاسم ھبۃ اللہ ابن الحسن بن منصور رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۱۸ھ	مکتبُ دارِ البصیرۃ مصر
العھود المحمدیۃ	امام ابو المواھب عبد الوھاب الشعرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	المکتبۃ الشاملہ
کوثر الخیرات	شیخ الحدیث حضرت علامہ مولانا محمد اشرف سیالوی مدظلہ العالی	ضیاء القرآن ۲۰۰۲ء
اردو دائرۂ معارف اسلامیہ	اردو دائرۂ معارف اسلامیہ	اردو دائرۂ معارف اسلامیہ
(فتاویٰ رضویہ (مخرَّجہ)	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن
احکام شریعت	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	بک کارنر پرنٹرپبلشرز جہلم
بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۷۶ھ	مکتبۃ المدینہ
نزھۃ القاری	فقیہ اعظم ہند مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۴۲۱ھ	فرید بک سٹال ۱۴۲۱ھ
مرآۃ المناجیح	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن
آداب مرشد کامل	پیشکش: شعبہ اصلاحی کتب مجلس المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ के फ़ज़ाइल
पर मुश्तमिल 200 मुस्तनद अहादीस का मजमूआ

مَكَارِمُ الْاَخْلَاق

तर्जमा बनाम

हुस्ने अख़्लाक़

-: मुअल्लिफ़ :-
हज़रते सय्यिदुना इमाम
अबू क़ासिम सुलैमान बिन अहमद तबरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي
(अल मुतवफ़्फ़ा 360 हि.)

-: पेशकश :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मनअ़ करने के फ़ज़ाइल

व मसाइल पर मुश्तमिल अहम तहरीर

الْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ

तर्जमा बनाम

नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल

–: मुअल्लिफ़ :–

फ़ज़ीलतुश्शैख़ अस्अ़द मुहम्मद सईद साग़िरजी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

–: पेशकश :–

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तराजिमे कुतुब

–: नाशिर :–

मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

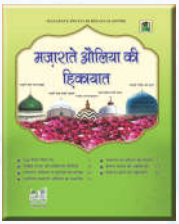

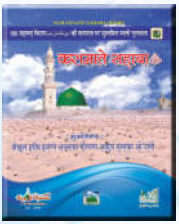

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात मग़रिब की नमाज़ के बा 'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है।

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

مکتبۃ المدینہ

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net